षपान।अमृतहोतविसषाइयेकिमगुरकायहषपान॥७॥कहामानगिरवदरिद्रेग्र

वउतरावलिजांउ।चरचानिरनैग्रंथयहमैंरतुम्हारेनांउ॥८॥रातदिवसचिंतनकि

योविविधिग्रंथकोमैउरषिदीनकोअमअधिकदयादछुनादेकु॥९॥जिनमतमहल

मनोगअतिकलिजुगबादितपंथ।ताकीपोलपिछानियोंचरचानिरनैग्रंथ॥१०॥चर

चानिरनैकोंपढतमचकुलमत्रांतिमिटजांहि।देवग्रहीरुवपरिहरेंसोइलाजकछुं

नांहि॥११॥दिवसदिवाकरउगावेसववहीकोनभजाइ।अधिकअंधेराहवकौंताकोकां

नउपाइ॥१२॥सर्वकथनकोमथनयहजिनमतमरमपिछान।जैनधर्मजगकलपत

रुसेवोसंतसुजान॥१३॥सेवाश्रीजिनधर्मकीकरैसकलसुनश्रेय।पयकीदातागा

यजोंदुहनहारकोंदेय॥१४॥चौपई॥जैनधर्मदुल्लभजगमांहि।विनसेपैसिवदायक

नांहि॥समकितसोंचिदषोउरमाले॥कोवीधूरधांननहिंफलै॥१५॥अथअवमानमंगल

हिमरणं॥चउगइदुरकंणिवारे१॥अनंतोणछिसुईणं॥कालोयोवोवयंचउम्मेदा
नंणवरिसिसिरकियह्वं॥जंजरमरणंवयंकुणईं॥अपतउनं॥समाधिरत्तके॥तहयात्तसरा
नूष्टछत्तदिछित्तसरोनवेत॥३॥नाविद्यामयंत्रपंतक्काविद्यामयंत्रजेत॥७॥दोदा
गारहसैषटदोत्तरैमाघमासअवसान॥सुकलपछतिथिपंचमीग्रंथसमापितवा
न॥१॥अधरविनवैबिनयकरिसुनियोंसज्जनलोग॥थणकेगाहवड्डजियोयहवि
नतीतुमजोग॥२॥गुणग्राहीसिसुथनलगीरुधिरबारपयलेत॥यहवालकसोंसीषि
येजोसिरग्रायिसेत॥३॥धिगदुरजनकीवानकोंगुणतजिओगनलेय॥गजमस्तक
मणिछाडिकैंवाइसअरुनषलेय॥४॥दुरजनओगनहीगहेगुनकोंदेयवहाय॥
जोंमारीकिजालमेंघासफूसरहिजाइ॥५॥दोषभावसवजंगतमेंदुषकारणनहि
कोय॥मैत्रीभावसमानसुषअरनदीसेलोय॥६॥मैत्रीभावपियूषरसवैरभावव

नाश्रुतप्रदीपेन सर्वं विस्फुरितमोमयं ॥ ७ ॥ और अब इस ग्रन्थ की समाप्ति विषें सिद्धान्त लिषि
ये हैं । जितने जैन के ग्रन्थ हैं तिन सर्व का सार इतना ही है । मैं वन्हार करि पंचपरमेष्ठी की
भक्ति निश्चै करि अभेद रत्नत्रयमयी निजात्मा की भावना । एही सरण है । तदुक्तं । गाथा
दंसणणाणचरित्तं । सरणं सेवेह परमसद्धाये । अण्णं किं पि ण सरणं । संसारे संसरंताणं
नयाहि ॥ एगो मे सासदो अप्पा ॥ णाणदंसणलक्खणो । सेसा मे बाहिरा भावा । सव्वे सं
जोगलक्खणा ॥ ९ ॥ इस प्राकृत का अर्थ विचार के विषय कषाय सों विमुष होय शुद्ध
चैतन्य स्वरूप की निरंतर भावना करणी ॥ यही मोक्ष का मार्ग है । तदुक्तं । जिणलिंग
जणमणधरियउ ॥ विसय कसाय इंजं उ । मोक्खहं कारण एत्तउ जिउ ॥ अण्णु ण तंत ण म
तं ॥ १० ॥ जं सक्कइ तं कीरियइ जं च ण सक्कइ तं च सद्दहणं । सद्दहमाणो जीवो पावइ
अजरामरं ठाणं ॥ धन वय रण वय धरणं संजम सरणं च जो वदय करणं ॥ अंते समा

च०स०
१३

चनकेपक्षसोंनहींलिषायथावतअज्ञानकेनिमित्तशास्त्रकीसाषिसोंलिषोहै
जोचरचामननमेंआवैसोमाननी॥नआवैतहांमध्यस्थहोयसुकपेषिमानावकरनें
शास्त्रविरोधीवचनकाफलमुझैहोयगा॥तुमअपनीसज्जनताकीमर्यादनछोड
नी॥आगेंवडोंनेंदोषीअपराधीजीवनकोंभीआसीर्वाददीनाहैतथाहि॥उक्तंच
सुहियउहोउ॥जगसुयणपयासिउजेण॥अमियविसहंवासरतमहिजिमसरग
उकच्छेण॥इसपंचमकालमेंजैनकेशास्त्रवडेउपगारीहै॥जावतकालइनकाअ
भावनहै॥तावतज्ञानकाप्रकाशहोय॥इंद्रियोंकाअवरोधहोय॥जैसेंसूर्य
कउदयउद्योतहोहै॥औरहरघनामजीवअंधहोजायहै॥तिसतेंसांतभावसों॥
निरंतरशास्त्राभ्यासकरणासर्वपायोगहै॥एकअगारबअहरमयीअवोअसा
रमाग्रंथहैतहांयोंकह्योहै॥श्लोक॥श्रुतबोधप्रदीपनअणसनंवर्त्ततधुना॥वि

चित्तभ्रम न करणी॥ ९॥ अथ॥ इसादि जैनमत की चरचा विषे अनेक भ्रांति काल
सों पडी॥ तिन का निर्णै सामान्य बुद्धिसों कहां तांई होय॥ वानगीसी लिषे है॥ जे व
श्रुती बुद्धिवान हैं। और जिन को सरल बुद्धि है। तिन थोडे ही लिषेसों वहुत ज्ञान लेहिं
गा भ्रांति मिट जाइगी॥ तदुक्तं॥ जले तैलं खले गुह्यं पात्रे दानं मनागपि। प्राज्ञे शास्त्रं स्व
यं याति विस्तारं वस्तुशक्तितः॥ ८॥ और जे कोई हठग्राही जीव है तिन का उपाय न
हीं॥ तदुक्तं॥ शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपं। नागेंद्रो निशि
तांकुशेन समदो दंडेन गोगर्दभौ॥ व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मंत्रप्रयोगैर्विषं।
स्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधं॥ ७॥ इहां एकगुणग्राही सज्जनों
री अरदास है॥ प्रथम आरंभ विषै भी करी है। अब फेर करों हौं॥ यह वचनिका समाधा
न नाम ग्रंथ मानवडाई कै आम्नायसों अथवा अपनी प्रसिद्धि बधावने को तथा व

च०म०
१३

भारतरामाइननैं हूं ही परमतके शास्त्र हैं॥ तिनका निषेधकी क्यों है॥ ताकूं कहैं॥ ऐसा
याक्यानी ममासुरका भारहरामाइण॥ हितवऐसा॥ उक्तं च साहणीया॥ पुयक्रला
णं तिणं वेत्तिमसत्थ॥ ७॥ आनीतासुरस्स भारतराइणाद्युपदेशाः॥ आनीत कहि
ये अंजनादि विद्याके निरूपक चोरनके शास्त्र॥ आसुरस्स कहिये वधबंधादिके प्ररूपक
कोतवालनके शास्त्र॥ भारत कहिये कैरव पांडवकूं द्रूपांच पुरुषकी एक स्त्री इत्यादि
विपरीत कथामयी महाभारत॥ रामाइण कहिये सीताहरण राक्षस वानरका संग्रा
मइत्यादि रामरावणसंबंधी रामायण शास्त्र ऐसे और भी त्रिविक्ता कल्पित प्रबंध हैं॥
उक्तं च॥ कहिये परमार्थशून्य है॥ असाधनीय॥ ताहीतें सत्पुरुषनि करि आदर करणे
योग्य नहीं है॥ इदं श्रुताज्ञानं इति वृत्ति॥ ऐसे कुशास्त्रनको सुनिकें मिथ्याज्ञान
उपजै॥ तिसै कुश्रुत नाम ज्ञान आचार्य कहे हैं॥ आइहजा निजेंन पुराण विषें कह

कावर्णनचलै॥ जिनकेनांमोच्चारणतैंपापक्षयहोय॥ उन्नपापक्रियाकाफलजाग
पैडे। इसाद्विअनेकप्रकारकल्याणकारीहै॥ तदुक्तं॥ महापुराणेगुणभद्राचार्येण॥ श्र
मोत्रमुक्तिपदमत्रकवित्वमत्रातीर्थेशिनश्चरितमत्रमहापुराणे॥ यद्वाकवीन्द्रजि
नसेनमुखारविंद॥ निर्यद्वचांसिनहरंतिमनांसिकेषां॥ ७॥ श्रोरजिनसेनादिक
तपुराणविषैजोकाव्यरसहै॥ तिसकोंजेकाव्यरसकेरसज्ञहैतेईजांनें॥ श्रोरका
विषयनहीपरंतुज्ञाननायोग्यहै॥ तदुक्तं॥ योजेनसत्काव्यरसाननिज्ञः॥ सा
यंपशुः पुच्छविषाणहीनः॥ चरत्यसौयन्नतृणंकदाचित्तद्भागधेयंपरमंपशू
नां॥ इहांकोईपूछै॥ इसजागेंतोजैनपुराणकीवडीप्रसंसाकरी॥ श्रोरराजमली
टीकामेंलिषाहै॥ यहनाटकसमेंसारनामग्रंथवैराग्यसारकेछै॥ न्नारजा
मारनकीनांईरागवर्द्धननछैसोक्योंलिष्याहै॥ तिसकाउत्तर॥ जैनमेंकोई

वक्तृश्रीजिनसेनादिमुनिहोतेरागवर्द्धनक्योंकरेंगेवेईरागवर्द्धनकोंगतेतौवैराग्य
वर्द्धनकोंनकरेंगा॥शृंगारादिरसकावर्णनहैसोरागवढावनेंकेअभिप्रायसोंनहीहै
पुण्याधिकारीजीवनकेपुण्यातिशयकानिरूपणतथाउनकेसाहसकीप्रशंसा
निमित्तहै॥औरदेषोमहापुराणविषेंजयसुलोचनाकेआगेशृंगारकाअद्वितीय
वर्णनकीना॥अंतवैराग्यहीवढाया॥तथाहि॥एवंसुखानितनुजामनुभूयतावत्
नैवयत्तृप्तिरतरप्यभिलाषकोटिः॥ इष्टमिष्टविषयोत्थसुखंसुखायतन्नीत
विश्वविषयायाजुगुप्सयतन्धो ॥तिसतेंजावंतजैनकेपुराणहैंतेवैराग्यकोंअ
द्वितीयकारणहैं॥रागकेकारणनहीं॥औरजैनकेशास्त्रचारअनुयोगरूपहैं।
सवहीसंवेगवैराग्यकोंकारणहैं॥तिनमेंप्रथमअवस्थाविषेंप्रथमानुयोगमु
रवहै॥जहांतीर्थंकरादिशलाकापुरुषनकेमहात्म्यकातथातिनकेसाधन

डिकैचउगतिकै नवकों धरें तौ यह नियम गोम्मटसार विषें कायमार्गणाकै अधिका
रमें देषना॥ चर्चा॥ हां कोई पूछै छह महीनें का विरह काल मोक्ष का होते छह मास
ई अठाई द्वीपसौ कोई मुक्त होय ऐसा विरह काल कव पडै है॥ समाधान॥ दशाध्या
यी सूत्र विषें प्रथम सूत्र की भाषा टीका कनककीर्ति नाम पंडितनें करी है तहां यौं
लिषा है॥ एक सौ अठतालीस चौवीसी वीतें तव एक हुंडक नाम काल आवै है तिन
नें ही हुंडक मांहि॥ तव मोक्ष मार्ग का विरह काल पडै॥ छह मास तांई कोई जीव
मुक्त न होय॥ गाथा॥ एकसयं अडयाला॥ चउवीसिगयाइं हुंति हुंडकं॥ तितीयहुं
डगयाइ विरह कालो हो दि मोरकस्स॥ ॥ २७॥ चरचा एक सौ अठतीसमी॥ प्र
दिपुराण प्रमुष जैन पुराण विषें केतेक साधर्मी जन अरु विकरें है राग वर्द्धन
रूप मानें है यह श्रद्धान योग्य है कै अयोग्य है॥ समाधान॥ जैन पुराण के कर्त्ता

त्यनिगोदसंज्ञाजाननी॥तदुक्तंगोम्मटसारे॥गाथा॥अत्थिअणंताजीवाजेहिंण
पत्तोतसाणपरिणामो॥भावकलंकसुपउरा णिगोदवासंणमुंचंति॥अनंतानु
क्तं॥श्लोकः॥त्रसत्वंनउपद्यंतेकालानांत्रयेपियेइत्यानित्यनिकोतास्तेभूरि
पापवत्तीकृता॥गा॥तिसतेंजिनकेंनिगोदभवकाआदिअंतनहींतिनकोंनित्त
निगोदपनासिद्धहुवा॥औरजेजीवचतुर्गतिविषेंभ्रमणकरिकैंनिगोदमेंउप
जेहै॥जिनकेंनिगोदकेभवकाआदिअंतहै॥तिनकोंअनित्यतथाइतरतथा
चतुर्गतिनिगोदसंज्ञाहै॥इसनांतिएदायराशिअनंतानंतजीवमयीअनादि
निधनहैंतहांविशेषइतना॥जवमोक्षकाविरहकालछहमासकावीतेंहै
तवआठसमयविषेंछहसेआठजीवयथोक्तसमयकीसंख्याकरिचतुर्गतिसंव
धीजीवराशितेंनिकसिकेंमुक्तहोयहै॥तितनेंहीजीवनित्यनिगोदकेभवकोंछो

गलेसमयविषैंकछुगणतीकरिवर्गणाघाटिषिरैहैं।यहकर्मकीनिर्जराकाक्र
महै।ताहीतैंजीवकेंसमयप्रबद्धकीअर्द्धगुणहानिमात्रसदाकालचलीचाहै॥उ
सत्तांतिसमयसमयनिर्जराजाननी॥यहीएकदेशकर्मक्षरणरूपसमयसमयमो
क्षहै।ऐसेंएकसमयसमयविषैंजीवकासातत्स्वरूपपरिणमनजाननां॥कोई
पूछै।अंतरालवर्त्तीजीवकैंकौंकरसंभवै॥उत्तर॥कार्मणयोगकीअपेक्षासंभवै
गा॥२६॥चरचाएकसौसैंतालीसमी॥१४७॥जितनेंजीवव्यवहारराशितैंमुक्तहोंहि॥
तितनेंहीनित्यनिगोदसौंनिकसैं।व्यवहारराशिमैंआवैं॥ऐसीकहनावतिहैसो(
कौंकरिहै॥समाधान॥इससंसारमैंनिगोदराशिदोयप्रकारहै।एकतौनित्यनिगो
दहै।दूसराइतरनिगोद।जिहंजीवअनादिसौंकवहीविकलेंद्रियादित्रसपर्यायकौंप्राप्त
हुवेनहीं॥वहुआगैंकवहींप्राप्तहोंनकेनांही॥ऐसेअनंतजीवहैं।तिनकौंनि

मिथ्यात्वसौंलेयसयोगपर्यंतअपनेंगुणस्थानकेअनुसारएकसमयविषेंजीवसातत
त्वरूपपरिणवैहै।अयोगगुणस्थानविषेंआश्रववंधनहीं।तिसतेंतहांनसंवरहै।औ
रसवगुणस्थानोंमैंसंवरहै।प्रथमजीवकाअजीवसौंअनादिसंवंधहै।ज्ञानावरणा
दिकर्मकाआश्रवसमयसमयहै।असीहीप्रतिसमयवंधहै।जोप्रकृतिआश्रव
योगपनहीं।तिसकासंवरहै।औरइससंसारीजीवकेंसमयसमयअनंतवर्गणाम
यीसमयप्रवद्धजोवंधेहै।सोनानागुणहानितथागुणहानिरूपहोयकरिषेंवद्धषि
रेहै।एककर्मकीस्थितिविषेंअसंख्यातीनानागुणहानिहैं।तिनमैंएकएकनाना
गुणहानिकाकालअसंख्यातसमयमात्रहै।तिनविषेसमयप्रवद्धआधाआधा
होयषिरइसहीकानांवरूपगुणहानिहै।इसनानागुणहानिविषेंअसंख्यातीगु
ण[illegible]हानिहैं।तिनकाकालएकसमयहै।इनमैंपहलेपहलेसमयकुंतेंआगेंअ

रासीलाषजातिहै॥यद्यपिसत्रआदिविषैमक्कहीत्रनंतनदहैं।तिन
ताविषैंनीवजुत्तसेदहै॥तथापितिनकेअंतरगतभेदनविषैंचोरासीलाष
चोरासीलाषजोनिजाननी॥३४॥ ॥वस्त्राएकसोपैतीसमो॥प्रश्न॥ ॥सं
।वनकेएकसौसाढिनिंनांणवेलाषकोडुकुलकहेहैं।औरचोरासीलाषयोनि
कही॥तहांयोनितथाकुलविषैंकाभेदहै॥ ॥समाधान॥ ॥योनिनामउत्प
त्तिस्थानकाहै॥कंदयोनिमूलयोनिअंडयोनिगर्भयोनिरसयोनिस्वेदयोनि
इत्यादिजीवनकेउत्पत्तिस्थानहैं॥इनकांयोनिसंज्ञाजाननी॥इनविषैंअने
कजातिकेजीवउपजैं॥तिनभेदनकोंकुलसंज्ञाहै॥तिसकाउत्तर॥वटपीपल
त्यादिएकेंद्रीकेकुल॥कृमिसीपइत्यादिवेंइंद्रीकेकुल॥चैंटीषटमलइत्यादितें
द्रीकेकुल॥भौंरामाषीइत्यादिचौइंद्रीकेकुलतिर्यंचविषें॥गाइभैंसिइत्यादिम

रहै। उपपादजन्मवाले [illegible] देवतानारकीशीतोष्णयोनिहैं। जातें उपपादस्थान
कईशीतहै। केईउष्णहै। ७। सम्मूर्छनजन्मवालेएकेंद्रीतथाउपपादजन्मवा
लेदेवतानारकीहै। तिनकीसंवृत्तयोनिहै। विकलत्रयजीवनकीविवृतयो
निहै। गर्भजजीवनकीसंवृत्तविवृतरूपमिश्रयोनिहै। इसप्रकारनवमूलयो
निहै। इनहीकिअंतरभेदचौरासीलाषहै। तदुक्तं। गाथा॥ णिच्चिदरधाउसत्तय॥
तरुदह वियलिंदियेसुछच्चेव सुरणरयतिरियचउरो॥ चउदसमणुयेसदसह
स्सा॥ अबाकोउपूछै। चौरासीलाषअंतरभेदयोनिसंबंधीकहे तिनकाक्यास्वरू
पहै। तिसकाउत्तर। जिनपुद्गलषंधनिविषेंसंसारीजीवजन्मधरैं तिनकोंयोनि
संज्ञाहै। तियोनिसमानस्पर्शरसगंधवर्णकेभेदनिकरिचौरासीलाषजातिकीहैं।
असयोनिकास्पर्शरसगंधवर्णएकसाहोयसोएकजातिकहावो। इसनांतिचो

योनितीनप्रकारहै॥ कोईसचित्तयोनिहै॥ कोईअचित्तयोनिहै॥ कोईमिश्रयोनिहै॥
साधारणवनस्पतीवालेजीवनकौसचित्तयोनिहै॥ पृथ्वीआदिजीवनकौअचि
त्तयोनिहै॥ औरमिश्रयोनिहै॥ गर्भजजीवनकौमिश्रहीयोनिहै॥ पुरुषका
वीर्यअचित्तहै॥ स्त्रीकारजसचित्तहै॥ दोनोंमिलकैएकपिंडहोहै॥ तवजीवकेउ
पजनेकौयोग्यहोहै॥ यातैंगर्भजकौमिश्रयोनिसंभवै॥ औरजहांकेवलअचि
त्तवीर्यहीतैंउत्पत्तिहै॥ सहांमाताकाउदरसचित्तहै॥ तहांजोमिश्रयोनिसंभ
वै॥ उपपादजन्मवालेजीवनकौअचित्तयोनिहै॥ जातैंदेवनारकीकेउपपादसं
बंधीपुद्गलप्रचयअचित्तहै॥ सम्मूर्छनजन्मवालेजीवनविषैं अग्निकायके
उष्णयोनिहै॥ बाकीपृथिवीआदिकजीवनविषैंकोईशीतयोनिहै॥ कोईउष्णयो
निहै॥ कोईशीतोष्णमिश्रयोनिहै॥ ऐसेंहीगर्भजजीवनकौभीयोनितीनप्रका

ह्मतथामुंदीयोनिकहियो॥पुकटाकारपुद्गलस्कंधहोयतिसेंविवृततथाउ
लीयोनिकहियो॥ओरोनोंलक्षनयुक्तउभयात्मकपुद्गलस्कंधहोयतिसेंमिश्र
योनिकहियो॥आगेपूर्वोक्तसन्मूर्छनादितीनोंजन्मकहांकहांसंभवेंयहलिखेंहें।ज
रायुजअंडजअरपोतजअहनतीनोंकेंगर्भजन्महे।जालीसोंवेष्टितमनुष्यदिष
नादिउपजे॥तिसेंजरायुजकहिये।अंडेसोंपक्षीतथासर्पादिजीवउपजेंतिसें
अंडजकहियो।आवरणरहितसंपूर्णअवयवलीयेंश्वानतथामार्जारादिजीवउ
उपजेतिसेंपोतजकहियो।एतीनोंभेदगर्भकेजाननें।चारप्रकारकेदेवतात
थाधर्मादिनरककेनारकीनकेंउपपादजन्महे।वाकीएकेंद्रीवेंद्रीचौइंद्रीअ
नकपंचेंद्रितथाअलब्धपर्याप्तकेंसम्मूर्छनजन्महे।इनतीनोंजन्मभेदविषें
नव योनिकहांकहांसंभवेंयहलिषियेहे।प्रथमसम्मूर्छजन्मवालेजीवनकी

नापिताकेरजवीर्यकासंयोगहोया।तहांजीवआइउपजैरजवीर्यकेपिंडकोंआहारस्वरूपक
रिग्रहणकरैतिसेंगर्भजन्मकहिये।संपुटशय्यातथाउष्ट्रादिमुखाकारदेवनारकीकेउ
त्पत्तिस्थानहैं।तिनकेसमीपजायजीवकाजन्महोयतिसेंउपपादिकजन्मकहिये।इस
तीनप्रकारकेजन्मकीनवप्रकारकीयोनिहैं।सचित्त१।अचित्त२।मिश्र३।शीत४।उ
ष्ण५।मिश्र६।संवृत७।विवृत८।मिश्र९।इनकाविवरण।चेतनासंयुक्तहोयतिसेंस
चित्तयोनिकहिये।तथाऔरजीवनकेप्रदेशनकरिपरिग्रहीतपुद्गलस्कंधहोंहैंति
नकोंसचित्तकहिये।१।इसलक्षणसोंविपरीतहोयतिसेंअचित्तयोनिकहिये।२।दो
नोंलक्षणसोंमिश्रितहोयतिसेमिश्रयोनिकहिये।३।जिसकाशीतस्पर्शहोयतिसे
शीतयोनिकहिये।४।तिसकाउष्णस्पर्शहोयतिसेउष्णयोनिकहिये।५।शीतोष्णमि
श्रितस्पर्शहोयतिसेमिश्रयोनिकहिये।६।अप्रकटाकारपुद्गलस्कंधहोयतिसेंसं

ष्ठंतिलककीजिये॥औरकिसनिमित्तकीजो॥यहकथन॥श्लोकः॥अर्हतानांललाटेच
सिद्धानांहृदयेतथा॥आचार्याणांचकंठेपाठकानांदक्षिणेभुजे॥साधूनांवा
मभागेचपंचस्थानप्रकीर्तितं॥७॥इहांकोईऔरआचमनदंतधावनतिल
कसूतकइत्यादिगृहस्थकर्मकीविधिविषेंदोषमानेंतिसकासमाधान॥श्लो०
सर्वएवहिजैनानांप्रमाणंलौकिकोविधिः॥यत्रसम्यक्त्वहानिर्नयत्रनव्रतदू
षणं॥१८॥चर्चाएकसौचौवालीसमी॥प्रश्न॥चौरासीलाखयोनिकाक्यास्वरूपहै॥स
माधान॥संसारीजीवोंकाजन्मतीनप्रकारहै॥सन्मूर्छनजन्म१गर्भजन्म२औ
पपादिकजन्म३॥जीवनेंजिसआकाशक्षेत्रकीआयुबांधीहोय॥पूर्वशरीरको
छोडिकेंतहांजायतिष्ठै॥तवहीवसांदिसातेंशरीराकारपरिणमनयोग्यपु
द्गलस्कंधआईशरीराकारहोयपरिणवेंतिसेंसंमूर्छनजन्मकहिये॥जहांमा

वज्र॥ तथै चक्र कहियें तैसें ही धर्म चक्र कों तें छोटा आकार॥ इति चंदनेन अंगुले पर्व आतप त्र ति
लकं स्यात्॥ इसनांति चंदन करि अंगुल पर्व हैं सो छत्र प्रकार तिलक है॥ भावार्थ॥ पूर्वी
दनसों मस्तक [illegible] विषें करियें सो छत्र प्रकार तिलक जाननां॥ आगें
छत्र प्रकार तिलक कै आकार का दृष्टांत कहे हें॥ श्लोकः॥ अर्ध चंद्र समो पांडु शिला संकल्प ते
न वा या पूतात्तीर्थ कृज्जन्म मज्जनां नो निरूपके॥ १॥ आतपत्रं जिनेंद्राणां छत्र त्रय
मिदं स्मृतं॥ भक्ति स्तु मानस्तंभं न स्यात्सीदं सिंहासनं मतं॥ २॥ चक्रं तु धर्म चक्रं स्यात्तिल
कं तु तद्रूपकं॥ एतत्सर्वं च संधार्यं पूर्वं नालेय पोचितं॥ ३॥ आगें इन छुहों तिलक
के अधिकारी कोंन हैं ते कहियें हें॥ श्लोकः॥ अर्ध चंद्रातपत्रे वै क्षत्रियाणा मिति स्मृतं
आतपत्रां छिपी गाश्च ब्राह्मणानां प्रकीर्तितां॥ १॥ आतपत्रं तपोवां छि विटस्यापि
सत्सु इस्य नेच्छ कं परस्य तिलकं भवेत्॥ २॥ आगें कोंन कोंन स्थान वि

सेत्रुर्यत्यागीससन्नम ॥१॥ नागाद्वयं तु पुष्पार्थे को आर्थेत्त द्वयं सदा ॥ अष्टं दानाय येयोयुक्ते
सत्यागीमध्यमो मत ॥२॥ एवं स्वस्वयस्तु पफ नागानू परिवाराय योजयेत ॥ त्री संचयेद
ग्रांग्रां त्रु धर्मे त्यागी लघुश्रुस ॥३॥ पफ तो हीनं दत्ते सति किंनवे यस्तु पफ सो मतं ॥ तद्य तम
किंचित खलु नं गणितं धार्मिकनरैः ॥४॥ पफमानू नागानू सत्का वितरति बुधाय स्तु व
जघमाम हासत्वत्यागी भुवन विदितो सोर विरिवाप ॥५॥ इति चरचाएकसौतेतीसमी ॥ अ
ष्ण जैनमतमें गृहस्थ के तिलक की विधि किस प्रकार है सो समाधान ॥ तिलक कहदृ
कार कहया है सो ईक हैं सो श्लोक ॥ अर्द्धचंद्रातपत्रं किपीम्च कर्तपेक्व ॥ ति
लकं चेतिषा टास्यात च्चंदनेन च लेपनं ॥१॥ अर्थ ॥ अर्धचंद्र कहिये अर्धचंद्राका
रा आतपत्र कहिये छत्रत्रय के आकारा ॥ त्रिंकि कहिये मानस्तंभ के आकारा ॥
पावक कहिये सिंघासन के आकारा ॥ चक्र कहिये धर्मचक्र के आकारा ॥ चक्र कहिये

उद्यतिपूर्वोक्तधवलादिसिद्धांतकेपाठसोंसिद्धांतीकहाये॥मद्देहेतज्ञानन॥७॥१३॥
चरचा॥कैसेवर्त्तीसन्मौ॥चूला॥गृहस्थनेंजोधननीतसोंउपजायाहैतिसकेकैभा
गकरनेंयोग्यहैं॥समन्वपना॥जोगृहस्थअपनाधनदोयभागकुटंबनिमित्तलगावैएक
भागकासंचयकरै॥एकभागधर्मकेनिमित्तषरचै॥तिसकोंउत्तमदाताकहिये॥औ
रजोतीनभागकुटंबकेनिमित्तलगावैदोयभागकासंचयकरै॥छठेभागकात्यागक
रैतिसेंमध्यमदाताकहिये॥औरजोबहुभागपरिवारकेनिमित्तलगावैतीनभाग
कासंचयकरै॥दसमेंअंशकोंसातक्षेत्रमेंषरचै॥तिसेंजघन्यत्यागीकहिये॥इसभांति
विनोकहेतेजोगृहस्थविभागनकरै॥कमीकरै॥सोधर्मातमानरोंनेंकिसीमेंगिनान
हीं॥औरजोकोईपूर्वोक्तभागसोंअधिकदानकरै॥सोमहात्यागीकहिये॥लोकवि
षेंवहसूर्यप्रायहै॥तदुक्तं॥भागद्वयंकुटंबार्थेसंचयार्थंतृतीयकं॥तुरीयोंऽयस्यधर्मे

ष्टप्रकारीपूजाकरीमहोत्सवकीया॥ तिसिदिनसोंश्रुतपंचमीकहीजेनमूजो
वश्रुतपंचमीकायथोक्तकरो॥ तसोंव्रतकरोतश्रुतकेविनयसोंउच्चपदपाइमुक्त
होति॥ कर्णाटदेसमेंदेवालयविषेंतीनोंसिद्धांतविद्यमानहै॥ नित्यपूजाहोय
है॥ पाठकेपठनेंसुननेंकायोग्यतावर्तमानकालमेंनहीं॥ [illegible]॥ तदुक्तंनीतसार
॥ आर्यिकानांगृहस्थानां शिष्याणामल्पमेधसां॥ नवाचनीयंपुरतः सिद्धांता(
चारपुस्तकं॥ एकदिवसनेमचंद्रसिद्धांतीसिद्धांतकापाठकरेथा॥ कर्णाटदे
शकाराजाचामुंडरायआया॥ तिसेदेषिपाठकीसमाप्तिकरी॥ औरकहनेसोंक
ह्या॥ तुमेंसिद्धांतपाठकेश्रवणकीयोग्यतानाहीं॥ तवराजाकेअनुग्रहनिमि
त्तगोम्मटसारग्रंथकीरचनाकीनी॥ यहप्रसंगकर्णाटदेशअतीतकेमुषसोंसु
निकेलिषाहै॥ वसुनंदिवीरनंदिकनकनंदिइंद्रनंदिनेमचंद्रादिसिद्धांती।

चारकेमंत्रसाधनकीया॥यथोक्तविद्यासिद्धहुई॥विद्यावोलीप्रस्तुतमैंआईहां॥
जोसाधुवोलजोकार्यहमसोसिद्धहोइतिसकार्यसोहमैप्रयोजननहो॥गुरुके
आज्ञासोंतुमारसाधनेंकाउद्यमकीनाथा॥औरकारणकोईनहीं॥इसभांतिवि
द्याप्रतिकहिकेदोनोंसाधुगुरुकेसमीपआया॥सववृत्तांतकह्या॥गुरुनेंदोनों
मुनिशास्त्रपाठकरनेंकोंजोग्यजानें॥उत्तमदिनशास्त्रकेव्याख्यानकाआरंभ
कीया॥केतेकदिनमेंपाठकीसमाप्तिहुई॥तवधरसेनभट्टारकनेंअपनौनिकट
मृत्युजानिविचारकीया॥मेरेवियोगसोंइनकोंषेदहोइगा॥तिसतेंदोनोंमुनी
स्वरविदाकीने॥अपनेस्थानआइकेंशास्त्रकीरचनाकरालेषकवुलाइलिषा
एतीनसिद्धांतपाठ॥सत्तरहजारप्रमितधवल॥साठहजारप्रमितजयधवल
वीसहजारप्रमितमहाधवल॥जेष्ठसुदिपंचमीकेदिनचतुर्विधसंघसमेत

नगरी प्रति ब्रह्मचारी हाथ पत्र भेजा॥ तहां जिनयात्रा निमित्त मुनिसंघ आया था
तिनकों यथोचित वंदना प्रणाम लिषकें मोरा लिषा॥ मेरी आयु थोड़ी रही है
तिसकें बुद्धिवंत विनयवंत तरुण क्षेत्र से दोय मुनि मेरे समीप भेजनें॥ जातें श्रु
तकी परंपरा टूटै नहीं॥ इस भांति लिषा पत्र बांचिकें मुनिसंघनें भूतबलि पुष्पदं
धु महातीक्ष्णमति जानि धरसेन मुनिकें निकट भेजा॥ व कृत
विनयभक्ति सें गुरु कों आय वंदना करी॥ गुरुनें यथोचित आगत अभ्यागत
क्रिया करी॥ पीछैं तिनकी बुद्धि परीक्षा कें निमित्त हीनाधिक अक्षर सें मंत्र दोय
विद्या दानी॥ हीन अक्षर वाली विद्या भूतबलि साधनें साधी॥ तिसतें कालनेत्र
की विक्रिया करि विद्या आई॥ दूसरी अधिक अक्षर वाली विद्या पुष्पदंत मु
निनें साधी तिसतें वडे दंतकी विक्रिया करि विद्या आई॥ तब दोनों साधनें छि

पंचमश्रुतकेवलीनइ वाउ जुदे जाननें। तहां गिरनारके शिषरचंद्रगुफाके वा
सीधरसेननामसाधु अग्रायणीयपूर्वगतपंचमवस्तुके चउथे कर्मप्राभृत विषैप्र
वीनउवे। तिसकाम्रोरा॥ चौदहपूर्वमैं दूसरा अग्रायणीयनामपूर्व है। तिसमें
चौदहवस्तु है। वस्तुनाम अधिकारका है। तिनके नाम लिषियें है। पूर्वांतर १।
अपरांत २ ध्रुव ३ अध्रुव ४ अच्यवनलब्धिः ५ असंप्रणिधिः ६ अर्थ ७। भौमाव
याद्य ८ सर्वार्थकल्पनीयं ९ ज्ञानं १० अतीतकाल ११ अनागतकाल १२ सि
द्धिः १३ उपाध्यः १४ ए दूसरे अग्रायणीयपूर्वके चौदह अधिकारके नाम है। अ
धी अधिकारनके नांव च्यवमान उद्धिल जाननें। इहां अच्यवनल
ब्धिनाम पंचमवस्तु विषै कर्मप्राभृतनाम अंतराधिकार है। तिसमें धरसेनना
मसाधु तत्पर है। तिन साधनें विचारी हमारी आयु अल्प रही। तब वसुंधरा नाम

षै हुवे। तिस पीछैं भरतक्षेत्र विषैं श्रुतकेवली नहीं। तिनके अनंतर। विशाखाचा
र्य १ प्रोष्ठिल २ क्षत्रियांक ३ जय ४ नाग ५ सिद्धार्थ ६ धृतिषेण ७ विजय ८।
बुद्धिल ९ गंगदेव १० धर्मसेन ११ ए ग्यारह मुनि दश पूर्वधारी हुवे। इनका काल
वर्ष १८३। तिनके अनंतर। नक्षत्र १ जयपाल २ पांडु ३ ध्रुवसेन ४ कंसाचार्य ५।
ए पांच मुनि ग्यारह अंग के पाठी हुवे। तिनका काल वर्ष २२०। तिनके अनंतर।
सुभद्र १ यशोभद्र २ भद्रबाहु ३ लोहाचार्य ४ ए च्यारि मुनि प्रथम आचारांग के
विनयंधर १ श्रीदत्त २ शिवदत्त ३ अर्हद्दत्त ४ ए च्यारि मुनि अंगपूर्व
इनका काल वर्ष ११८ इहां तांई श्री वर्द्धमान के तीर्थ विषैं
तिस पीछैं भरत विषैं अंगधारी ६८३ [illegible] हूये। तिसके अनंतर।
अंग महा निमित्त के जाननहार भद्रबाहु नाम अंत के निमित्तज्ञानी हुवे

हो॥ और पहला नारायण वर्द्धमानस्वामी होय मुक्त हुवा। पहला प्रतिनारायण मृगा
ध्वज नाम केवली होय मुक्त हुवा। तब आव नारायण नव प्रतिनारायण एकवी
रसंतंवां॥ और आदि अंतके चौवीस होंन हार जीव अंतके रुद्र पर्यंत चौथे कालवि
षै हो अंततांई गिने समंत नहु जो पंचमकाल विषै हुवा॥ ए चौवीस में क्यों कर
फर्यां॥ इस आदि और नो युक्तिसों गाथाकथित अर्थ मिलै नहीं है॥ तिसके महापु
राणोक्त अर्थ की श्रद्धा करी चाहिये॥ २०॥ चरमाण कैसी इक सीम मी॥ प्रश्न।
मोक्ष मुक्त हुवे पीछे केवली तथा श्रुतकेवली की परिपाटी किस प्रकार
है॥ समाधान॥ तीन वर्ष पीछे अंत्री कुल विषै ही ताका उठे हद जानना॥ नंद १ नंद
मित्र २ अपराजित ३ गोवर्द्धन ४ भद्रवाहु ५ ए अंगपूर्वके पाठी पांच श्रुतकेव
ली हुवा इनका काल वर्ष १०० सौ ह्वा तांई वर्द्धमान के तीर्थ विषै एक सौ बासठ व

होनहारहैं।।तहां आदिकेतीर्थंकरकी आयुवर्ष।।देकायहाथ७ अंतकेतीर्थंकर
की आयुकोटिपूर्व।।कायधनुष५००।। ऐसेहांकोईकहैएनामकहांकहेहै।।ति
सकाउत्तर।।महापुराणकेछहत्तरवेंपर्वविषैकहेहै।।तथाहि।।ततस्तीर्थकरास्सप्त
स्तेषांनामानिधीयते।।आदिमश्रेणिकस्तस्मात्सुपार्श्वादिकसंज्ञको।।प्रोष्ठिलाख्य
कटप्रूश्चाहत्रियः श्रेष्ठसंज्ञकः।।सप्तमः शंखनामाचनंदनोथसुनंदवाक।।शश
ांकः सर्वकः प्रेमकश्चातोरणसंज्ञकः।।रेवतोवासुदेवाख्योबलदेवस्ततःपरः
भगलिर्विगलिर्द्वैपायनः कनकसंज्ञकः।।पादांतोनारदश्चारुपादः सत्यकिपु
त्रकः।।इत्यंकेउक्तरकहेहमतोअवताई औरहनामसुनतेआपेहैं।।गाथा।।अवहरीण
वपडिहत्थिविक्किचउक्केयएयवलिनंदा।।सेणियसमंततद्दा।।तिथ्ययराहोंति
णियमेण।।तिसकाउत्तर।।प्रथमतोयहगाथाकोनग्रंथाकीहैयहकीकन

तौजीउहांकौंकरउपजा॥तवसालिसिछकाजीवनारकीवोलाहैमहामछते
रीचष्टांतेतौउरंतदुषकौंकारणरूपषोटीभावनासौंउहांमेराजन्मउवा॥यह
सालसिक्थमच्छकाउपाष्यानषट्पाहुडकीटीकामेंजाननां॥गाथा॥मच्छोविसा
लिसिच्छो॥असुद्धभावोगउमहाणरयं॥इयणाउंअप्पाणंभावहजिणभावणाणि
च्चं॥८८॥चरचाएकसौउनंतीसमी॥१२९॥श्रेणिकआदिभावे
गतीनकेनामकहाहै॥समाधान॥प्रथमराजाश्रेणिक॥१॥सुपार्श्व॥२॥उदंक॥३॥प्रो
ष्ठिला॥४॥कटप्रू॥५॥क्षत्रिय॥६॥श्रेष्ठ॥७॥शंख॥८॥नंदा॥९॥सुनंदा॥१०॥शशांक॥११॥से
र्वक॥१२॥प्रेमक॥१३॥अतोरण॥१४॥रेवत॥१५॥वासुदेव॥१६॥वलदेव॥१७॥भगलि॥१८॥वा
गलि॥१९॥द्वैपायन॥२०॥कनकपाद॥२१॥नारद॥२२॥चारुपाद॥२३॥सत्यकिपुत्र॥२४
एचौवीसजीवआगामीकालविषैंमहापद्मादिअनंतवीर्यपर्यंतती

च०स०
११७

भूरमणसमुद्रविषैंमहामच्छहुवा।राजासोरसेनजीवहूतकालपीछैंमरिकैंतिसम
हामच्छकेकानमेंसालिसिच्छनामामच्छहुवा।सालकेसीथप्रमाणदेहधरी।जातेंह
जानामतंदुलमच्छजाननां॥पूर्वोक्तमहामच्छमुखफाडवायकैंजवसोवे।तवतिस
कीगलगुफाविषैंनदीकेप्रवाहकीनाईंअनेकजलचरजीवआइकेंचलेजांहि
तदांतंदुलमच्छदेषिकैंऐसाचिंतवनकरनेलग्या।यहमहामच्छवडाज्ञानपहीन
है।मुखमेंआयेजलचरजीवनकोंषाइनहींसकेहै।देवयोगसैंइतनीवडीदेहम
रीहोयतौसवहीसमुद्रसत्वसंचारसौंरहितकरौं।ऐसैंमानसीपापसैंछुद्रम
च्छमरिकैंसातुवैंनरकगया।महामच्छतोअनेकजन्तुनकेभक्षनसंवंधीपापसैं
सातुवैंनरकगया।तितीससागरप्रमाणदोनोंकीआयुहुई।तहांपरस्परवार्त्तालाप
कीनी।अहोछुद्रमच्छमहापापकर्मतैंमेरीउत्पत्तिइहांसैंनवी।हमैरेकर्णमलका

११७

ति॥म्लेच्छनीसियंत्ररहणिम्हावियांयहपावकेसेंमिले॥तिसकाउत्तर॥तीनचो
बीसीकेवहत्तरविंवकहेहेंचैत्यालिनज्ञानेंनें॥गु॥२५॥चरचाएकसोअठाईसमी॥
प्रश्न॥स्वयंभूरमणसमुद्रवालामहामच्छकेवेनरकजाहे॥उसकीनोहमेंतंदुल
मच्छरहेहेसोसातवेंजाहे॥यांमुनीहेसोकैसेंहे॥समाधान॥काकंदीनामानगर
तहांजैनकुलकाउपनासोरसेननामराजा॥तिनमांसभक्षनकानियमलीया॥सो
छैरूउमरतनामवैद्यकेकहेसोमांसपेंइच्छाकरी॥परंतुलोकापवादकेडरसोंखो
डोवल्लुखाईनजाय॥तिसतेंकर्मप्रियनामरसोइयासोंअपनेचित्तकीअभिला
षाएकांतविषैकही॥जलकेथलकेबिलादिककेजीवांकामांसमंगायराजाका
जकीआकुलताकेवसमांसभक्षनकाअवसरनपाया॥कर्मप्रियराजाकीआ
ज्ञासोंनित्तमांसपाककरै॥ऐसेंकरतेंएकदिवससर्पकेबालकनेंडसामरिकेंस्वयं

चारसमयलगें॥ सिद्धांतसों विरोध होय। यातें संसारी जीवकों छह गति कही हैं।
तेई मानना। छह गमन मानना नहीं॥ इहां कोई ओर पूछे। वक्रगतिकै तो किहूं ती
न समय अंतरालवर्ती कहे। सरलगतिका क्या स्वरूप है। तिसका उत्तर। जहां
तिस जीवकों पहले ही समय आहार होय तिसकों सरलगति कहिये। [illegible]
[illegible] सो सरलगति संसारी जीवभी करै है॥ और मुक्तजीवकें भी होहै।
जिस समय संसारसों मुक्त होय तिस ही समय सिद्धक्षेत्र विषै पहुंचे एक समयांतर न
हीं॥ ॥ प्रश्न॥ अर चाएक मास अठाईसमी॥ प्रश्न॥ भरतचक्रीनें कैलाश पै एक चैत्याला
कराया है यह बात बडे पद्मपुराण विषैं वाली मुनिके प्रसंगमें कही है। रावण
नें कैलाश उठायो है तहां वालमुनिनें चिंतन कीया। तथा हि। कारितं भरतेनेदं
जिनायतनमुत्तमं। सर्वरत्नमयं तुंगं बहुरूप विराजितं। इहां कोई कहे॥

भरतक्षेत्र विषैं नम्रजीव प्रवृत्ति वर्षदीपमालिका सो सूर्योदय के होतही निर्वा
णपूजा करै हैं तब ही सो लोक विषैं दिवाली का उत्सव मानें हैं दिवाली वीते
निर्वाणपूजा नच्याहिये जैसे विवाह के समय मंगलगीत गावने हैं विवाह
तें गीत गावने किस अर्थ हैं यातें चौदसि के प्रातही निर्वाणपूजा उच्चि
है ॥ तदुक्तं हरिवंशे ॥ चतुर्थकाले र्द्धचतुर्थमासकै विहीनता विश्रुत
पके सकार्तिकस्वातिषु कृष्णभूत ॥ सुप्रभातसंध्यासमये स्वभावतः ॥६॥
अघातिकर्माणि निरुद्धयोगको ॥ विधूय घातींधनबद्धिवंधन
वापत्र्यं करो निरंतरायोरुसुखानुबंधनं ॥ असर्पबकल्याणमहामहेश्वरः
निर्वाणमहे चतुर्विधैः ॥ शरीरपूजाविधिना विधिना विधानतः ॥ सुरैः सम
सिद्धशासनः ॥ ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया

कथनाकसेंरेकथितं॥ब॥२३॥चरचाएकसौचौवीसमी॥१२४॥प्रश्न॥रेसमलीनहैकिअलीन
है समाधान॥ शास्त्रकीपूजाविधानविषैंरेसमकावस्त्रबटावनाकह्याहै अलीन
केसंकह्याजायातक्रं॥ सिद्धंगुणैंनेत्रविशालरम्यं वस्त्रंवरस्त्री वदनोपमानंस
होमकोरोयकपटकूलं॥ ददामिजैनश्रुतवदनताय॥ वस्त्रोरक्रियाकाग्रामेंतथा
और जागेनवजापविषैं एकजापरेसमकी कहीहै॥ चोपई॥ प्रथमफटकमणि
मोतीमाल॥ रजतसुवर्णसुरंगपवाल॥ जीयापोतारेसमजान॥ कमलवीजअर
सूतवषान॥१॥ एनवभांतिजापकेभेद॥ नावसहितजपियेतजिषेद॥ब॥१२४॥ च
रचाएकसैपचीसमी॥१२५॥ दिवालीकेंदिननिर्वाणपूजाकासमयकोंनसा॥ स
माधान॥ तीनवर्षसाढआठमहीनेचौथेकालमेंवाकीरहे तहांकार्तिकवदि
चौदसिकीपिछलीरात्रिसंबंधीसंध्याकेसमयश्रीवर्द्धमानस्वामीमुक्तहुए तवतें

न॥ श्री कल्लनेपसुएकजनटीकोथ देशांतरसें मांसउ श्री राजा भ्रा एतिनोंनें एव
त्रकीया॥ यहबात हरिवंशमेंहै॥ २५॥ चरचाएकसोबाईसमी॥ प्रश्न॥ राजमतीकोंन
राजाकीबेटीहै समाधान॥ राजमती राजाभोजकीबेटीहै॥ इहांकोई पूछे॥ उग्रसेनकी
बेटीतो प्रसिद्धहै॥ भोजकी कैसें है॥ तिसका उत्तर॥ भोजका दूसरा नाम उग्रसेन है॥
सका पिता उग्रसेन नजामना॥ तदुक्तं हरिवंशे॥ सविधिया वितनोजसुताकर
हाद्धिबिबोधितबांधवः॥ नरपतीन्सकलान्सकलत्रकान् कृतसन्निहित
कृतगौरवान्॥ ७॥ २५॥ चरचाएकसोतेईसमी॥ प्रश्नः॥ श्वेतांबराम्नायबिषेंनोनकों
अतिसचित्तमानें हैं॥ दिगंबराम्नायबिषें क्योंकरहै सो समाधान॥ दिगंबरशास्त्रमें
नोंनसचित्तकह्याहै॥ तदुक्तं॥ धर्मामृतश्रावकाचारे॥ हरितांकुरबीजांबुलवण
आसुकं त्यजन्॥ जाग्रत्कृपश्चतुर्निष्ठः सचित्तविरतः स्मृतः॥ ७॥ सचित्त

ऋचलायारांमजीकेवनसोंअनेकविद्याधरलोगमेरा।इत्यादिराजनपदमेंत्रसवधऊ
वासुनिषेधे।ओरपांचुवेंगुणस्थानविषेंत्रसवधकनिषेधहे।तातेंयहप्रसंगकेंयाक
रवनें।तिसकाउत्तर।पांचुवेंगुणस्थानकेदर्शनप्रतिमाउमुवग्यारहभेदहे।तिन
मेंजहांपूर्वोक्तपंचउदंबरादिकात्यागहोय।तहांपहिलीदर्शनप्रतिमाकहिये
भरतरामादिकेंमधुमांसादिकाग्रहणनही।तातेंत्रसवधकेपरित्यागविनाभीउ
नकेंपांचुवागुणस्थानमंभवे।जेसेंमावसपीछेचंद्रमाकीकलाकेदर्शनविनाही
सुकलपक्षकहिये।औरव्रतप्रतिमावालेकेंत्रसवधकानिषेधहेसोजोस्थूलत्रस
वधकानिषेधहे।सूक्ष्मत्रसवधकानिषेधउसकेंभीनहीं।तहांजोगुणस्थानपांचु
वांहे।१२७।।अथप्रश्नएकसोअठाईसमों।।प्रश्न।।जादोंवंशकेराजाउत्तमजेनीहे।तहां
नेमनाथजीकेविवाहमंगलकीवरियांश्रीकृष्णनेंपसुएकत्रकोंकीया।समाध

नोवगणाः नवंति॥ ७॥ अनत्राप्युक्तं॥ संमिश्रं द्विदलं दैयमामैस्तु मथितहितिः॥
निष्पद्यते यतस्तत्र॥ विविधास्त्रसदेहिनः॥ इहां कोई पूछै॥ यह तौ अन्न विदल
का दोष कह्या॥ काष्ट विदल का कहा दोष है॥ तिसका उत्तर॥ काष्ट विदल का दोष
किस ही मूल ग्रन्थ मैं कह्या होय तौ प्रमाण है॥ ७॥ चरचा॥ ९॥ संपूर्ण॥ पुनः एक
सौ वीसमी कथ्यते॥ प्रश्न॥ भरत रामादि सम्यक दृष्टी देवनकै कौनसा गुणस्थान
कहिये॥ समाधान॥ जिनकै पंचउ देवरती नम कार का त्याग होय॥ और सात विस
न का त्याग होय तिनकै पांचुवां गुणस्थान कहिये॥ तदुक्तं॥ [illegible] पालइ मूलगुण
विसणु नएक विदोग्रास अंतंसु विसुद्धमई॥ पदमउसावयसोउ॥ इहां कोई कहै॥
जिनकै संयम क्रिया होय॥ जिनकै हा पसो पंचेंद्री जीव [illegible] मनुष्यों का वध हो
य॥ तिनकै पांचुवां गुणस्थान क्यों कर संभवै॥ भरतजी नै बाहूबलकै मारनै कौं च

च०स०
११२

इहकथनश्रुतकथाकोशमेंजानना॥ ३॥ १२७॥ चर्चाएकसोअठारमी॥ प्रश्न॥ बाई
सअभक्षविषेंलोनीअभक्ष क्योंकही॥ समाधान॥ दोयमुहूर्त्तकेअनंतरलोनीवि
षेंसन्मूर्छनत्रसउपजेंहैं॥ तिसतेंअभक्षहै॥ तदुक्तं॥ आमिससरिसउत्तास्यिउअ
सांअंधउजाषाग्रदोयमुहूत्तंउप्परिं लोणिउसम्मुच्छाइ॥ ८॥ औरमूलाचार
ग्रंथविषेंबहुतप्रकारकहीहै॥ तिसतेंसंयमीकोंदोयमुहूर्त्तकेउपरांतोअ
भक्षहै॥ १२८॥ चर्चाएकसोउन्नीसमी॥ प्रश्न॥ विदलकाक्यास्वरूपहै और
तिसमेंक्यादोसहै॥ समाधान॥ जिसअन्नकेदोयदलहोय मूंगमसूरउरदचनाअ
त्यादिकअन्नअपक्वदहीतक्रादिसोंमिलैतोतत्कालसन्मूर्छनजीवउपजें॥
मुषकीवाफसोंमरिजांय॥ ऐसेंजैनशास्त्रमेंकह्याहै॥ तदुक्तं॥ यापक्वतक्रेंदधि
लान्नमिश्रंतुक्तिंविधत्तेमुखबाष्पसंगे॥ तस्यास्यमध्येमरणंप्रपन्ना ॥ संमूर्छका

११२

मतीनवर्षीयहव्रतअनंतवीर्यनेंकीनांसाचक्रवर्त्तिपदकीप्राप्तिभईविजयकुमार
नेंकीनासोसेनापतिहुवा।राजासिंधनेंकीनासोप्रतिवासदेवहुवा इसव्रतकेप्रभ
वसांस्वर्गमोक्षकीप्राप्तिहै।व्रतकीपूर्णताविषेंउद्यापनकरै।जिनमंदिरविषेंवडे
उछाहसोंस्नानपूर्वकपूजाविस्तारै।धुजाचंदोवाघंटाचमरतालकंसालकलसभा
रीइत्यादिचौवीसप्रकारदेउपकरणदेय।पटकूलसोनेंरूपेकीडोरीप्रमुखशास्त्रकोदेयअ
ष्टप्रकारपूजाकरै।आहारदानऔषधदानशास्त्रदानअभयदानयथायोगकरै।
आर्जिकाकोंसाडीदेयक्षुल्लककोंवस्त्रदेयचतुर्वर्णसंघकोंभोजनकरावे।इतनें
करनेंकोंसमर्थनहोयतोयथाशक्तिकरै।व्रतद्विगुणकरैइसप्रकारजोकोईस्त्री
पुरुषअष्टाह्निकव्रतकोंआचारै।भावनाभावैतिसैक्रमसोंस्वर्गमोक्षहोय।।त
थाइसकाव्याख्यानकरैश्रवणकरैश्रद्धानकरैतिसकोंमहापुन्यहोइ।।९।।

श्रीकोपूर्वोक्तविधिकरिकैंघरआइसंपूर्णभोजनकरै॥इसदिनकोपंचलक्षणसंज्ञा
है॥चौरासीलाषउपवासकाफलहै॥इसहीकोमुषसोध्ययाकहैहैं॥ ॥तेरसको
समस्तविधानकरिकैंनानविनांअंबलीकरससोंअकेलचावलकेभातकाभो
जनकरै॥इसदिवसकोस्वर्गसोपानसंज्ञाहै॥चालीसलाषउपवासकाफलहै॥
यहआंबिलजाननां॥हे॥चौदसकोपूर्वक्रियासबकरिकैंघरआवै॥प्रासुकलीन
तरकारीसांअकेलभातकाभोजनकरै॥अटकवालाअनशनकरै॥यहसर्वसं
पत्तिकरदिनहै॥एकलाषउपवासकाफलजाननां॥इसेंत्रिबलडीकहैहैं॥ ॥
पौंमासीकोपूर्वविधिसमस्तकरिकैंउपवासकरैश्रुतिद्दिमकथासुनै॥इसदिन
कानांवइंद्रध्वजहै॥तीनकोडिपंचासलाषउपवासकोयेंकाफलहै॥ ॥यहव्रत
उत्तममध्यमजघन्यभेदसांतीनप्रकारहै॥उत्तमसातवर्ष॥मध्यमपांचवर्ष॥जघ

षड्रीरसंस्कारकानियमकरै।चैत्यालयकेमध्यमंडपकरिकेंऊपरचंदोवावांधे
तिसमंडपविषेंमेरुथापे।अष्टमीकेदिनदेऊरेंआइअभिषेकपूर्वकपूजाकाउ
छाहकरै।तिसकेअनंतरप्रभुकीतीनप्रदछिनादेययथाशक्तिपंचनमस्कारमं
त्रकोंजपे।तिसदिनउपवासकरै।इसप्रथमदिनकानांमनंदीश्वरनामदिनहै।द
शलाषउपवासकीयेकाफलहै।२।नवमीकेदिनसमस्तपूर्वोक्तविधिक
रिपात्रदानकेअनंतरपारणाकरै।इसदिनकानांवअष्टविभूतिनांमादिनहै।।इ
हांदशहजारउपवासकीयेकाफलकह्याहै।३।दशमीकेदिननीपूर्वोक्तविधिक
रिकेंपानीमात्रसोंएकास्नानकरै।इसकानावत्रिलोकसारनामदिनहै।इहांसाठ
लाषउपवासकाफलजानना।४।एकादशीकोंपूर्वोक्तसबकरिकेंअल्पआहार
एकबारलेय।इसदिनकानावचतुर्मुषहै।पांचलाषउपवासकाफलहै।५।द्वाद

यस्तो तिथिसंपूर्णेत्याननी॥ तदुक्तं॥ यांतिथिंसमनुप्राप्य उदयंयातिभास्करः॥ साति
थिःसकलाज्ञेया॥ दानाध्ययनकर्मसु॥ तिसकाउत्तर॥ यहश्लोकजैनकानहीं॥ निर्णै
सिंधुनामवैष्णवग्रंथकाहै॥ जैनमेंतौ नमुहूर्त्तसांघट तीउदैतिथिकहीनहीं॥ ती
नमुहूर्त्तसांघटतीउदयतिथिमानेसेंआज्ञाभंगकादोषलगैहै॥ औरउपवा
सकेदिनउपवासनकुवा॥ तातेंव्रतभंगभीहै॥ फेरबोलाहमतौउपवासकरनाश
मभंगक्योंकरहुवा॥ उत्तर॥ मेहकेसमयमेंहकीवर्षाहोयतौ॥ धान्यवकृत्तहोय
११७॥ चरचाएकसौसत्रहमी॥ ॥प्रश्न॥ अष्टाह्निकव्रतकीविधिकिसप्रकारहै॥
समाधान॥ आषाढतथाकार्तिकअथवाफाल्गुनकेमहीनेंशुक्लपक्षकीसप्तमी
केदिनदंकुरआनेअभिषेकपूर्वकआनंदसोंअष्टप्रकारीपूजाकरै॥ तिसदिन
सोंरहे॥ तबहीसोंभूमिसयनपूर्वकब्रह्मचर्यकाधारणकरैतांबूलक्षम

मुहूर्त्तव्यापिनी उदयतिथिकों न से शास्त्रमें कहीहै। तिसका उत्तर॥ ॥व्याख्या॥
धरकृत यसाचारविवेकं कहीहै॥ तथाहि॥ त्रिमुहूर्त्तेपि यत्रार्क उदेत्यस्तमयस्य
पसांतिथिः सकलाज्ञेया प्रायः धर्मेषु कर्मसु॥ ७॥ आय इस वचनसको अर्थः देखो।
कालादि विशादनप्याप्तिनबति॥ तदन्यथा न घटतं किं॥ तदुक्तं मुनिसुव्रतपुराणे॥
षष्ठांशोप्युदये ग्राह्यः तिथिः व्रतपरिग्रहेः पूर्वान्यतिसंयोगो व्रतहानिकरो यतः
व्या अस्यार्थः॥ व्रतपरिग्रहेः सूर्योदये तिथिः षष्ठांशोपि ग्राह्यः इसत्रापि शोधेन
षष्ठांशादधिको ग्राह्य इति निर्विवादः नन्वंशा इति द्योतते उक्तः यस्माद्व
तपरिग्रहाणां षष्ठांशात्पूर्वमन्यतिथि संयोगः व्रतहानिकरेः व्रतनाशकरोभ
वतीत्यर्थः॥ त्रिमुहूर्त्तेपि यत्रार्क उदयेऽस्तगतेऽपि वा तिथयः सकलाज्ञेया उपवा
सादिपर्वसु॥ ॥कुहाकोइ फिर कहै॥ हमतो यांसु नाहीं॥ जिसतिथिमें सूर्य उदे है॥

प्रारम्भकहियेमूलदिनसोंआरंभकरिकैं।उत्तरदिवसे। कहिये।आलेदिनविषै
व्रतसंपूर्णांभवति।कहियेव्रतसंपूर्णहोय।अष्टाह्निकादिव्रतकीविधिनविषैंजो
यहअर्थसंभवैहै।भावार्थ।तिथिकाप्रमाणचउवनघडीसोंलेयपैंसठघडीताई
होहै।तथाकुछघाटछासठघडीहोयपूराछासठनहींहोय।तहांजोपहलेदिन
सोंउपवासकाआरंभकीजे।अगलेदिनमेंपांचघडीदिनचढेंतवसमाप्तिकीजे
पांचघडीकेउपरेंपारणांनकीजे।इहांकोईकहेअगलेदिनमेंजोछहघडीहोय
तवक्याकरै।पैंसठघडीसोंवधतीतिथिकाप्रमाणहोयहीनहीं।यातेंअगलेदि
नमेंछहघडीकहांतेंआवै।जोपहलेदिनसाठघडीसोंकोईघडीतिथिघट
तीहोयतोअगलेदिनउदयकालमेंछहघडीपाइये।सोतिथिउपवासकीयोग्य
है।जातेंतीनमुहूर्तकीउदयतिथिजैनमेंलेनीकहीहै।इहांकोईपूछेतीन

पंचमीकल्पपंचमी जिणगुणसंपत्ति जेह जिनवरकेवलचंद्रायणमेघमालारत्नाव
लीमुक्तावली इत्यादि जितने जैनव्रत हैं तितने सब प्रमाण हैं ॥ २८ ॥ चरचा एक
सत्तरमी ॥ प्रश्न ॥ चतुर्दशी आदि तिथिकी घटती आनि पडै है ॥ तहां व्रतविधान
कैसें होइ ॥ समाधान ॥ गाथा ॥ वयविहीणं चमइमे तिहियपडणे होइ जइयाऊ
मूलदिणं पारं भियअंतदिवसम्मि होइ सम्मत्तं ॥ ० ॥ व्रतविधिनामध्ये तिथेः पत
नं भवति यदा खलु मूलदिनं प्रारम्भ अंतदिवसे च व्रत्ति संपूर्णं ॥ व्रतविधीनांम
॥ कहिये अष्टमी चतुर्दशी आदि व्रतकी विधिन विषें ॥ यदा तिथेः पतनं भवति ।
॥ ७ ॥ कहिये जब तिथिका पतन कहिये ओम होय ॥ भावार्थ ॥ जहां उदयमें ती
न मुहूर्त व्यापनी तिथि न होय ॥ तिस तिथिका ओम जबा कहिये ॥ तदा मूलदिन
प्रारम्भ उत्तरदिवसे व्रतं संपूर्णं भवति ॥ ॥ ॥ तदा कहियें तब ॥ मूलदिनं

दनामदस्रामप्रूर्वपरिकैंसरागनहोहि॥ तिनकों अूलिन्नदस्राहवीसाधुकहिये॥
यहवातमूलाचारविषैकहीहै॥१२४॥ चरचाएकसौपंडमी॥ प्रश्न॥ अष्टप्रकारी
पूजाविषैंवडाप्रुन्यहै॥ इसप्रुन्यकीप्रसंसावचनगोचरनहीं॥ तिसतेंसर्वारंभके
त्यागीमुनिराजपूजाकाउपदेशकरें यहवातप्रवचनसारमेंकहीहै जिणिंदस्स
जोवएसोवा॥ इतिवचनात्॥१२५॥ चरचाएकसौसोलमी॥ प्रश्न॥ रोहणीकेव्रतवि
धानकाक्यासरूपहै॥ समाधान॥ जैसेंशुक्लकृष्णपक्षकेपंडहैंदिनअष्टमीचौ
दशिकाउपवासहोहै॥ तैसेंमत्ताईसवेंदिनरोहणीनक्षत्रआवैहै तहांउ
पवासहोहै॥ शास्त्रविषैंइसकीमर्यादकहीहै॥ उद्यापनसमैंतयहव्रतनमहाफ
लकादाताहै॥ नउक्तं॥ योगींद्रदेवैः॥ ॥दीवइदित्तइजिणवरहंमोदहवंदोप
णमइ॥ अहउववासइयोहिणिहिं॥ सोयविपलयहंजाय॥१॥ अथवासुक्क

तहां छह छह घडीपर्यंत तीर्थंकर प्रभुकी वांनी षिरे है। और मुनीश्वरके सामायिकसं
बंधी तीन ही काल है अर्द्धरात्र नहीं॥तिनकी मर्यादा कहु दी है॥तिसका उत्तर॥ और॥
घिक चार घडी रात्रसें दो है सूर्योदय तांई तिसकी समाप्ति है॥मध्या
सामायिकका काल दोय घडी है। फिर अपराह्नके सामायिकका काल चार घडी
॥नक्षत्रके दर्शनसें तिसकी समाप्ति है॥इहां कोई पूछे॥ ॥यह मुनिके सामा
यिककालकी मर्यादा कहां कही है॥तिसका उत्तर॥ ॥इहु नंदि आचार्यकृत नी
हीहै॥तथा हि॥घटी चतुष्टयं रात्रेः कुर्यात्सर्वाह्न वंदना
नियमो॥नाडीद्वयमुदाहृतं॥१०६॥अपराह्णेनु नालीनां चतुष्टया:समा
तं॥नक्षत्रदर्शनान्मुंचेत्सामायिकपरिग्रहं॥१०७॥१३॥चरचा एकसौ चतुर्दश
मी॥ ॥ ॥प्रश्न॥अजितनाथ आदि पूर्वी साधर्मी कैनसें कहिये॥समाधान॥विद्यानुवा

कमणपडुदिकल्लाणेपरखिन्नेसंविन्नो।जिणजिणघरवंदणाइंच॥२५॥११॥चर
चा।एकसौबारमी॥प्रश्न॥मुनिराजकोषडावस्यकक्रियाकेपाठमेंकहींकहींफेर
हैअत्याचारविषैंक्योंकरहै॥समाधान॥समाइक१।स्तुति२।वंदना३।प्रतिक्रमण
४।प्रत्याख्यान५।कायोत्सर्ग६।एछहोंआवश्यकक्रियाकेनांवहै॥गाथा॥समद
पुवोयवंदणपडिक्कमणंतहेववणायवं॥पच्चरकाणविसग्गोकरणीयावासयाछ
प्पा॥६॥तथाचोक्तंअमृतचंद्रसूरिणा॥आर्या॥इदमावश्यकषट्कंसमतास्तववंद
नाप्रतिक्रमणंप्रत्याख्यानंवपुषो॥व्युत्सर्गश्चेतिकर्त्तव्यं॥ ॥एछहोंक्रियासाधके
समायककालविषैंज्ञानमी॥८॥१२४॥चर्चाएकसौतेरमी॥प्रश्न॥तीर्थंकरकेसमो
वसरणमेंतीनकालवानीखिरैसोईमुनीश्वरोंकेसामाइकासमयहै एदोनोंकार्यएक
कालक्योंकरसंभवै समाधान पूर्वाह्णमध्याह्नअपराह्णअर्धरात्रएचारकालहै

आठ पृथ्वी मध्यलोक संबंधी है कि अधोलोक संबंधी है॥ समाधान॥ सुमेरु पर्वत की ऊंचाई
कंद समेत लाख योजन की है। तिसतें यह चित्रा पृथ्वी मध्यलोक संबंधी है। अ
धोलोक संबंधी जुदी है॥ वह चित्रा रत्नप्रभा नाना मय है। पृथ्वी के खरभाग का पहला पटल है
हजार जोजन की मुटाई उसकी जो जामनी॥ यह कथन विस्तार रूप त्रिलोकसार वि
षे है॥ ७॥ ११॥ चरचा एक सौ ग्यारमी॥ प्रश्न॥ छठे गुणस्थानवर्त्ती मुनि के आहारक श
रीर संदेह निमित्त निकसै है कि और निमित्त भी निकसै है॥ समाधान॥ औदारिक श
रीर सौं अगोचर है सूक्ष्म तत्त्व विषें केवली श्रुतकेवली हों हि तिनके निमित्त आहारक श
रीर निकसै॥ तथा निक्रमण॥ दितीन कल्याणक के वर्त्तमान हुवे निकसै॥
ढाई द्वीप वर्त्ती तीर्थयात्रादिक के निमित्त भी उत्तम मुनिराज के निकसै॥ यह कथन
गोम्मटसार के वेद मार्गणाधिकार में है॥ तथा हि॥ णियखित्ते केवलिदुग विरहे णि

श्रीसुमेरपर्वतकीउंचाईकंदसमेतलाषजोजनकी है ।। तिसकेउपरचालीसयोज
नऊंचीवैडूर्यमणिमयीचूलिका है सोलाषयोजनमेंगर्भितहै किजुदी है ।। समाधान
सुमेरपर्वतहजारजोजनकंदमें है ।। औरपृथ्वीसोपांचसैयोजनऊपरनंदनवनहै
तिसकेसाढेबासठहजारयोजनऊपरसोमनसवनहै ।। तिसकेछतीसहजारयोज
नऊपरपांडुकनामावनहै ।। तिसकेमध्यचालीसयोजनऊंचीचूलिकाहै ।। तिसतेंला
षयोजनमेंगर्भितनहीजुदीहै ।। ऐसनांतिवडहरिवंशमेंकह्याहै ।। तथाहि ।। विदेहदे
त्रमध्यस्थः कुरुक्षेत्रद्वयावधिः ।। योजनानांसहस्राणिनवतिर्नवचोच्छ्रितः ।। प्रथमख
लात्रयसंयुक्तः स्मातोमेरु [illegible] हीधरः ।। ऊर्ध्वचूलिकया
द्वासीसचत्वारिंशद्युक्तया ।। ७ ।। चरचा १०५ संपूर्णं ।। एकसौदसमीचरचा लिख्यते ।। सुमेरप
र्वतहजारजोजनकंदमेंहै सोकंदहजारयोजनकीमोटीचित्रापृथ्वीविषेंहै ।। वहत्ति

रषंडहुयो।इसप्रकारकल्पनाकरतेंलाषदसलाषकोडोंवहुषंडहोइहींयातें
कानिविभागस्वरूपतुमारेमतमेंसिद्धहुवानहीनीकेंविचारिदेषौ।।
स्वरूपजैनमतमेंसिद्धहै।।१०७।।चरचाएकसौआठमी।।प्रश्न।।सनीश्चरकेविमानका
वर्णस्यामकहेंहैं।।वनारसीदासजैभीनोगहीकेकवित्तमेंसांमहीलिषाहै।।सोकैसा
है।।समाधान।।त्रिलोकप्रज्ञप्तिनामग्रंथविषेंसनीश्चरकाविमानसुवर्णमयीकह्या
है।।तद्यथा।।गाथा।।चित्तोवरिमतलादो गंतूणयणवसयाइजोयणए उवरिंसुव
ण्णमयाइंसणिणयराणिंणहेहुंति।।०।।चित्राष्टथ्वीतेंनवसैयोजनऊपरसनीश्च
रकापटलमध्यलोकमेंहै।।यहवडुवचनमकाश्रयोजनजाननां।।०।।तथावडेह
रिवंशविषेंभीइसहीभांतिहै।।तथाहि।।शनैश्चरविमानानितपनीयमयानि।
चांगारकविमानानिलोहिताक्षमयानिच।।१०८।।चरचाएकसौनवमी।।प्र

हसरानांववंसीहै॥वेईजालांतरश्रामसूर्यकी किरणकरिरोवांसे दिषाईदेहैं॥एह त्रुद-
वेंग्रोमिलेंतवएकमरीचिनामाहोय॥बहुमरीचिकीएकराईहोइ॥एतावताराईके
एकहजारत्रसीषंडहुवा॥यहीषंडपरमाणुकाप्रमाणसिद्धहुवा॥इसतेंश्रौरकुछ
सुक्ष्मवस्तुनहीं॥याहीहेतुसोंपरमाणुसंज्ञाहै॥इसप्रकारसांष्यमतवालेनेंपरम
एकालक्षनकह्या॥तवजैनकहैहैयहतौतुमसत्यकहौपरमाणुसेंश्रौरकुछ
सूक्ष्मवस्तुनहींजिसकाहसराषंडनहोय॥तिसेपरमाणुकहिये॥यातेंएकराईके
एकहजारत्रसीषंडकरि॥परिमाणकाअनमानकह्या॥श्रपनेजानेंतुमपरमा
णुकोंवहुतसूक्ष्मसत्तासाधी॥परंतुपरीक्षाकीयेंपरमाणुकायहअनमानवन
तानहीं॥काहेतेंराईराईवरावरदशहजारश्रोषधएकत्रपीसचूर्णकीजै॥तिसके
एकराईमात्रचूर्णविषेंकोनसीश्रोषधनहीं॥भारीश्रैसेंएकराईकेदशहजा

मिलेंतवएकऊर्द्धरेणुनामषंधहोय।आठऊर्द्धरेणुमिलेंतवउत्तमभोगभूमिका एकवालाग्रहोय।एआठमिलेंतवमध्यमभोगभूमिकावालाग्रहोय।एआठमिलें तवएकजघन्यभोगभूमिकावालाग्रहोय।एआठमिलेंतवकर्मभूमिका एकवा लाग्रहोय।आठलीषजूंकजोएतीनोंउत्सेधांगुलतांईआठआठगुणेंजाननें।ऐसा स्वजैनमेंकह्याहै॥इहांकोईसांख्यमती कहै।ऐसीसूक्ष्मता कीअनवस्थासीजुईजाहै तिसतेंसांख्यशास्त्रविषैपरमाणुकाल अच्छीतरहकह्याहै॥तदुक्तं॥सांख्यशास्त्रेपरमाण्वादिलक्षणंदर्शयति॥त्र सरेणुःबुधैःप्रोक्तःत्रिंशतापरमाणुभिः॥त्रसरेणुस्तुपर्यायेनाम्नावंशी।निगद्यते जालंतरगतैःसूर्यकरैर्वंशीविलोक्यते॥ताभिःषड्भिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिश्च रा जिका॥याश्लोकोंविषैंयहकह्यावहै।तीसपरमाणुकाएकत्रसरेणुहोहै।तिसहीका

गालनरूपहै।यातेंपुद्गलकीपरमाणुकोंपुद्गलसंज्ञाहै।तदुक्तं॥वर्णगंधरसस्पर्शैः
पूरणंगलनंचयत्॥कुर्वंतिस्कंधवत्तस्मात्पुद्गलाःपरमाणवः॥इहांकोईफेरकहै॥
वर्णादिकेपूरणगालनसोंपरमाणुकोंपुद्गलसंज्ञासिद्धहुईव्यणुकादिस्कंधकोंक्या
कहोगे॥तिसकाउत्तर॥व्यणुकादिस्कंधजोहैंतेअपनेप्रदेशोंकेपूरणगालनरूपस्व
भावकरिपरिणवेंहैं॥परिणवेंगेपरिणयेंपर्यायोंबंधकोंजोपुद्गलहीकहेंगे॥इहां
कोईपूछे॥परमाणुकासंस्थानक्याहै॥उत्तर॥आदिपुराणकेवीसमेंपरमाणुका
आकारगोलकहाहै॥तथाहि॥अणवःकार्यलिंगाःस्युःद्विस्पर्शाःपरिमंडलाः॥ए
कवर्णरसानित्याःस्युरनित्याश्चपर्ययैः॥औरजोकोईपूछेपरमाणुकाअनुमान
क्याहै॥तिसकाउत्तर॥अनंतानंतपरमाणुमिलेंतबएकअवसंज्ञनामस्कंधको
नातिहै।आठअवसंज्ञमिलेंतबसंज्ञासंज्ञनामएकखंधहोय।आठसंज्ञासंज्ञ

रिषडंशात्वकहैदोषनहीं॥ तदुक्तं॥ श्लोकः॥ आद्यंतरहितं द्रव्यं विश्लेषरहितांश
कं। स्कंधोपादानमत्यक्षं परमाणुं प्रचक्षते।१। अर्थ॥ परमाणुं एतादृशं चक्षते॥
परमाणुनाम वस्तुकों ऐसा कहिये। कैसा है। आद्यंतरहितं। आदि अंतरहित
अनादिनिधन है। और कैसा है। द्रव्यं। द्रव्यरूप है। भावार्थ। पर्यायरूप थिर नहीं
है। द्रव्यरूप पुद्गलपरमाणु सदा अविनाशी है। और कैसा है। विश्लेषरहितांशक
अंशकी भिन्नतासों रहित है। भावार्थ। पर्यायार्थिकसों परमाणु विषें षडंशकी कल्प
ना है। द्रव्यार्थिकसों निरंश है। और कैसा है। स्कंधोपादानं। स्कंधरूप पुद्गलकों का
रण है। और कैसा है। अत्यक्षं। अतिंद्रिय है। किसी इंद्रियसों ग्राह्य नहीं। यह कथन।
गोम्मटसारके सम्यक्त्वप्ररूपणाधिकारमें है। इहां कोई प्रश्न करै। परमाणुकों पुद्गल
संज्ञा कही सो कहि है। तिसका उत्तर। अपनें स्पर्श रस वर्ण गंध करि स्कंधकी नांई पूर

षाईहै॥तिसकाउत्तर॥तिनकेविमानवाहकदेवतानकोदेहषिरतीदिषाई
देहै॥९६॥चरचाएकसोसत्तमी॥प्रश्न॥परमाणूकोंषट्‌कोणकहनाचनतमें
कहैहै।सोषट्‌कोणक्याकहावै॥समाधान॥पुद्गलकोपरमाणूनिर्विभाग
प्रदेशमात्रहै॥जिसकाआदिअंतमध्यएकहीहै।तिसमेंषट्‌कोणकोंकरसंभ
वें।यातेंजिसआकाशकेप्रदेशविषैंपरमाणुहै।तहांषट्‌प्रदेशाकास्पर्शहै॥
चारोदिशाकेचारप्रदेशाकास्पर्शहै।दोनांऊर्ध्वअधकेप्रदेशाकास्पर्शहै।यातेंप
रमाणूषडंशत्वहै।षट्‌कोणनहीं॥इहांकोईआसंकाकरे।पुद्गलकोपरमाणू
तोनिरंशहै।तिसकोंएककालएकप्रदेशविषैंषडंशाकायोगहै।तोतिसको
अणुमात्रबंधकहोपरमाणूकाहेकोंकहो॥तिसकाउत्तर॥यद्यपिमसांचकही
यद्यपिद्रव्यार्थिकनयकरिपरमाणुकोंनिरंशत्वहै।तोभीपर्यायार्थिकनयक

पैज्ञायनवस्यकात्मलजानना॥८५॥ त्वरत्वा एकसोपष्टी॥ अस्या॥ स्याका
उल्कापातहोहै॥ लोकविषेंतिसकोंतारादूटाकहेहें॥ सोकयाहै॥ समाधान॥ तारा
गणकेविमानतेंसासतेंहे॥ एकोंकारपडेंगे॥ जोतिषीदेवकोतवआयुपूरीहोइ॥
॥ उसकीदेहगिरतीदिषाईदेहै॥ इसकाउदाहरणवृहत्स्वपुराणमेंस्वयमा
नविरक्तप्रस्तावविषैंहे॥ तथाहि॥ अथोपरिविमानस्यनिषण्णः शिखरांतके॥ आपा
ड्गालायाः कैलाशाधित्यकोपमे॥ ८५॥ ज्योतिष्प्रथासमुत्तुंगा॥ स्पतन्त्रस्फुरि
तप्रभं॥ ज्योतिर्विवंमरुत्स्नुरालोकनतमोनवत॥ ८६॥ आर्तिनयक्तदाकष्टसं
सोरनास्तितपत्रंयत्रतत्रोंउत्तिरिक्तंमृत्युः सुरगणापि॥ ८७॥ नडिउल्का
त्तिनंगुरुंतत्सर्वमतः देवानामपियत्रास्मिप्राणिनांतत्रकाकथा॥ ८८॥ नाजहां
हसंदेहरहा॥ देवतातोअपनेविमानमेंतिष्टेहैं॥ उनकीदेहकोंकरिपिरतीदि:

एकसौपांचकौ॥प्रश्न॥जंबूद्वीपमेंदोयचंद्रमांदोयसूर्यहैं।एकसूर्यकाप्रकास
लाषयोजनताईंसुनाहै।सोकैसेंकरहै।समाधान॥सुमेरकीप्रदक्षनाकरतनि
षिदपर्वतपैसूर्यकाउदैहै।समनरतक्षेत्रविषैंतवहोयहै।जबपर्वतकीनजीक
विस्तारमेंपचपनसे [illegible] पचहत्तरजोजनवाकीरहैहै।तहांसूर्यकेचलनें
काएकसौचौरासीमार्गहै।तिनमेंकर्ककीसंक्रांतिकेदिनप्रथममार्गविषैंउदय
होहै।तहांसेंसैंतालीसहजारदोयसैतिरेसठजोजनऋयोधाइकछसरसहै
यातैंसैंतालीसहजारदोयसैतिरेसठजोजनऋकछसरसासूर्यकाप्रकासआ
गैंऔरहै।सवचौरांणवेहजारपांचसैछवीसजोजनसरसहुवा॥आधेसुमे
रताईंदाहिनीओरसमुद्रकेछठेभागताईंरवांईउरयहसूर्यकेप्रकासकीम
र्यादत्रिलोकसारमेंकहीहै॥पचपनसेपचहत्तरयोजनपूर्वोक्तनिषिधपर्वत

प्रमाणतारागणद्वीपक्षेत्राधेछे॥ अविशेषकैसेसमांहि॥ तिसकाउत्तर॥

ध्यौतिंसात्तसैनवैयोजनऊपरएकसौदशयोजनप्रमाणजोतिषीपटलकीमु

टाईहैतिसपर्यंततारागणजाननें॥ फेरपूछे॥ यहबातकहांकहीहै॥ तिसका

त्तर॥ त्रिलोकसारमेंकहीहै॥ गा॥ णउदुत्तरसत्तसया॥ चित्तादोतारगादि

वरियं॥ जोइसपडलवहल्लं दससहियंजोयणाणसयं॥ ३५॥ टीका॥ अस्तिऊ

र्ध्वनवशतयोजनानि चित्रातः तारकाअपितावन्नवशतयोजनपर्यंततिष्ठंति

तिष्कपटलबाहुल्यंदशसहितंयोजनानांशतं॥ ऐसेहीत्रिलोकप्रज्ञप्तिमेंक

ह्या॥ णवदिजुदसत्तजोयणसदाणि गंतूणउवरिचित्तादोगयणतलेतारा

णिवहलेदकुत्तरसदम्मि॥ अस्यार्थः नवतियुक्तसप्तयोजनशतानि गत्वा

तः गगनतलेताराणांपुराणिवहलेदशोत्तरशते॥ १०४॥ करवा

कोशावडेहैंकिछोटेहैंसमाधान॥जोतिषीविमानोंकेजोजनवाकोशका॥प्रथमेंब
डेकहेहैंएकजोजनकेइकसठभागकीजेतिनमैंछप्पनभागचंद्रमाकेमंडलका
विस्तारहै॥अठतालीसभागसूर्यकाविस्तारहै॥औरग्रहनक्षत्रतारागणविषें॥
उत्कृष्टविमानका[illegible]विस्तारकोशएक॥जघन्यविस्तारकोशपाव॥तहां
एकचंद्रमाकापरिवारचंद्रमाइंद्रसूर्यप्रतिइंद्र॥अठासीग्रह॥अठाईसनक्षत्र॥
छासठहजारनौसैपचहत्तरकोडाकोडितारागण॥यहप्रमाणहै॥तहांउत्कोस
अंकमात्रतारागणविषैंजघन्यअंतरकोसकासातवांभाग॥मध्यअंतरयोज
ना॥५०॥उत्कृष्टपरस्परअंतरयोजनहजार१०००॥इहांकोईसंदेहकरै॥लाष
जोजनकाजंबूद्वीपहैसारेद्वीपकाक्षेत्रफलसातसैनवैकोडछप्पनलाषचौरां
णवैहजारएकसौपचासयोजनकह्याहै॥तिसकेअग्रअंककहेहैंतहांउत्को

नतादिच्यारोंस्वर्गमेंदेवरिद्धिकादर्शनसम्यक्त्वकोंकारणनही॥ औरवाकीका
रणहै॥ नवग्रैवेयकविषेजातीस्मरणधर्मश्रवणसम्यक्त्वकोंकारणहै॥ तहांकोई
सम्यकदिष्टीग्रहमिंद्रशास्त्रकीपरिपाटीकरताहोयतिसकाश्रवणजानना॥ श्र
योंग्रनुदिशग्रनुत्तरवालेपूर्वेंगृहीतसम्यक्त्वहै॥ यातेंतिनकेंजातीस्मरणधर्मश्रव
णकोकारणनाही॥ तिर्यंचमनुष्यकेंजातीस्मरणधर्मश्रवणजिनबिंबदर्शन
इत्यादिएसम्यक्त्वकेकारणहै॥ इहांकोईसंदेहकरै॥ नारकीतथादेवताकेंविभं
गावधिसांपूर्वजन्मकास्मरणहै॥ सोसम्यक्त्वकोंकारणनही॥ जातीस्मरणकारण
क्योंकहै॥ तिसकाउत्तर॥ विभंगावधिकेंजोडसोज्ञानदोहै॥ सोसर्वदाकेहै॥
यातेंसम्यक्त्वकोंकारणनही॥ जातीस्मरणसहजहीहोहै: यातेंसम्यक्त्वकोंका
रणहै॥ ॥२०३॥ ॥चरचार्येसोचारकी॥(प्रश्न)॥ जोतिषीविमानोंकेजोजनत

स्वविस्मृतिंतंकुमारःपरिपृष्टवान्॥सोपिभट्टारकंपूर्ववर्णयित्वापुरुंपरां॥२४॥पश्चा
ध्यावर्णयामास॥ग्राह्यहिक्रमवेदिनः॥श्रुत्वातत्रकिंजातं॥तीर्थकृन्नामकुच्छ
वान्॥२६॥एषएवपुनर्मुक्तिमापदित्युपयोगवान्॥साक्षात्कृतनिजातीतसर्व
भवसंततिः॥२८॥विजृंभितमतिज्ञानः॥तयापत्रमिवेनवान्॥लब्धबोधिःपुन
लौकांतिकदेवप्रबोधितः॥२९॥ ॥श्रोतोकेतेतीर्थकरभवस्मरणसोंविरक्त
कुंयेमहापुराणविषेंकहेहैं॥तथानरकमैंजीवकिंनयावधिहै॥तहांतोसरनरक
तांईजातीस्मरणसोंतथाधर्मश्रवणसोंवेदनानुभवसोंसम्यक्तउपजै॥आगैचौ
थेसोंसातवेंनरकतांईजातीस्मरणसोंतथावेदनानुभवसोंउपजैहै॥धर्मश्रव
णतहांनहीं॥देवतानकैंजीवअवधिहै॥तहांजीजातीस्मरणधर्मश्रवणजिन
महिमादर्शनदेवरिद्धिदर्शनसहस्रारस्वर्गतांईएसम्यक्तकेकारणहैं॥आ

वाहिरकांनोंकीजानेंयहव्योरागोम्मटसारकेज्ञानाधिकारमेंहै॥ ॥२०४॥ ॥त्व
स्त्राएकसोतिवातरमो॥ ४४५॥ जातीस्मरणकाक्यास्वरूपहै॥ औरकोनसेज्ञान
कभेदहै॥ समाधानःजैसेंरात्रकेसुपनेंकादिनमेंस्मरणहोयहैतैसेंअन्यभव
कास्मरणवर्त्तमानभवमेंहोय॥ तिसजातीस्मरणकहियेऔरयहमति
है॥ इहांकोईकेहहमतोअवधिज्ञानकाभेदजानेंहैमति
ज्ञानहै॥ तिसकाउत्तर॥ श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरतीनज्ञानविराजमानभवस्मर
णसोंलिखवोधभयेजोजातीस्मरणअवधिकाभेदहोतातोपहलेंहीलखुवोध
होते॥ तदुक्तंमहापुराणमध्येपार्श्वनाथस्यवैराग्यावसरे॥ साकेतनगराधीशोराग॥
जयसेनमहीपतिः॥ मंगलादिद्रव्यसंजात॥ इत्यादिप्राभृतान्वितः॥ २०॥ तंनारदासोनि(
रष्टार्थेपश्चात्तेणोतापार्श्वसंनिधि॥ गृहीसोपायनंसंपूजयित्वाहतेहमंमुदा॥२१॥ साकेत

ओदाइवज्रमईहो
संवज्ररिषभनाराचसंहननकहियें॥इहांकोईप्रश्नकरैहै॥जोदाइवज्रमई
तोनारायणकेचक्रसोंषंडकैसेहुवे॥तिसकाउत्तर॥नारायणकेचक्रसोंषंड
नहीहुवेहदयपंद्रहुवे॥१०॥चरमगाणकसोहुवोतरमी॥प्रश्न॥मनःपर्ययज्ञा
नवालाउत्कृष्टअढाईद्वीपवर्त्तीजीवनकेमनकीजानैकिंवाहिरकीभीजानै॥स
माधान॥मानुषोत्तरतैंवाहिरच्यारोंकोनविषेंदेवतातथातिर्यंचरहैहैतिनके
भीमनकीजानै॥इहांकोईकहैकर्मकांडकीभाषावचनिकामेंमनुष्यलो
कप्रमाणमनःपर्ययज्ञानकाविषैकह्याहै॥सोक्योंकरतिसकाउत्तरपैंतालै
सलक्षयोजनप्रमाणमनुष्यलोकहै॥सोइपैंतालीसलक्षयोजनप्रमाणमनःप
र्यैकाविषयहैविशेषइतनाइहांगोलकीआस्चौडाईकीअपेक्षाहै॥मनुष्यलो
ककाक्षेत्रगोलहै॥मनःपर्यैकाविषयक्षेत्रचौकोरहै॥तिसतैंअढाईद्वीपके

वा४-

मरंतिमुक्खंतिछुगंता॥७५८॥स्वगगिरिगंगडुवेदी॥खुद्दविलाद्दिविसंतित्रासमा ॥
मेतिद्दयारक्खरसुरामणुस्सजुगलादिवकू जीवा॥७५९॥ ॥१०७॥ ॥चरमाएक
सोइकोतरमी॥३५॥॥वज्रऋषभनाराचसंहननकाछेदनेदहहेकिनहीं॥नमा
न॥वज्रऋषभनाराचसंहननविनासातवेंनरकनजाइसर्वार्थसिद्धिनजाइ॥
हनजाय॥तहांनारायणकेचक्रसोंपहलेजुतिनाराइ॥कोंऊवाउकमालस्वा
मालनीकेउपद्रवसोंसर्वार्थसिद्धगये॥गुरुदत्तपांडवादिउपसर्गहीसोंअंतकृ
त्केवलीहोयमुक्तऊवे॥इत्यादिअनेकप्रसंगविषेंवज्रऋषभनाराचसंहननका
छेदनेदकूबाप्रसिद्धहै॥इहांकोईपूछेवज्रऋषभनाराचसंहननका
पहै॥तिसकाउत्तर॥ऋषभनांववेष्टनकाहै॥नाराचनांवकीलकाहै॥संहननमनां
वशरीरकेहाडकाहै॥जहांएतीनोंवज्रमईहोयमांसादिअपनेंस्वरूपहोंहैति

औरयहमनुष्यआयुकीसमाप्तिविना।विषशस्त्रादिकेयोगसौंउदीरणामरणकरै
गा॥इसभांतिज्ञानमेंप्रतिभासीहै।सोईवोयहभ्रमपानहीं॥९९॥चरचासौ
मी॥प्रश्न॥छठेकालकेअंतप्रलयविषेंबहत्तरजुगलकोंविद्याधरलेजांहिगे
सोयहबातक्यौंकरहै।समाधान॥नेमचंद्रआचार्यकृतत्रिलोकसारमैंतौबह
त्तरकानियमकीनानहीं॥छठेकालकेअवसानसमयसंवर्त्तकनामप्रलयप
वनचलेगा॥पर्वतवृक्षवृक्षादिसर्वचूर्णहोजांहिंगेसबस्थानकेअंतताईजी
मतेजीवमरेगेमूर्छितहोंगे॥विजयार्द्धपर्वत[illegible]तथागंगासिंधुनदीकीवेदीछुद
बिलादिविषेंनिकटवर्तीजीवअवसकरेंगे।औरमनुष्यादिवजुतजीवनकेजुग
लविद्याधरतथादेवतादयाकरिलेजाहिंगे।इसभांतिकथनहै॥तथाहि॥गा
था॥संवत्तयणामणिलोगिरितरुभूपहुदिचुमणंकरिय॥भमदिदिसंतोजीव

शोकसमाक्रांतोवावदयदिदंवच:॥१४॥देवदेवधराचक्रंरदतिह्येममत्रन:॥किंत्वं
तकेनमन्त्रोहार्योराजीवतावधे:॥१५॥क्रियान्ममैषएवासौनायुषातेनजीवित:॥
नानीतश्चैत्वयासेयहृतेनमामपिपत्क्षन:॥१६॥तवकिंग्रतोनोतंकिंतुकर्वतिनगर्वि
ता:॥कालातुमहसेलोल:किंपक्षंतत्वज्जेदितं॥१७॥तदाकर्ण्यसदृशाज्ञाछिंजाकिं
वास्मिनांतक:॥सिद्धैरेवसवार्यन्मिनैस्तगिपालविश्रुतं॥१८॥अपवर्सोऽखुष:केचिद्
द्वायुर्जीवित:परा॥तान्सर्वान्संहरत्येषयमोमृत्योरगोचर:॥१९॥तस्मिन्वदत्यवेदेरं
जीर्णमाकूर्मेवृथा॥भोवदीतांप्रहाणास्तुशोकंहित्वमुवाचतं॥२०॥इत्यादिद
दीरणमरणकेअनेकउदाहरणहैं॥इहांएकओरसंदेहरह्यो॥जिसजीवकीआयु
सौवरसकीज्ञानमेंप्रतिभासिहै।सोघटतीक्योंकरिहोय॥तिसकाउत्तर॥यहम
नुष्यसौवरसकीआयुकाबंधकरिआयाहै।सोअपनीआयुसमाप्तिकरिमरेगा॥

मंजारीकिजोगसेतीवालककीमृत्युहोनीहै॥यहवातनगरकेराजानेंसुनीवाराह
मित्रसोंकही॥वाराहमित्रबोला॥महाराजमहवाकुदोषनाावसोंकहैहै॥मेरा॥
ज्ञानअन्यथानही॥राजाबोलेजानियैगी॥यहवार्त्तातौअपनेंहाथकीबिलत्तिमध
है॥तिसकेअनंतरसातवेंदिनदूधपीवतेबालकपेंमंजारीकेपावसोंआगलपडी
बालककीमृत्युहुई॥इसप्रकारआयुहोंतेंउत्तरानिमित्तसोंमृत्युहोवैहै॥उदीरणा
मरणतथाअकालमृत्युकाऔरएककल्पितदृष्टांतहै॥किनहीपुरुषनेंअवधि
ज्ञानीसाधसोंतर्ककीनीमेरेहाथमेंचिडीहै॥सोयहदीर्घायुहैकिअल्पायुहै॥सा
धुबोलेइसकोआयुतेरेहाथहै॥औरएकप्रसंगमहापुराणविषैजहांसगरचक्री
कसमझावनेंकोंमणिकेतुनामदेवमृतकपुत्रकोंविक्रियाकरिलायाहै॥चक्र
वर्त्तिसोंकहैहै॥यहप्रसंगहै॥तथाहि॥तदाऽऽयणॅमणिकेतुःसमेत्यतं॥महा

रूपेण

ग्रयः॥आयुर्यस्यापिदैवज्ञैःपरिज्ञातेहिजातके॥तस्यापिदीयतेसद्योनि
ऋरयोगतः॥७॥इनदोयश्लोकविषैइहतात्पर्यहै॥जिसमनुष्यकीआयुज्योति
पंडितौनेलग्नादिकेविचारसोंदीर्घजानीहै।सोभीग्रहौनिमित्तांतरसैं
हे।इसअर्थकाउदाहरणलिषियेहै॥प्रतिष्ठाननामनगरविषैदोयब्राह्मणरहैं
एककानामवराहमिहरदूजाकानामभद्रबाहूदोनूंभाईदिक्षालेनेगये॥आचार्य
धवानैदेषिआपनापदभद्रबाहुकोंदीना॥वाराहमिहरनेंआपकोंवडाजा
निदोषमानां॥नगरमेंब्राह्मणकोंभेषपलटिकेंवाराहीसंहितानामज्योतिषग्रं
थकरिजीवकाकरणलगा॥एकपुत्रहूवालग्नादिकेबलसोंकहीमेरेंबालककुंआ
सोआयुहै।सोवरसजीवेगा॥भद्रबाहूनेंसुनिकेंकही॥जातिककेबलसोंकहै
नांही॥बालककीआयुसोवरषकीहै॥परंतुसातवेंदिनमे

हाहै॥ इसहीकानांवकदलीघातमरणहै॥ कोईकेहैरुधिरकेनाशतेंमरैसाकेयोंकर
होहै॥ तिसकाउत्तर॥ श्लोकः॥ विशिकासाशास्त्रमेंउक्तं॥ जेवावसतिसर्वत्रत्रिषुस्थाने
विशेषतः॥ त्रिभिःक्षयेस्वयंयातिशुक्तेस्त्केतथामलं॥ तथाचब्रह्मपद्मपुराणसंसार
स्वरूपेचित्र्यवर्णनावसरेकथितं॥ श्लोकः॥ छिन्नपंतेडव्यनिर्मुक्ताः॥ म्रियंतेबालतायु
वृत्तौपाशुषिद्धीणेदेत्तुनाचोपसंहृत्ते ६०॥ अर्थ॥ अभिन्नचित्रपटचेहिता
कारमानवसूटेकेचित्तद्व्यनिर्मुक्ताः छिन्नपंते॥ केचितपुनः बालतायुवान्या
वस्थासुम्रियंते॥ कथंसर्वोपाताशुषिद्धीणे सर्वमर्जितंयदायुःतस्यक्षयेसति
कथंक्षय॥ इत्यपेक्षायांहेतुनाउपसंहृत्तेकारणांतरेणकृतोपसंहारसंके
चरूपेस्यार्थः॥ सारसमुच्चयेउक्तलनद्रुणायुक्तंमनुष्याउच्यः अनित्यत्वनिरूपणं
॥ अलायुषानरेणेहधर्मकर्मविजानता॥ नज्ञायतेकदामृत्युःभविष्यतिनसं

अनुक्रमान आयुकौ होय॥ इहां कोई फेर कहै है॥ विषशस्त्रादिकै योगसौं आयु
की स्थितिका छेद होय यह वात हमारे चित्त विषै क्यों ही श्रद्धान नहीं करै है॥ ति
सका उत्तर॥ श्रीकुंदकुंदाचार्यनैं भावपाहुडमैं कह्या है सो सुनुं॥ गाथा॥ वि
सवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं॥ आहारुस्सासाणं णिरोहणा खिज्जए आ
ऊ॥२५॥ और गोम्मटसार विषैं नेमचंद्रजी नैं भी यही कह्या है॥ गाथा॥ विसवेयणर
त्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं॥ आहारुस्सासाणं णिरोहदो
ऊ॥५७॥ उक्तंच॥ विषवेदनारक्तक्षयभयशस्त्रघातसंक्लेशा॥ उ
निरोधः छिद्यते सः कदलीघातः॥ अर्थ॥ विषभक्षण॥ रोगकी वे
दना रुधिरका नाश भयसौं फिकरना खड्गादिकै घातका संक्लेश उस्वास
निरोध अन्नजलका निरोध इत्यादि कारणसौं आयुकी स्थितिका छेद

र्मनकाआबाधाकालआवलीमात्रहै।भावार्थ।जबतांईवंधाकर्मउदेउदीरणारूप
होयनपरिणवै।जोंकालतांईरहै।तितनेंकालकोंआबाधाकालकहिये।सोउदेप्रति
आयुविनासातकर्मसंबंधीकोडाकोडिसागरकी।स्थितिकासौवर्षकाआबाधा।
कालहै।इसलेखेंसत्तरकोडाकोडिकीस्थितितांईजाननेंनां।और आयुकर्मका
आबाधाकालतुल्यमानआयुविषेंपूर्वोक्तत्रिभागसेषहै।यहआबाधाकाल
उदेप्रतिकह्या।उदीरणाप्रतिसातकर्मकाआबाधाकालआवलीमात्रहै
।।परभवायुषः।।उदीरणानियमेननास्ति।।परभवसंबंधिआयुकीउदीरणासर्वथा
नहोय।।भावार्थ।।निकाचितविनाआबाधाकालवीतेंउदयागतकर्मकी।
उदीरणाहोतहै।तिसतेंभुज्यमानआयुकाआबाधाकालतुल्यमानआयुका
त्रिभागशेषहै।तिसतेंपरभवसंबंधीआयुकीउदीरणाकैसेंहोय।एतावता

स्यितिकाछेदनिमित्तांतरसोंहोजाय॥यातेंपूर्वोक्तदेवमादिकेंउदेमर्णजान
ना॥नाकीरहैतिनकेंउदैउदीरणामरणादोनोंजानने॥तउक्तंगाथा॥छविदसु
दमाजीवा॥नोगमुवाचरमदेहणिरयेगा॥उदयेपाणविणासा॥सेसाणउदीर
नणिया॥७॥एकऔरभीहैतविचारणा॥उदीरणामरणाजगतमैंनहोय॥तोद
याधर्मोपदेशाविकिस्मात्रमात्रएसवहीव्यर्थऊवेहंहोकोईपूछेआयुकीउदी
णाकौनशास्त्रमेंकहीहै॥उत्तरातत्वार्थहांवंधमादिदशकरणकहेहे॥तहांआ
युविषेसंक्रमणविनानवकरणकहेहे॥तिनमेंउदीरणाभीकहीहै॥औरगो
म्मटसारकेउत्तरार्द्धविषेंभीकहीहैतथाहि॥र्ऋवलियंआवाहाउदिरणमा
सिजसत्तकम्माणं॥परनचियआउगस्सउदीरणाणत्थिणियमेनाई॥उदीर्णआ
श्रसमत्तकर्मणांआवाधावलिमात्रीस्यात्॥उदीरणाप्रतिआयुविनासातक

तीर्थंकर॥ असंख्येयवर्षायुषः॥ कहिये॥ भोगभूमिके तथा कुभोगभूमिके॥
जीव॥ भावार्थ॥ चरमोत्तमदेहवाले तीर्थंकर याते कहे॥ चरमदेहवाले गुरुद
त्तपांडवादि उपसर्गकरि मुक्त भये॥ उत्तमदेहवाले सुभौमचक्री तथा ब्रह्मदत्त
की अकालमृत्यु भई जरत्कुमारके बाणसूं कृष्णको अपमृत्यु भई॥ इत्यादि सक
लचक्री अर्द्धचक्रीनिकै भी अनपवर्त्यायुका नियम नहीं॥ यह कथन न्यायकु
मुदचंद्रोदय नाम शास्त्र है तथा राजवार्तिकालंकार शास्त्र है तहांकी याहि॥ या
ते चरमोत्तमदेह तीर्थंकर ही हैं॥ इस सूत्र विषे पद सिद्धांत कह्या॥ देवनारकी ती
र्थंकर भोगभूमिके जीव इनके विषशास्त्रादिके योगसूं आम्रफलके पाकव
त् आयुकी उदीरणा न होय॥ इन बिना कर्मभूमिके तिर्यंच मनुष्यनिके होय
जैसे प्रदीप तेलसूं नाश होय पवनके योगसूं बुझि जाय॥ तैसे संपूर्ण आयुको

कालके अंत कुलकरों की आयु संख्यात वर्ष की रहै है॥ तिसतें भोगभूमि के मनुष्यति
र्यंच समयाधिक कोटि पूर्व वाले भोगभूमियें जानने॥ कोटि पूर्व वालेक मभूमिये जा
नने॥ यह कथन गोम्मटसार के लब्धिसार में है॥ इहां कोई प्रश्न करै है॥ आयु की घट
ती वधती का कथन जलीनों तिहमारे मन में आवता नहीं॥ तिसका उत्तर॥ इस कथ
न के निर्णय कौं इहां आर्यी सूत्र का फा की का अर्थ विचारणा॥ तथाहि॥ उपपादिक च
रमोत्तमदेहासंख्येय वर्षायुषोऽनपवर्त्त्यायुषः॥ अर्थ॥ एते अनुपवर्त्त्यायुषः संति॥ इ
तने अनपवर्त्त्यायु वाले हैं॥ भावार्थ॥ जिनकी आयु का अपवर्त्तन कहिये फेर फा
या समय समय करि क्रमसौं पूरी होय विषशस्त्रादि के योग करि उपक्र
मसौं पूरी न होय॥ ते अनपवर्त्त्यायु वाले जानने॥ ते कौन॥ अ उपपादिक चरमोत्तमदे
हा असंख्येय वर्षायुषं॥ औपपादिक कहियें देव नारकी चरमोत्तमदेह कहिये

च॰म॰

रीहोजायतिसेसोपक्रमकहिये।तहांप्रथमनिरुपक्रमआयुवालेहैसरानां
कअनपवर्त्यायुवालेदेवतथानारकीतथाभोगभूमिकेतिर्यंचमनुष्यअसंख्यात
अथवासंख्यातवर्षकीआयुवालेऔरचरमोत्तमदेहवालेइनकेआयुकीस्थिति
काहरणक्रमसैंहोयहै।जेसोपक्रमआयुवालेहैसरानांनकदलीघातआयु
वालेकर्मभूमिकेमनुष्यतथातिर्यंचहैं।इनकेआयुकीस्थितिकाहरणक्रम
सैंतथाविषशस्त्रादिकेयोगकरिउपक्रमसैंभीएकहीवारकदलीकांडकी
नांईहोयहै।यहसोपक्रमआयुकीस्थितिपूर्वोक्तआगैअपकर्षनसौंबंधैहै।इ
हांसर्वत्रजीवकेपरिणामोंकाहीहेतजानना॥इहांएकऔरसंदेहउपजै॥उ
परभोगभूमिकेमनुष्यतिर्यंचअसंख्याततथासंख्यातवर्षवालेकहे।तहांअसं
ख्यातवर्षवालेतौहै।संख्यातवर्षवालेकौनकहे।उत्तर।भरतऐरावतमेंतीसर

धकरतेंजीवांकेपरिणामकानिमित्तपाइबध्यमानआयुकीस्थितिघटतीहो
यातिसकोंअपवर्त्तनघातसंज्ञाहै।भुज्यमानआयुकीस्थितिघटजाइ।ति
कदलीघातसंज्ञाहै।प्रश्न।आठकर्मविषैंआयुकर्मकीस्थितिकाकरण
कर्मकैंतदैकिऔरप्रकारहै।समाधान।आयुकर्मकीस्थितिकाकरणसातक
र्मस्थितिकेकरणसौंऔरहीप्रकारहै।सातकर्मकीस्थितिविशुद्धपरिणामके
बलसौंअंतर्मुहूर्त्तविषैंकेईकोडाकोडिसागरोंकीघूटैऐसैंआयुकर्मकी।
स्थितिघटैनहीं।आयुकीजवस्थितिसमयसमयहीकरिपूरीहोय।एकसमयवि
हीसमैंकीघटै।ऐसैंआयुकर्मकाकरणहै।तिसकेजेदोयभएएकक्रम।।ह
माजोआयुकीस्थितिसमयसमयकरिक्रमसौंपूरीहोय।तिसेंउपक्र
नोंनिरुपक्रमकरणकहिये।औरजोक्रमविनाउपक्रमसौंएकहीबारपू

मानतीन व्यवस्था होंहै तेकोंहैसो होहै। यहकहैहै॥ गाथा॥ इगवारंवज्जित्ता वड्ढीहाणी
अवट्ठिदा होदि। उव्वट्टणघादो पुण परिणामवसेण जीवाणं॥ ९०॥ अर्थ॥ अपकर्ष
णमध्ये प्रथमवारं वर्जित्वा॥ पूर्वोक्त आगें अपकर्षन विषें पहलीवार छोडिकै॥ वृद्धिहा
निः अवस्थितिर्वा भवति॥ परभवसंवंधी आयुकी वृद्धिहानितथा अवस्थिति होहै।
भावार्थ॥ प्रथम अपकर्षकी वार जो ऊवआयुकी स्थितिवंधीहोय तिसवि
ना द्वितीयादिवार विषें वध्यमान आयुकी स्थिति वढैतथा घटै अथवा जोंकी सों
भीरहै तहां जो वढैहै सो प्रथमवारकी वंधीस्थितिके लषं वढै। और घटै सो तो इ
सहीतैं घटै॥ पुनः जीवानां परिणामवशेन अपवर्त्तनं अपि भवति॥ वहुरि जी
वोंके परिणामसेंवे करि वध्यमान आयुका कदलीघातवत् अपवर्त्तन भी होहै।
॥ तदेवघातइत्युच्यते॥ तिसहीअपवर्त्तन नामघात कहिये॥ भावार्थ॥ आयुवं

युबंधन होयतै। भुज्यमान आयुके अंतकी आवलीका असंख्यातवां भागबाकी
रहै तहां परभवकी आयुका बंध अवक्तव्य हो है। इसका विशेष व्याख्यान गोम्मट
सारके त्रयोदश विषै है। तथाहि॥ गाथा॥ एकेकं आउ एकभवे वंधमेदि जोग्गपदे॥
अडवारं वा तत्थ तिभागसेसे व सव्वत्थ॥ २० ॥ अर्थ॥ एक जीव एक भव आयुः ए
कभवे योगकाल अष्ट वारं वघाति॥ एक जीव विषैं एक ही आयु एक ही भवमें योग्य
काल न विषैं आठ वार बंधे है। तत्र सर्वत्र अपि त्रिभाग शेष एव॥ तहां सर्वही जागें
त्रिभाग शेष है। भावार्थ॥ एक जीव एक भवकी भुज्यमान आयुमें एक पर भव
धी आयुको आठ वार अपकर्षण करि बांधे। तिन आठ अपकर्ष विषैं त्रिभा
ग शेष सर्वत्र है। भुज्यमान आयुके भाग३ सार परभवकी आयु बंधे है। यातैं इ
नकी अपकर्ष संज्ञा जाननी॥ आगें आठ अपकर्ष विषैं वध्यमान आयुकी बढ्

सोलेयछुद्रजुगलपर्यंतआधआधसागरआयुवंधैअमरकोंनवंधै॥उक्तं॥कु
परघातायुवालेकीउसत्तिनहीं॥८३॥चरचाअवगाणमी॥प्रश्न॥भुज्यमानआयु
केत्रिभागशेषविषैंपरभवकीआयुवंधैहै॥सोकोंकरिवंधैहै॥भावार्थ॥कर्म
भूमिकेमनुष्यतिर्यंचनकीभुज्यमानआयुविषैंआवअपकर्षणहै॥तेपरभ
वकीआयुवंधकोंयोग्यहै॥तिसकाविवरण॥भुज्यमानआयुकेअंसर्६५६१
इतनेंमेंदोयभागवीतेंतीसराभागनाकीतिसकेअंस२१८७तिसकाप्रथम
अंतर्मुहूर्त्तपरभवायुकेवंधकोंयोग्यहैतहांनवंधैतौतिसकातीसराभागवा
कीतिसकाअंस७२९तिस भागकाप्रथमअंतर्मुहूर्त्तवंधयोग्यहैतैसैंही
इक्यासी८१सत्ताईस२७नव९तीन३एक१अंशरातांईजाननां॥एआठअ
पकर्षकहेंवाइनमेंभीवंधकानियमनहीं॥वंधकोंयोग्यहैंजोइनविषैंआ

धिक कही है॥ तथा॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे अधिके। सौधर्म ईसान के जुगल विषैं उ
त्कृष्ट आयु दोय सागर सौं कछु अधिक है॥ इस सूत्र के आगें तीसरे सूत्र के तउ शब्द के
ग्रहणतें यह अधिक शब्द सहस्रार स्वर्ग पर्यंत अधिकारवान जाननां॥ इस तौ
पूर्वोक्त स्वर्गलोक की उत्कृष्ट आयु के कथन विषैं फेरकु वासो किस अपेक्षा सो है॥ सू
त्रान॥ सूत्र विषैं सहस्रार स्वर्ग पर्यंत उत्कृष्ट आयु कह्या प्रमाण सौं अधिक कहै
सो घातायु की अपेक्षा सौं कथन है॥ जो बध्यमान आयु का अपवर्तन होय घटै तिसे घाता
॥ तिस घातायु वाला जीव स्वर्गलोक विषैं समस्त कौं प्राप्त होय तौ तिस दे
वी के अपने कल्प की उत्कृष्ट आयु सौं आध सागर आयु बढै॥ तदुक्तं॥ त्रिलो
कसार मध्ये गाथा॥ सम्मे घादे ऊणं सायर दलमहियमा सहस्सारं जलहि द
ल पडलं पडि जाणहाणि चयं॥ ईहां कोई पूछै॥ सौधर्म ईसान के जुगल

इतनी स्थितिका छेद और होता तौ गतिका छेद होता॥ सो न ही हो है। तदुक्तं स्वामिका
र्त्तिकेय टीकायां श्लोकः॥ दुर्गतावायुषो बंधे सम्यक्त्वं यस्य जायते। गतिछेदो न तस्या
स्ति तथाप्यल्पतरा स्थितिः॥ १६॥ चस्वामात्ताणभी॥ २४॥ निमर्वंडकृत त्रिलोकसार
विषें स्वर्गाकी आयुका वर्णन इस भांति है। सौधर्म ईशान विषें जघन्य आयु एक पल्य
की उत्कृष्ट सागर २॥ सनत्कुमार माहेंद्र विषें सागर ७॥ ब्रह्म ब्रह्मोत्तर में सागर १०
लांतव कापिष्ट में १४॥ शुक्र महाशुक्र में १६॥ सतार सहस्रार में १८॥ आनत प्राणत
में २०॥ आरण अच्युत में २२॥ या तें ऊपर एक एक सागर बढ़ती नव ग्रैवेक अनुत्तर
सर्वार्थसिद्धि पर्यंत ग्यारह स्थान विषें तेतीस सागर जाननी॥ तदुक्तं॥ गाथा॥ सोहम्म
वरं पल्लं वरमुवहि विसत्त दस य चोद्दसं वावीसो ति उवही॥ एक्केक्कं जाव तेतीसा॥ छ
और दशाध्याय सूत्र विषें स्वर्गाकी उत्कृष्ट आयु तें बारह स्वर्ग ताईं कछु अ

काउदाहरणजानना।श्रोरराजाश्रेणिकनेंमुनीश्वरकेकंठविषेंमृतकसर्पडाल्यापति
सकालसातवेंनरककीतेतीससागरप्रमाणआयुबंधीफेरश्रीवीरनाथकेसमवसर
णविषेंक्षायिकसम्यक्तकेबलप्रथमनरकसंबंधचौरासीहजारवर्षकीस्थितिरही
इहप्रसंगावडहरिवंशमेंहैसोजाणणा।श्रेणिकेनतुयत्पूर्वंबद्धमारंभपरिग्रहात्मपरास्थिति
कमारब्धंनारकायुस्तमस्तमे॥३०॥ततुक्षायिकसम्यक्त्वात्स्वस्थितिंप्रथमक्षितौप्राप
वर्षसहस्राणामशीतिंचतुरुत्तरां॥३१॥त्रयस्त्रिंशत्समुद्रायुःक्वबयमपरास्थितिः॥
यहांक्षायिकसम्यक्तकाप्रभावयमनुत्तर॥३॥भुज्यहआयुकेअपकर्षणकाउदाहर
णजानना।इहांकोईतर्कणाकरेश्रेणिकराजानेंनरकायुकीउत्कृष्टस्थितिछेदके
क्षायिकसम्यक्तकेबलसेंचौरासीहजारवर्षकीस्थितिराषीउत्कृष्टस्थितिकीअ
पक्षातोयहस्थितिवक्रतहीअलपरहीइतनीकाछेदकोंनकीयापतिसकाउत्तरअे

जायतौउमतिसकाउपायकरौ॥यवसुनिषदिसारवोला॥तमेराप्राणसमानवंधुहै॥उ
फेश्रेयवचनकहनैंयोग्यहै॥श्रैसेनरककारणश्रहितवचनक्यौंकहैहौ॥मुफैंमरणइ
ष्टहै॥प्रतिज्ञाभंगइष्टनही॥इसभांतिषदिरसाँकानिश्चयदेषियदौकावृत्तांतकह्य
तिनमुनिकैंसमस्तहिंसाकेत्यागरूपश्रावककेव्रतलीया॥देहत्यागकरिसोधर्मकल्प
विषैदेवताऊवा॥सूरवीरतिसकौश्रवसानक्रियाकरिश्रपनैंनगरकौंचला॥मार्ग
मेंवटवृक्षतलैं॥यक्षिणी पूछीमेरामैथुनउम्हारापतिऊवा॥यक्षिणीवोलीसंपूर्णव्रतकेस्वी
कारतैंव्यंतरगतिसौंपराङ्मुषसौंधर्मकल्पकेभोगकाश्रनुभवकरैहै॥मेरापतिक
हांसौंहोय॥व्रतकामाहात्म्यजानिसूरवीरसमाधिगुप्तिकेसमीपश्रावकऊवा॥य
हकथाचामुंडरायकृतचारित्रसारमैंहै॥इसप्रकारषदिरसारभिल्लपतिनेंव्यंतरकौउ
छश्रायुवांधीथी॥फिरसोधर्मस्वर्गमिंदोयसागरकीश्रायुभोगवी॥यहश्रायुकेउत्कर्षए

र्षण अपकर्षण का स्वरूप है॥ इहां कोई कहै हमयों सुना है॥ आयुके वंधकालही
मैं उत्कर्षण अपकर्षण होहै॥ पीछै नहीं॥ तिसका उत्तर॥ पीछैं भी होहै॥ तिसका
हरण॥ एक षदिरसार नाम भीलपति था॥ तिन समाधिगुप्ति साधके उपदे
मांसका त्यागकीया॥ कालांतर रोगऊ वैं वैद्य नैं काकमांस बताया॥ षदिरसारनैं
कही सत्पुरष होय छोडी वस्तु षांऊ नहीं॥ यह सुनि सौरपुर का राजा सूरवीर षदि
रसार का बहनेऊ तिसैं मांस षवावनैं चला॥ मार्गमैं ग्र ... ट वृक्ष तलै व्यंतरी एकयक्षी रु
न करती देषी॥ सूरवीर नैं पूछी तूं कौंन है क्यों रोवै है॥ वह बोली मैं यक्षणी
लकरोग पीडत है॥ काकमांस के नियमसौं मेरा पति होनहार है॥ तूं मांस भोजन
सौं नरकका पात्र करनैं चला है॥ तिसतैं हदन करौं हौं॥ यह सुनि सूरवीर
मांस भक्षन न करांऊगा॥ तब अपनैं सालक कौं देषि कही॥ जो काकमांससौं रोग

८४। चरचा पचासीवीं। प्रश्न। सूक्ष्म बादर निगोद जीवन की आयुप्रमाण क्या है॥
समाधान। नित्य निगोद इतर निगोद सूक्ष्म बादर सब की। आयु अंतर्मुहूर्त्तमात्र है॥
और पृथ्वीकाय जलकाय तेजकाय वायुकाय के जीवों की भी आयु अंतर्मुहूर्त्तमा
त्र है। अंतोमुहुत्तमज्झा। साहारणसव्वसुहुमाणं स्तुकत्वात्॥ ७॥ ८५॥ चरचा पचासीवी
प्रश्न॥ आयु के स्थितिबंध विषें उत्कर्षण अपकर्षण कह्या है। सो किसप्रकार है॥
समाधान। जहां बंधकी स्थिति बढै तिसे उत्कर्षण कहिये। जहां बंधकी स्थिति घटै ति
सको अपकर्षण कहिये॥ कितनही जीवने अपने तीव्र मंद मध्य भावों के अनुसार उ
त्कृष्ट जघन्य मध्य च्यारि गति संबंधी आयु की स्थिति भुज्यमान आयु के त्रिभाग विषें बं
धी होय। बहुरि वही जीव तिस ही कालतथा कालांतर विषें भावांतरसों स्थिति व
ढती करै तिसे उत्कर्षण कहिये। स्थिति घटावै तिसे अपकर्षण कहिये। यह उत्कृ

ताका शरीर ७। नारकी का शरीर ८। ए बादर निगोद रहित जानों। अप्रतिष्ठित प्र(
त्येक जाननें। इनतें बाकी वनस्पतिकाय बेंद्री तेंद्री चौइंद्री पंचेंद्री तिर्यंचनके सरी
र अवशेष मनुष्यनके शरीर बादर निगोद सहित प्रतिष्ठित प्रत्येक जाननें। इहां
कोई कहै। प्रतिष्ठित प्रत्येक बादर निगोद सों आश्रित कह्या सो क्यों। उत्तर। पूर्वो
क्त सूक्ष्म तौ निराधार है। यातें बादर निगोद का आश्रय प्रतिष्ठित प्रत्येक कह्या।।
इस की बादर निगोद शरीर के पूर्वोक्त स्कंधादि पांच भेद है। इन ही के आश्रय प्रतिष्ठि
त प्रत्येक है। सो पूर्वोक्त आवस्था न विना सर्वत्र है। सात नरक के देव कौं कर संत
वै। इहां कोई संदेह करै। वनस्पति नाम थावर कर्म के उदय वनस्पतिकाय में थाव
र जीव उपजे है। मनुष्य तिर्यंच की देह विषें निगोद कह्या यह कौंन से थावर जीव
कौं भेद है। तिसका उत्तर। इनकै जीव वनस्पति नाम थावर कर्म का उदय जानना।

कीकासरीरआधारोंशरीरहैंते॥निगोदशरीरैः॥अप्रतिष्ठिताः॥ ॥वादरनिगोदजी
वनकेशरीरकरिअनाश्रितहैं।तेऐसानिअप्रतिष्ठितशरीराणिभवंति॥ ॥इन
आगैंतेंवाकौंरहैंजेवनस्पतिकायादिकेशरीरतेवादरनिगोदजीवनकेश
रीरकरिआश्रितहैंभावार्थ।वनस्पतिनामथावरकर्मकेउदयजीववनस्प
तिकायमेंउपजेहैंतिसकेभेददोयएकप्रत्येकशरीरहैदूजेसाधारणशरीर
हैं।एकजीवकाएकशरीरसोप्रत्येक।अनेकजीवनकाएकशरीरसोसाधारण
वहुरिप्रत्येककेदोयभेदहैं॥एकप्रतिष्ठितप्रत्येकहूसाअप्रतिष्ठितप्रत्येक
वादरनिगोदकरिआश्रितहोयतिसैंप्रतिष्ठितप्रत्येककहिये॥वादरनिगोद
करिआश्रितनहोयतिसैंअप्रतिष्ठितप्रत्येककहिये॥तहांपृथ्वीकाय१जल
काय२तेजकाय३वायुकाय४केवलीकाशरीर५आहारकशरीर६देव

चगोलकषंधर ५त्रंडर ५५आवास ३ पुलवि ५सेहविपासाननरककेदेवमुने
होतेक्योंकरहेक्यास्वरूपहे॥समाधान॥एनिगोदकेपांचगोलकहेतेवादरनि
गोदसंबंधीशरीरकेभेदहे॥इनकेआश्रयवादरनिगोदरहेहे॥सूक्ष्मनिगोद
निराधाररहे॥सोसर्वत्रजानना॥ऐसालोककापदेशकोईनहीजि
निगोदनपाइये॥सव्वणिरंतरा॥सुहुमाउतिक्खनात्त॥।
नकुहे॥वादरनिगोदसोआगमांगेनही॥औरसर्वत्रहे॥तउक्तंगोमट्टसारगा॥
पुढवीआदिचउण्हां॥केवलआहारदेवणिरयंगा॥अपदिट्ठिदाणिगोयहि॥
पदिट्ठिदंगा।हवेससा॥१॥अर्थ॥प्रथिवी॥चतुर्विधजीवांगानि॥ ॥पृथ्वीकायअ
पकायवातकायइनच्यारोंप्रकारकेजीवनकीदेहहेतो॥अकेवल्याहारदेव
नारकांगानि॥ ॥वकेवलीकाशरीरआहारकशरीरदेवकाशरीर

ग॰स॰
८७

डीकहियो।इसकेघ्राणसोंपंचेंद्रीकोहिंसाहोइ।ऐसेंअपर्याप्तकालविषेंसवकेस
नघ्राणसंबंधीकर्मकाउदैपाइये।इसअपेक्षासातप्राणकहे।फेरपूछी।जातिकी
अपेक्षासंअलब्धकेसातप्राणकहेतोजातिमैंतोअलब्धमनुष्यसैनहीं।मनु
ष्यजातिअसैनीहोयनहीं।तिसकेमनप्राणकानिषेधकाहेकोकीया।तिस
काउत्तर।ऊपरकह्या।अपर्याप्तकालमेंसातहीप्राणकाउदैहै।तीनकानहीं
यहीतैंजाननां॥छ॥९६॥चरचात्रिणवमी।पृश्न॥ अलब्धपर्याप्तमनुष्यकहांक
हांउपजैहै।समाधान। चक्रवर्त्तिकीपट्टराणीविनाकर्मभूमिकीस्त्रीनकेयो
निकाषस्तनमूलविषेंअतिसूक्ष्मसंमूर्छिममनुष्यनिरंतरउपजैहै।औरमलमू
त्रसिनकषषारादिअशुचिस्थानविषेंभीउपजैहै।यहकथनगोम्मटसारके
जीवसमासाधिकारमेंजाननां॥छ॥९७॥चरचाचौराणवमी।पृश्न॥निगोदकेपां

प्राण हैं॥ चौइंद्रीकैं नेत्रसमेत आठ प्राण हैं॥ असैंनी पंचेंद्रीकैं कानसमेत नव
प्राण हैं सैंनी पंचेंद्रीकैं मनसमेत दशप्राण हैं॥ और अपर्याप्त अलब्धपर्याप्त
एकेंद्रीकैं सासोस्वास बिना पूर्वोक्ति तीन प्राण हैं॥ बेइंद्रीकैं सासोस्वास भाषा वि
नां षट् प्राण हैं॥ पंचेंद्रीसैंनी तथा असैंनीकैं सासोस्वास भाषा मन इन तीनों (
विनां सात प्राण हैं॥ इहां कोइ संदेह करै॥ अलब्धपर्याप्त संमूर्छन मनुष्य
कैं धुनी सुनें हैं॥ इहां सात प्राण क्यों कहे॥ तिसका उत्तर॥ सासोस्वास॥ भाषा॥ मन॥
इन तीनोंप्राणका उदै अपर्याप्तकालमें नहीं॥ यातें सात ही कहे॥ इहां नीएक संदेह
रहा॥ अलब्ध नें तो कोई भी पर्याप्ति पूरी करी नहीं॥ तिसकें [illegible] सात प्राण किस अपे
क्षां कहे॥ तिसका उत्तर॥ जातिकी अपेक्षासौं कहे॥ जैसें कोई पंचेंद्री जीव गर्भ विषैं
उपज्या है॥ अंतर्मुहूर्त तांई तो उसकै कोई इंद्री नहीं परंतु जातिकी अपेक्षा

पर्याप्तनामकर्महैताकेउदैहोहै॥ कोहहै॥ जोजीवपर्याप्तहोतोहैसोजवतांई शरीरपर्या
प्तिपूरीनकरैतिसैतवतांईअपर्याप्तकहिये॥ यात्तूविषैइसैनिवृत्त्यपुर्याप्तसंज्ञा
है॥ निवृत्तिकहियेशरीरकीनिष्पत्तिताकरिअपर्याप्तकहियेअपूर्णहै॥ यहक
थनगोम्मटसारोक्तजाननां॥ ८॥ १॥ चस्वावांणमी॥ उक्तापर्याप्तिविषैंओरप्राणवि
षैंक्यांभेदहै॥ समाधान॥ प्राणकेदशभेदहैं॥ इंद्रियप्राण॥ ५॥ मनोबल॥ १॥ वचन
बल॥ १॥ कायबल॥ १॥ सासोस्वास॥ १॥ आयु॥ १॥ एवं॥ १०॥ इनप्राणोंविषैंओरपूर्वोक्तप
र्याप्तिविषैंयहभेदहै॥ पर्याप्तियोगपशक्तिकीउत्पत्तिकोंपर्याप्तिकहिये॥ तिन
हीपर्याप्तिकीपरिणतिकोंप्राणसंज्ञाहै॥ शक्तिरूपपर्याप्ति॥ व्यक्तिरूपप्राण॥ ति
नमेंएकेंद्रीपर्याप्तकेंचारप्राणहैं॥ स्पर्शनेंद्री॥ १॥ कायबल॥ १॥ सासोस्वास॥ १॥ आ
यु॥ १॥ बेइंद्रीकेंजीभवचनसमेतछहप्राणहैं॥ तेइंद्रीकेनासिकासमेतसात

कीअपेक्षाएआत्मांगुलहै।अपेक्षाविनाप्रमाणांगुलजानेना।उत्सेधांगुलन
।इहांअबयहसंदेहपचीसअंकअंगुलमात्रदेहविषैंउनतीसअंकप्रमाणमनु
कोंकरसमाये।समाधान।।पचीसअंकप्रमाणअंगुलसौंउनतीसअंकप्रमाणम
वातगुणेक्षेत्रसवसमाये।औरघणाक्षेत्रखालीरहा।यहआकाशकासंबंधीअव
नशक्तिकीविचित्रताहै।संदेहनकरणा।यहकथनगोम्मटसारकेजीवकांड
केअधिकारविषैंदेषना।।३।।९०।।चरचाइक्याणवी।।प्रश्न।।पर्याप्तअपर्याप्त
क्या।।समाधान।।पर्याप्तकेबहुतभेदहैं।।आहार१शरीर२इंद्रिय३सासोस्वास
पमन६इनछहोंपर्याप्तिविषैंपर्याप्तनामकर्मकेउदयएकेंद्रियादिजीवसुयोगपप
पूरीकरै।अपर्याप्तनामकर्मकेउदयलब्धपर्याप्ताहोयएकपर्याप्तिभीपूरीनकरै
इकेहैतोसराभेदअपर्याप्ताकिसकर्मकेउदयहोतहै।।तिसकाउत्तर।।अपर्याप्तजीप

जायतैसीकहनावतिहै।सो क्योंकारहै।समाधान॥पुष्करार्द्धद्वीपकेमध्यमानुषोत्त
रनामपर्वतहै।तिसकेपरैंमनुष्यनहीजाइ॥विद्याधरतथाऋद्धिधारीसाधुभीनजाय
याहीतैंपर्वतकानाममानुषोत्तरहै।मनुष्योंकेपरैंहै।मनुष्यउरैंहै॥प्राग्मानुषोत्त
रान्मनुष्याः।इतिसूत्रात्॥तातैंअढाईद्वीपकेबाहरिमनुष्यनजांहि।यहनियमहै
मनुष्यकावालनजाय।यहकहनावतिहै।शास्त्रोक्तनहीं।अरसंदेहयहतोतीर्थंक
रकेवालक्योंगाये॥७॥ ८८ चरचानवेमी॥अढाईद्वीपविषैंउनतीसअंकप्रमा
णमनुष्यकहैहैं।तिनमैंतीनचारभागऊनस्त्रीहै॥तिसअढाईद्वीपकाविस्तारपैं
तालीसलाखयोजनप्रमाणगोलहै॥तिसकीपरिधिएककोडिवयालीसलाखती
सहजारदोयसैउनंचासयोजनएककोससत्रहसैछ्यासठधनुषपंचांगुलमात्रहै
तिसक्षेत्रकेअंगुलपच्चीसअंकप्रमाणफलहै॥विदेहादिक्षेत्रतणाचतुर्थका

रंनंदिमुनिना॥नारकाणांखरःकायो॥स्पष्टतात्तिन्नविक्रियः॥करान्तःकालोऽर्ग्र
धा॥इत्येतम्भूक्त्तेतः॥८७॥चरचाअठासिमी॥प्रश्न॥देवताकौदेहधातुवर्जित
हैतिनदेवतानकैंमनुष्यनकासास्त्रीपुरुषसंबंधभोगव्यवहारहै॥तिनकैंरति
अवसानक्योंकरिहोहै॥समाधान॥जैसैंमनुष्यतिर्यंचनकेंवेदकीउदीरणा
दोयकारणहैएकतोचित्तकारणहै॥दूजावीर्यनामधातुकारणहै॥तैसेंदेव
तानकेंनहीं॥उनकेंशीतन्नसादिकाकारणपाइचित्तहीसोंवेदकीउदीरणाहो
है॥चित्तहीसोंमिटैहै॥ऐसेंत्रिलोकप्रज्ञप्तिविषैंकह्याहै॥तथाहि॥असुरादीभव
सुरा॥स्ववेतकंतिकायपडिचारा॥वेदस्सुदीरणाये॥अणुभवणंमाणुससमाना॥ध
धाउविहीणंतादो॥रदविणिगामणमच्छिणकुताणं॥संकप्पसुहंजायदि
॥विगमि॥८८॥चरचानवासीमी॥प्रश्न॥अढाईद्वीपकेबाहिरमनुष्यकाबालक

श्चरादिकेउत्सवविषैपृथक्विक्रियाकौदेहसोंजाहैमूलसरीरअपनें।।स्थानरहैसो
कहाचेष्टाकरैं।।समाधान।।विषयसेवनादिरूपचेष्टानकरैं।।योग्यचेष्टाकरैं।।तउक्तंत्रै
लोक्यप्रज्ञप्तौ।।जम्मावयारपऊदिसुउत्तरदेहासुराणगच्छंति।।जम्मणठाणेसुउहंमू
लशरीराणिचिट्ठंति।।१२।।चस्त्वारिस्तासिमी।।प्रश्न।।उपरलिषादेवताप्रथक्विक्रिया
कौदेहकरिदेसांतरविषैंजाहैं।।सोपृथक्विक्रियाकहाकहावै।।समाधान।।पृथक
कहियेंऔरजुदीदेहरूपविक्रियाकरनेंकौंदेवतासामर्थहै।।जैसीदेहतथाअप
नेंपुन्यांनुसारजितनीदेहधराचाहेंतितनीधरें।।इसप्रकारनारकीपृथक्विक्रि
याकरसकैंनहीं।।अपनेंसरीरहीविषैंअशुभाकारविक्रियाकरैं।।यातेंनारकीनकैं
अपृथक्विक्रियाजाननी।।उक्तंचआदिपुराणे।।अपृथग्विक्रियास्तेषा।।मस्त
नाद्युरितोदयात्।।ततोविकृतवीभत्सविरूपात्मैवसामता।।आचारसारेप्युक्तं

यसोंदेवतांतरकोपूजाकैरतवसम्यक्त्वजाय॥जेनान्मायकीपूजाविषेंसम्यक्त
नजाय॥यांकाकांछारूपअतिचारलागे॥कोईपूछेकलिकुंडदंडकाअर्थक्या॥त
हां॥कलिद्रावंनेकेंशेघस्तस्यकुंड:सम्यक्‌:॥तद्यातनेमत्वादंड:पार्श्वनाथस्तो
रित:॥७०॥चरचापचासिमी॥प्रश्न॥अष्टाह्निकपर्वकेअवसरदेवतानंदीस्वरदी
पविषैंजांहै॥तेआठदिनताईंउहांहीरहैंहैं किनिन्रजांहैं॥समाधान॥कातीफागु
ल्गुनआसाढकेमहीनैंउजालीअष्टमीतैंजांहैं॥दोयदोयपहरच्यारोंदिसांमेंनिरंत
रपूजाकरैं॥ऐसेंआठोंदिननंदीस्वरदीपविषैंवितावैं॥उक्तंचत्रिलोकसारमध्येप
डिवरसंआसाढतहकित्तिगफागुणेयअट्ठमिदो॥पुव्वण्हेणित्तियनिरंकंदोदोय
पहरेसमुरसहि॥९७॥सोहम्मोईसाणोचमरोवैरोयणोपदरिकणदो॥पुव्वपरद
रिकणुत्तरदिसासुकुंव्वंतिकल्लाणं॥९८॥७१॥चरचाइक्कावनमी॥प्रश्न॥देवतानंदी

कीपूजासें विघ्नजाते रहे हैं॥ तो पूजावालोंकें विघ्न कों उपजें हैं॥ तिसका उत्तर॥ य
थावत् प्रतीतपूर्वक नीलवान पुरुष आराधन करै तो सर्वथा विघ्न मिटैं॥ और ज
निकाचित्त बंधका फल न मिटै तो कलिकुंडदंडकी शक्तिहीन न कहिये॥ जा
तें निकाचित्त बंधका फल भोगे बिना जाय नहीं॥ ऐसा नियम है॥ जैसें सीताजीनि
दुःख पावके नयसों अनेक पूजा प्रनाना रूप आंत कर्म कीनें॥ परंतु निकाचित्त बं
धका फल मिटा नहीं॥ तो पूजा निष्फल न कहिये॥ इहां कोई फेर कहै॥ विघ्नके भ
यसों कलिकुंडदंडकी पूजा कीयें मिथ्यात्वका दोष लागे कि नहीं॥ तिसका उत्तर
कलिकुंडदंड नाम पार्श्वनाथसंबंधी यंत्रका है॥ सो पार्श्वनाथसंबंधी यह जान
ना॥ फेर बोला॥ जब विघ्नका भय माना तब सम्यक्त्वका निश्चैं कित और ग कवां र
हा॥ जब निश्चैं कित और गया तब सम्यक्त्व कहां रहा॥ तिसका उत्तर॥ विघ्नके भ

मैसों कहै है॥ मध्याह्निक उत्तम पुष्पनि सों है॥ अपराह्निक दीप धूप सों है॥ अनुके
वामांग धूप खेइये दाहिने अंग दीप धरिये॥ इस प्रकार त्रिकाल पूजा की विधि है॥ गृ
हस्थ के आरम्भादिक आरंभ आवश्यक है॥ तहां यत्न करतें त्रस का घात बचै है॥
थावर की हिंसा का बचाव सर्वथा नहीं पलै है॥ तिस दोष के उतारने को
इ कर्म विषै प्रथम देवपूजन है॥ तहां अरुचि कोयं गृहस्थ क्रिया का दोष
उतेरी॥ यह जानि अष्टप्रकारी पूजा के आरंभ विषै दोष नहीं जाननां॥ यत्न सों
करनी॥ ८३॥ चरचा चौरासिमी॥ प्रश्न॥ कलिकुंड दंड को पूजा का कहा स्वरूप है॥ स
माधान॥ ह्रूं कार ब्रह्मरूप॥ इत्यादि बीजाक्षरमयी पार्श्वनाथ संबंधी यंत्र है।
कलिकुंडदंड संज्ञा है॥ तिसकी पूजा का प्रश्न जो है॥ गृहस्थ को कोई आतिकातपस
उपजा होय तौ तिसके विनाश का कारण है॥ कहा कोइ कहै॥ जो कलिकुंड दंड।

द्रु०स०
८२

तहांनासिकामेंसुवासक्रमाचेहैकिनहीं॥छ॥७॥वस्त्रातियासिमं॥उग्न॥ ॥पूजामें
समयदीपजोयकेंचढावनेंयोग्यहैकिनहीं॥समाधान॥अष्टप्रकारीपूजाअनादि
निधनहै॥दीपजोवनेंकानिषेधकेसंकरसकेहै॥ऐसाकहींकह्यानहीं॥चोथका
लमेंआवश्यसेंपूजाकीजेपांचुवेंकालमेंसातसोंकीजे॥तिसतयत्नपूर्वकसा
नकेतथाछ्पकेटकनीसमेतदीपककीआरतीकरायये॥तहांकपूरकीवाती
तथाघृतसेंजोयप्रभुकेआगेंचढाइये॥वडपुन्यकाकारणहै॥तदुक्तंश्रीयोगीन्द्र
देवें॥ दीवइदिणाइजिणवरहं।मोहहंहोइणनाइ।अहतुववासइसोहिणिहिं॥
सोयविपलयहंजाइ॥छ॥पद्मनंदिमुनिनाप्युक्तं॥ ॥आरातिकंतरलवह्निशि
खंविभाति॥स्वच्छेजिनस्यवपुषिप्रतिबिंबितंयत्॥ध्यानानलोमृगयमाणइवावशि
ष्टं॥दग्धुंपरिभ्रमतिकर्मचयंप्रचंडं॥औरत्रिकालपूजामेंपूर्वोक्तिकपूजाअष्टद्र

बहरो॥३४॥गमहत्तुपायणासियकम्मतुरंगुलविहीणहिंगी॥जो निव्वुत्तरकमूलो॥सु
जाहाण॥इह बहरो॥३४॥खवयउकविमूलमूलायिनयंदरज्जलोयरक्कसरो॥सीडुएहव
सराय्या॥पूजादाणंतरायकम्मफलो॥३४॥जहां कोई संदेह करै॥ ।देवपूजनविषैतो
फलपुष्पादिवस्तुसकचढैहै॥ऊपरनैवेद्यहीकाग्रहणकरांकीया॥तिसकाउत्तर
नैवेद्यआदिककीरूढितापंचकालमहीमैहै॥ओरजोवस्तुदेवताकैनिमित्तनिवेदन
कीजैतिससवहीकोनैवेद्यकहियै॥निवेद्यतैलिनैवेद्य॥करकोईओरनीपूछै॥ देव
चढीवस्तुषायेतोअंतरायकर्मकाआश्रवकहोई॥ओरदेवचढीगंधमालादिकाना
सिकासेंग्रहणहोहै॥तिसकाक्यादोष॥उत्तर॥देवचढीगंधमाल्यादिकीसुगंध
सूंघनेकेअभिप्रायसेंग्रहैतौदोषहै॥असातावेदनीकाआश्रवहोइसमंध्य
तामेंदोषनहीं॥समवसरणादिमेंदेवताअनेकसुगंधसामग्रीसेंपूजाकरैहै॥

ऋरादिवकेनैवेद्यभक्षणकीसाषितो॥विघ्नकरणमंतरायस्य॥इससूत्रकेविवरणवि
षेहै॥तथाश्रमक्तंवंद्रकततत्वार्थसारनामसूत्रकीवृत्तिहैतहांहै॥तं०तपस्विगुरुचै
त्यानांपूजालोपप्रवर्त्तनं॥क्रनाथदीनकृपणनिद्रादिप्रतिषेधनं॥५३॥वधबंध
निरोधश्चनासिकाछेदकीर्त्तनं॥प्रमादाद्देवतादत्तनैवेद्यग्रहणंतथा॥५४॥नि
रवद्योपकरणपरित्यागोवधोंगिनां॥दानभोगोपभोगादिप्रत्यूहकरणंतथा॥५५
ज्ञानस्यप्रतिषेधश्चधर्मविघ्नकृतिस्तथा॥इत्येवमंतरायस्यभवंत्यास्त्रवहेतवः
५६॥इसकथनमेंदेवद्रव्यनैवेद्यभक्षणकाफलकह्या॥ऐसेदेवधनकेग्रहणका
फलकुंदकुंदाचार्यकृतरयणसारविषेकह्याहै॥तथाहि॥जिणुद्धारपइट्ठाजिण
पूजातित्थवंदणविसयधणं॥जोभुंजइसोभुंजइजिणदिट्ठंणरयगइदुक्खं॥३४॥पुत्त
कलत्तविदूरोदारिद्दोपंगमूकवहिरंधो॥चंडालादिकुजादोपूजादाणाइद

सको॥भावार्थः॥स्वामीकेआगेंदासकातेजहोतानहीपीछेंहोहे॥संस्कारकरिकेजोफ
लपुष्पादिधरेंपीछेंसोमाहोहै॥औरकैसाहैदासनिर्माल्यकाहिस्करियेनिर्माल्यका
धारणकरैहै॥भावार्थः॥स्वामीजिसकाभोगकरचुकाहोयतिसेग्रहैहैसंस्कारकूर
जोदेवताकानिर्माल्यग्रहैहै॥इसप्रकारदृष्टांतविषैनिर्माल्यधरनेकेउपाइकीसू
नाहै॥संभवैतोभ्रधानकरना॥इहांश्रवकोईपूछै॥ जोकोईनिर्माल्यग्रहणकरैतौ
क्याहोयहै॥तिसकाउत्तर॥निर्माल्यकेभेदहोयएकदेवद्रव्य॥दूजादेवधन॥जो
वस्त्रआदिवस्तुदेवताकेनिमित्तनिवेदनकरियेसमर्पणकरियेचढाईयेतिसैदे
द्रव्यकहिये॥औरपूजाचैत्यालयआदिकाद्रव्यहोयतिसैंदेवधनकहिये॥तिनमें
देवद्रव्यकीवस्तुखाइतिसकेअंतरायकर्मकाबंधहोय॥औरजोदेवधनका
कारकरैसोनरकजाइ॥इहांकोईपूछै॥इहबातकौनसेशास्त्रमैंकहीहै॥ति

तिसीतांकोंवनमेंछोडनगयाहै॥नहांकुशीहोअरुअपनेंदासपदकीनिंदाक
रैहैतिसजागेदृष्टांतकरिसंस्कारकूटआयाहै॥सोदेवालयविषेंनिर्माल्यधरदे
नेकीगेरहै।इसहीकोंश्वेतांबराम्नायमेंनिर्माल्यकूटकहेहैं॥तद्वथा॥संस्का
रकूटकस्येव।पश्चा।निर्वर्त्ततेजसः॥निर्माल्यवाहिनो।धिग्धिग्॥अन्यनाम्नासु
धारणं॥अर्थः॥अस्यनाम्नःअसुधारणंधिग्धिग्॥अस्यअर्थः॥कहियेदासकेन
मजिसका।तिसकोंअसुधारणं।कहियेप्राणधारणाताहै॥धिग्धिग्॥कहिये
धिग्धिगहै॥कोनकीनांई॥संस्कारकूटकस्यइव॥संस्कारकूटकीनांईनावा
र्थ।देवालयसंबंधीएकनिर्माल्यधरनेंकास्थलनहोवैहै॥तिसेंसंस्कारकूटसं
ज्ञाहै।तिसकीनांईदासकाजीवनहै॥तिसेंधिक्कारहोगकेसोहैदास॥पश्चा
त्निर्वर्त्ततेजसःपश्चात्॥कहियेपाछेंनिर्वर्त्ततेजसःकहियेप्राप्तहैतेजजि

ढिके चढाइयहै। ऐसें तौ निर्माल्य का चढावनां कह्या॥ बडा दोष उपजै।
तैसें जैसें आपके हौ है तैसें क्यों करसें नैवेद्यादि देव कों चढै सो निर्माल्य है॥ ऋ
धरा निर्माल्य न हौ॥ १०॥ कोई पूछै देव चढा सो निर्माल्य कह्या फेर ऐसें क्या करे॥
तिसका उत्तर। जो वस्तु देव कों चढाई तिस वस्तु सें चढावनवाले का कुछ भी प्र
योजन रहा न हौ॥ जैसें किस ही पर वस्तु विषें ममत्व न हौ॥ तैसें देव चढी वस्तु सों
कुछ ममत्व हौ॥ अथवा जैसें फल कों ही किसान उत्तम षेत में बीज बावे है॥ फि
र उसका बीज सों कुछ प्रयोजन न हौ॥ फल सो प्रयोजन है
प्रयोजन न हौ॥ तो इसें किस ही कों देय तो ममत्व आया राषे तो ममत्व आया।
॥ ऐसा इकिस ही जिनशास्त्र विषें प्रगटरूप करि जाना गया नहीं
पुराण विषें एक प्रसंग है जहां रामजी की आज्ञा सों कृतांतमुष नाम सेनाप

स्त्री पूजा करै यह तौ हम नैं सुनी है। पर अभिषेक न करै। समाधान॥ पूजा तौ अ
भिषेक बिना होय नहीं। यह नियम है। कि परमैं नासुंदरी नैं अभिषेक न कीना है।
तौ गंधोदक कहां सौं लाई। तथा स्त्री कै स्पर्श का कुछ ऐसा दोष होता तौ। स्त्री
का कीया तथा स्त्री कै हाथ सौं आहार साधु काहे कौं लेते। तिस तैं उत्तम पति
व्रता गुणवती स्त्रीन कौं पूजा का निषेध नहीं॥ ७४॥ चरचा वैयालीसमी॥ प्रश्न॥ निर्मा
ल्य किसै कहिये। समाधान॥ देव कौं मंत्र पूर्वक जिस वस्तु का समर्पण कीजै प
तिसैं निर्माल्य कहिये। देव चढा निर्माल्य॥ यह कहना बातिमैं ना कहै है। उ
हां कोई न करै। हम तौ यौं जानैं हैं। देव कै आगै धरा सो निर्माल्य कु वा चढा
वनं तौ ईक्या है। तिस का उत्तर। [illegible] जो देव कै आगै धरा सो निर्मा
ल हैं। सो तौ प्रथम पूजन सामग्री देव कै आगै धरियै पीछै मंत्र प

कलगाया॥यह कथा प्रसिद्ध है॥तथा जंजनादेवी के भवांतर विषें विजया
र्द्धपे अरुण नाम नगर तहां श्रीकंठ राजा तिनकें पट्टराणी कनकोदरी॥दूसरी
लक्ष्मीमती॥सो परम धर्मात्मा॥मंदिर विषें प्रतिमा की थापना करि जिनयक्त
क्ति सों पूजा करै॥ एक दिन कनकोदरी अपने पट्टराणी पद के अभिमान
सों अरु सपत्नी भाव सों॥लक्ष्मीमती राणी की प्रतिमा मंदिर के स्थान सों बाह
निकासि धरी संयम श्री नाम अर्जिका के उपदेस सों प्रतिमा यथास्थान
हाथ आनं दे सों आप पूजा करी॥यथाशक्ति तप करि समाधिमरण
कीया॥तहां सों आइ राजा महेंद्र कें अंजना नाम पुत्री हुई कनकोदरी के
नमें कितेक काल प्रतिमा को अनादर रह्या॥तिसही कारण सों इस जन्म विषें पा
सों विछोहा हा कुवा॥यह प्रसंग बडे पद्मपुराण विषें जानना॥इहां कोई कहै॥

वीसीकीस्तुतिविषैंनमस्कारकीजैहै।। यातैंतीर्थंकरसदाकालपूज्यहै।।७४।।अबच
चाङक्यासीसो।।प्रश्न।।स्त्रीकोपूजाकरनेंकाअधिकारहैकिनहीं।।समाधान।।किस
हीकथापुराणमेंस्त्रीकोपूजाकानिषेधतौआयानहीं।।पूजाकरनेंकाप्रसंगतौके
ईजागेआयाहै।।प्रथमवाणांसीविषैंराजाअकंपनकीसुलोचनानामपुत्रीति
नअष्टाह्निकपूजाकरिपिताकौ [illegible] आइआसिषादीनी।।राजानेंअंजलीक
रिमार्थ्यधरीयहकथामहापुराणविषैंहै।।तथाहि।।विधायाष्टाह्निकींपूजां।।म
मर्चार्च्ययथाविधिकृतोपवासातन्वंगी।।शेषांदातुमुपागता।।७।।नृपंसिंहास
नासीनं।।सोप्युत्थायकृतांजलिः।।तद्दत्तंशेषमादाय।।निधायशिरसिस्वयं।।७।।
उपवासपरिश्रांता।।पुत्रिकेत्वंप्रयाहिते।।ताराणंपारणाकाल।।इतिकन्यावि
सर्जयत्।।७३।।बहुरिमैंनासुंदरीनेंपूजाकरिकरिश्रीपालकीदेहकेंगंधोद

कीजे है। फिर गंधोदक सोंक वाइये आगें और विधि है अैसें गंधोदक का ग्रहण घनी
जोग है॥ और अयोग्य है ना तो महापुराण विषें काहे कों कहते॥ ७०॥ चरचा उ
नासमी॥ प्रश्न॥ ऊपर अरहंत के दसो कया कहा वें॥ समाधान॥ पूजा करें ते अरहंत
विना चढवा की रहें॥ तिन कों अरहंत संज्ञा है॥ तथा आसिधाक होप
त्रमानि माथ्य धरनें योग्य है॥ उक्तं च॥ महापुराणे सक्राति क्रियायां॥ लंनर्यं सुचि
जिनीप्सु भेत थाहृते॥ स्थितीकरणमेतस्थि धर्मप्रोत्साहनं परं॥ ७१॥
अस्समी॥ प्रश्न॥ प्रतिमा जो कि अतिशय समय दर्शन पूजा मकरण योग्य
है कि नहीं॥ समाधान॥ अैसा है अकाल कोई नहीं॥ जहां तीर्थंकर को प्रणाम न कर्के
जे॥ तीर्थंकर प्रभु के नाम थापना द्रव्य भाव चारों निक्षेप पूज्य है॥ तहां द्रव्य क
रि श्रेणिक राजा नरक विषें है महापद्म प्रथम तीर्थंकर होनहार है॥ नं

कलेनांयोग्यहेकिनांही॥समभाता॥भगवानकाअभिषेकजलइंद्रादिकरिभूज
हे॥अत्यंतविनयभक्तिसोंलेनांयोग्यहे तदुक्तं॥निर्मलंनिर्मलीकरणंपवित्रंपापना
शनं॥जिनगंधोदकंवंदेकर्माष्टकनिवारकं॥१॥अन्यत्राप्युक्तं॥नाडीपत्रपत्तिद
स्तमामयपरीक्षार्थंगृहीताभिषक्॥सद्धाराजवंतीततःकुचयुगंसंद्रष्टुंकिमिछ
त्यहो॥दिवसार्चनसारवस्तुनिचयात्गंधांबुपुष्पत्रयं॥यातंश्रोपमत्रोपवल्लनु
सहित॥गंधोदककेप्रभावसोंराजाश्रीपालकौकुष्टव्याधिग
चित्तंयाह्यत्रिरस्तुयं॥ ॥गंधोदककेप्रभावसोंराजाश्रीपालकौकुष्टव्याधिग
ई॥अयोग्यहोतातौमोक्षगामीजीवकेंलगावते॥औरमहापुराणविषेंगर्भा
धानप्रमुषएकसौआठक्रियाकहीहैं॥तिनमेंएकबालककेबालउतरावने
कीकेशवापनइसनामचौलक्रियाहै॥सोगुरुपूजापूर्वककहीहै॥तहांबाल
ककेमस्तकपेशेषाक्षतंधरिकैंगंधोदकसोंकेशआलेकरिचोटीराषिमुंडन

पूजा तिसके पीछे और नैमित्तक पूजा कीजे॥ तद्यथा॥ जिनेंद्र सिद्धांत यतीन्
तथायि पूजां जिननाथ शास्त्र यमिनां॥ इत्यादि॥ जिनेन्द्र भक्तिः जिनेन्द्र भक्ति श्रु
:श्रुत भक्तिः॥ गुरोः भक्तिः इत्यादि॥ उंकार बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः॥ का
मदं मोक्षदं चैव उंकाराय नो नमः॥ अविरल शब्द घनोघ प्रक्षालित समस्त भूत
लंका॥ मुनिभिरुपासित तीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितं॥ अज्ञान तिमिरांधा
नां ज्ञानांजन शलाकया॥ चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥ ठ्छ
मुणिवर हं भत्ति ए पुण एह वस॥ इत्यादि अनेक जो गेय तीक महे॥ और सर्व
स्त्र की विनय भक्ति करे है॥ यातें देवपूजा के पीछे श्रुतभक्ति योग्य है।
उक्तं च यशस्तिलके॥ स्नपनं पूजनं स्तोत्रं जपो ध्यानं श्रुतस्तवः॥ षोढा क्रिया।
नासाक्षि: देव सेवासु गेहिनां॥ च स्वात्म वहन्नरमी॥ उच्या॥ भगवान का गंधोद

बंडी नरोगीना विनीतक ॥ ४५ ॥ इत्यादि जिनपूजकके लक्षण जिनसंहिताविषें कहे
हें ॥ इहां कोई आशंका करें। देवपूजनविषें वामनपुरुषदोषीहोहै। यातें मनें
कीया। दीर्घकों मनें कीया। तिसका उत्तर ॥ अतिदीर्घपुरुष अवसरूपहोहै। यातें
मनें कीया ॥ ४७ ॥ चर्चा छिहत्तरमी ॥ प्रश्न। पूजाके समय पूजकपुरुषकों नदिशा
रहै। समाधान ॥ प्रतिमापूर्वमुषी होय तो आप उत्तरमुष रहै। उत्तरमुषी प्रतिमा होय
तो आप पूर्वमुषी रहै। उक्तंच। यशास्तिलकनाम्निकाबोश्लोकः ॥ उदङ्मुखं स्व
यं तिष्ठेत्प्राङ्मुखं स्थापयेज्जिनं। पूजाक्षणे भवेन्नित्यं यमी वाचंयमक्रियः ॥ ४८ ॥ अन
त्राणं। स्नानं पूर्वमुखीभूय प्रतीच्यां दंतधावनं। उदीच्यां श्वेतवस्त्राणि पूजा पू
र्वोत्तरामुखी ॥ ४९ ॥ देवपूजाके अनंतर सास्त्रकी पूजा कीजे कि गुरुकी कीजे ॥ स
माधान। प्रथमें देवपूजा तिसके अनंतर सरस्वतीकी पूजा तिसके आनंतर गुरुकी

अरजे सन मुख उ-त्तर दिक्करि पूजा करि है ए ही मा ग्या तकाल दास हैं ए इ बात कहि वैं सा स्त्र मैं आइ नही। ९ मन उत्कृष्ट करि | हे नो ए माध्य
[illegible]

ऊंचीउत्तमएकांतजागेंहोयतहांग्यारहअंगुलताईकीप्रतिमापूजेएकशास्त्रविषें
वारहेअंगुलनीकहीहै। वढतीविंवहोयतोदेहुरैंपधरापै।अथसप्याआगारनंगहे
।।तदुक्तंप्रतिष्ठाशास्त्रे।।आरभ्यैकांगुलाद्विंवं।।यावदेकादशांगुलं।गृहेषुपूजयेय
द्विवांकुर्ध्वंशसादकेषुन।।७४।।चरचापवहहत्तरमी।।प्रत्यादेवपूजनयोग्यगु
रुपकेसाचाहिये।।समाधानास्तुनिःप्रसन्नोगुरुदेवभक्तोदृढव्रतःसत्यदयासमेत
ः।।दक्षःपटुर्वीजपदावधारी।।जिनेंद्रपूजासुसएवशस्तः।।७५।।नाकुलीनोनदुईष्टिर्न
पापीनाप्यपंडितः।।ननिकृष्टक्रियावृत्तिर्नातंकपरिदूषितः।।७६।।नाधिकांगोन
हीनांगोनातिदीर्घोनवामनः।।नविरूपोनमूढात्मानातिवृद्धोनवालकः।।७७।।न
हसिकेवधापीमानाशास्त्रज्ञोनलोलनवान्।।नातिक्रोधोनदुष्टात्मानाम्नको
नविकल्पकः।।७८।।नमायावीनमोहीवानक्रूषोनादृढव्रतः।।नापापी

शास्त्रमें कह्या है॥ तथाहि॥ जीर्णं चातिशयोपेतं॥ तद्बिंबं गममपि पूजयेत्॥ शिरोहीनं न पू
ज्यं स्यान्निक्षेप्यं तन्नदादिषु॥२॥७१॥ चर्चा बहत्तरमी॥ प्रश्न॥ प्रतिमाजी विषें कान का
आकार का धेसो लगा हो है सो कहा है॥ समाधान॥ पाषान की प्रतिमाजी के कानक
रचा का उपाय है॥ सो ईधातकी प्रतिमा विषें रूचलपर्यो है॥ और कारणको ईन
हीं॥३॥७२॥ चर्चा तिहत्तरमी॥ प्रश्न॥ शास्वती प्रतिमा है तिनका कहा स्वरूप है॥
गाथा॥ सिंहासण दिसट्ठिया॥ विणीलकुंतलसुवज्जमयदंता॥ विद्दुमअहरा
किसलयसोहायरहत्थपायतला॥ ९८९॥ दसतालमाणलक्खणभरियापेक्खंतइव
वदंतं वा॥ उरुजिणउंगापडिमा॥ रयणमया अट्ठअहियसया॥ ९९०॥ यह अकृत्रिम
प्रतिमा का वर्णन नेमचंद्रसिद्धांती कृत त्रिलोकसार विषें है॥ ७३॥ चर्चा चवहत्त
रमी॥ प्रश्न॥ गृहस्थ अपने घर में प्रतिमा पूजन करै कि नहीं॥ समाधान॥ सब सो

स्थानकाकयास्वरूपहै। तिसकाभेरा। अंगुष्टसौंलेयमध्यमाअंगुलीतांईकेपु
णतालसंज्ञाहै। सोअयमेंअंगुलसोंबारहअंगुलमात्रहोवै। जोप्रतिमाजी
तालहोयतिससोंदशगुणीउच्चताहोय। घाटवाढनहोय। तिसेंसमचतुर
स्थानकहिये। तिसहेंजेनकीप्रतिमादशतालप्रमाणचाहिये। अोरदेव
कीप्रतिमानवतालप्रमाणहोहै। तदुक्तं। त्रिलोकसारे। भवबीजांकुरमथना
हाप्रातिहार्यविभवसमेताः। तेदेवाः दशतालाः शेषादेवाः नवतिनव(
तालाः। छायहसमचतुरस्रसंस्थानकास्वरूपतथातालकाप्रमाणअन्यनंद
सिद्धांतिचक्रवर्तीकृतकर्मप्रकृतिनामग्रंथपहै। तहांजाननां। ऐसेपूर्वोक्ति
लक्षणसमेतप्रतिमापूज्यहै। अोरजोप्रतिमाअतिशयवानहो इसतोजीर्णभीपू
ज्यहै। अंगहीन [illegible] जीपूज्यकहीहै। द्वाराहीनहोयतोपूज्यनांही। ऐसेंप्रतिष्ठा

म्मटसारकेउत्तरार्द्धविषेसिद्धांतोक्तकह्याहै।यातेक्रोनक्रियामेदोषमाननानाहै।

ही।तथाश्रीयोगीन्द्रदेवकृतश्रावकाचारविषैंभीक्रोनकह्यादै॥दोहकछंद॥॥

आरंभेजिणएहाविर्यएजोसावज्जणंति।।दंसणतेणजिमहलियउ।।इत्थुणकां

इभंति॥१॥धुणरासिरहवणाइयहंपाउलहउकिंतेणविसकणायहंवकुउव

हिजलुणउहूसिऊइजेए॥२॥७०॥चरचाइकहत्तरमी॥प्रश्न॥प्रतिमाजीविषैंपु

रूपकाविवरणक्योंकरहै॥समाधान॥जोबिंबशिल्पिशास्त्रोक्तसमचतुरस्रसं

स्थानादिलक्षणयुक्तहोय॥सांगोपांगकरियाग्रहोय॥प्रतिष्ठितहोय॥सोपूज्य

है॥तदुक्तंप्रतिष्ठापाठे॥यद्बिंबंलक्षणैर्युक्तं॥शिल्पिशास्त्रनिवेदितं॥सांगोपां

गंयथायुक्तं॥पूजनीयंप्रतिष्ठितं॥१॥नासामुखेतथानेत्रहृदयेनाभिमंडले

स्थानेषुवंगितेष्वेषुप्रतिमानैवपूजयेत्॥२॥इहांकोईपूछै॥समचतुरस्रसं

त्ताके निमित्त है। अकृत्रिम रत्नमयी प्रतिमा का प्रक्षाल देव विद्याधर करैं हैं। नवे
ह फेर कहै हैं। देव विद्याधर अकृत्रिम प्रतिमा का प्रक्षाल करै यह क्यों कर जांनी जाय
। तिसका उत्तर। मांनस्तंभसंबंधी सुवर्णमयी प्रतिमा का अभिषेक इंद्रादि देवता
करै है। तदुक्तं। आदिपुराण मध्ये। श्लोक। हिरण्मयी जिनेंद्राणां मूर्त्तिषां बुध्नप्रति
ष्ठिता: देवेंद्रा: पूजयंत्यस्मत् क्षीरोदांभोभिषेचनै:॥ १॥ और स्वर्ग विषें शाश्वती प्रति
मा का अभिषेक देवता करै हैं। तिसकी साषि। नेमचंद्र सिद्धांती कृत त्रिलोकसा
र विषें है। गाथा। सवै। सुहसयणगो देवा जायंते दिण्णयरोवत्थुवण्णगे। अंतोमु
हुत्तपुण्णा सुगंधसुद्धिफाससुविदेहा॥ ५०॥ आणंदतूरजयसुदिरवेण जमं
संपत्ता दट्ठूण सपरिवारं। गयजम्मं तहिणाणं च॥ ५५॥ धम्मं पसंसिदूणं। ण्हादूण
दहे भिसेयलंकारां। लद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुव्वंति सद्दिट्ठी॥ ५५६॥ मिट्ठी अत्थो

है॥प्रतिमाविषैंकेवलज्ञानकेसमयकीविधिचाहिजे॥समाधान॥केवलज्ञा
नकीसाक्षात्पूजाविषैंकोननहीं॥प्रतिमाकीपूजाकोंनपूर्वकहीकहीहै॥
औसेंसमवसरणमेंपार्श्वनाथजीकेमस्तकपेफणाहोयनहीं॥प्रतिमाविषैवि
द्यमानहै॥इसपूर्वोक्तदृष्टांतसोंप्रतिमाकीपूजाविषैंकोनविधियोग्यहै॥त्रै
रजहांपूजाकीविधिकानिरूपणहै॥तहांप्रथमकोंनहीकह्याहै॥तदुक्तं॥यश
स्तिलके॥श्लोकः॥स्नपनंपूजनंस्तोत्रंजपोध्यानंश्रुतस्तवः॥षोढाक्रियोदितासद्भिः
देवसेवासुगेहिनां॥७॥इत्यादिकषटकर्मजानियेंहै॥कोनकाबडापुण्यहै॥इहां
कोईकहैगाबडापुण्यतोअष्टप्रकारीपूजाकरांहैंहीं॥जलादिकेआरंभसोंजो
नविषैंकोनसाविशेषपुण्यहै॥हमतोधातुपाषानमयीरत्नमयप्रतिमाप्रक्षा
लउज्जलताकेनिमित्तकरेहैं॥तिसकाउत्तर॥रत्नमयप्रतिमाकातोप्रक्षालउज्ज

लणकासंदेहगयाइत्यादिग्रोत्स्नीउदाहरणहै॥तिसतेंप्रतिमाजीकेमस्तक
देषकरूचिनकरणी॥८८॥चरचातेतहत्तरमी॥पार्श्वनाथजीकीप्रतिमाके
स्तकपैंसातफणहे॥तिसकादेनतोजानियेहैसुपार्श्वनाथजीकीप्रतिमापैंनोफ
हे।इसकाक्याहेतहे।समाधान॥सातफणनौफनग्यारहफनवलीयावंत
तितनीसवपार्श्वनाथकीजाननी॥परीहाकरिलेनी॥८९॥चरचाचहत्तरमी॥प्रश्न
चौवीसतीर्थंकरकीप्रतिमाकेआसनविषेंवृषभादिकचिह्नहै।सोक्याहे।स
धान॥तीर्थंकरकेदाहिनेपांवमेंजोचिह्नजन्मसेंहोहैसोईप्रतिमाकेआसन
जाननां।उक्तं॥ ॥जम्मणकालेजस्सदुदाहिणपायम्मि होयजंचिह्नं तं
लक्खणंपउत्तं॥आगमसुत्तेजिनंदेहि॥[illegible]॥९०॥चरचाइकहत्तरमी॥प्रश्न॥उपरलि
पूजनविषेंकोनक्रियाउचितहैसोयहहैतोजन्मसमयकीवि

षेंधरणेंद्रपद्मावतीआइमस्तकपैफणकामंडपकीयाकेवलज्ञानसमयरत्नत्र
हीअवप्रतिमाविषेंदेषियेहै।सोकैसाकारसंभवै॥समाधान॥जोपरंपरासोंरीतच
लीआईहैसोअयोगपकेसेंकहीजाय।औरभीऐसेकारणहैं।समवसरणमें
विद्यमाननहीप्रतिमाविषेंयोगपदै।जैसेंकोनक्रियाकेवलज्ञानकीपूजावि
षेंनहीं॥प्रतिमाविषेंरचिनहै।औरबनारसीदासनेंश्रीपार्श्वनाथकीस्तुति
विषेंसातफणलिषेहैं।सजलजलदतनमुकुटसपतफण।इति।तथामाघनंदि
मुनिकीकरीवंदेतानूकीजयमालामेंलिषाहै।फणिमणिमंडपमंडितदेहं।पार्श्व
निजगतदतसंदेहं।इति।कथाकोशमेंइसकाउदाहरणहै।पात्रकेसरीनामब्रा
ह्मणकेंअनुमानकेलक्षणमेंसंदेहहूवातवपद्मावतीदेवीपार्श्वनाथकीप्र
तिमाकेफणविषेंअनुमानकेलक्षणकाश्लोकलिषगईदर्शनकरतेंहीब्रा

वोछतिकथ नाम ।। नयाचोक्तं ।। चैत्यनक्ति निरूपणे यत्र तिलके ।। श्री मंतर मर्त्य नास्क
रसुरश्रेणी विमाना श्रिता ।। स्वज्योंतिः कुलपर्वतांतरधरारंध्रः प्रवंध स्थितीः वंदेत
रवालमौलि विलसद्रत्नप्रदीपार्चिता ।। सान्नान्नाय जिनेंद्र सिद्ध गणभृत्स्वाध्यापि
साध्वाकृतीः ।। ५ ।। धरणेंद्र की आज्ञा सों संजयंत मुनी की प्रतिमा विद्याधरांनें पापी ।। मृ
गध्वज नाम केवली की प्रतिमा काम देव से स्थापन करी ।। एसे नो प्रसंग वंडे हरिवं
श विषंदें ।। और करणाटमें अगार ह धनुष प्रमाण बाहुबलि जी की प्रतिमा विद्य
मान है ।। तिसही कों गोम्मटस्वामी कहे हैं ।। निर्वाण कांड में तो गोम्मटस्वामी की प्र
तिमा पूज्य कही है ।। तथाहि ।। गाथा ।। गोम्मटदेवं वंदमि ।। पंचसयधणुहदेह
तं ।। देवा कुणंति विट्ठी ।। केसरकुसमाणि तस्स उवरम्मि ।। ० ।। यह प्रतिमा किस ही दी
पांतर विषै जाननी ।। ६० ।। चरचाग्रम्म [illegible] ।। श्री ।। श्री पार्श्वनाथ जी के तपकाल वि

रीसेवा करैं। तिनका नांम [illegible]थानका सेवा का ऽसंगा ऽसिद्ध नहीं। यह क्यों कर जानाग
या॥ समाधान॥ इनका नांव तो एक जागै लिषा है और छह कुलाचलवासनी गनेसा
धना करैं। बाकी इंद्राणी माताकों प्रच्छन्न सेवैं॥ प्रगट नहीं॥ इनका ऐसा ही नियो
ग है॥ यह कथन आदिपुराणमैं आया है॥ ९९॥ चरचा सतसठमी प्रश्न॥ बाहूबल
जी की प्रतिमा पूज्य है कि नांही॥ समाधान॥ जिनलिंग सर्वत्र पूज्य है॥ आतमैं पाषा
णमैं काष्टमैं जहां है तहां पूज्य है। याही तैं पांचों परमेष्टी की प्रतिमा पूज्य है। इहां
कोई पूछै। तीर्थंकर प्रभु की प्रतिमा पूज्य सुनी है॥ पांचों परमेष्टी की प्रतिमा कहां
कही है। तिसका उत्तर। गोम्मटसार मध्य पांचों परमेष्टी की प्रतिमा कही है। जीव
कांड के मंगलाचरण प्रस्ताव विषैं देषि लीजो॥ तथाहि॥ तत्र नाम मंगलार्हत्सिद्ध
चार्योपाध्यायसाधूनां नाम स्थापना मंगलं कृत्रिमाकृत्रिमं जिनादीनां प्रतिबिं

तो॥ इंद्रादिपदपाइकें क्रमसों मुक्ति होंगे॥ परिग्रहवान संसारमैं परिभ्रमन करैंगे ऽऽस
मांतिपरमार्थकै ज्ञाननहारपरमेश्वर बंधमोक्षकास्वरूप कहैं ते ऊ वे यह ग्रसंगम
ना॥ तथा विजयसंजयनाम दोय चारणमुनिकों किसही अर्थवि
षैं संदेह उपज्या॥ जन्मके अनंतर श्रीवर्द्धमानतीर्थंकर का दर्शन करत निःसंदेह
।तव महा भक्ति भावसों प्रभु कौ सन्मति संज्ञा करि स्वस्थान गये॥ यह तौ ग्रसं
गमहापुराणविषै है॥ इस शांति तीर्थंकरसों मुनिराजसों ने ऽऽ धारू ई॥ ९६॥ चरचा
सतमी॥ प्रश्न॥ तीर्थंकर की माताकों गर्भावतारके अवसर छप्पनकुमारी देवांगना से
वैं हैं ते कौन सो॥ समाधान॥ कल्पवासी की इंद्राणी ४८। भवनवासी की। २०। व्यंतरे
न की १६। चंद्रमासूर्य की ४ कुलाचलवासिनी श्री आदि ६। एवं पद्मीऽऽ हां कोई क
है। श्री आदि कुलाचलवासिनी माता कों सेवन आवै॥ यह तौ सुनी है छ

रकी माता सों स्पर्श करे है। केसी है ए श्री पुष्पवती। कहिये देव कन्या पुष्पवती सों पुष्प
वती है। माता पक्ष गर्भाधान को योग्य है। और केसी है। अरजस्वला। कहिये देव
कृत गंधोदक की वर्षा सों रजरहित है। माता पक्ष स्त्री धर्म सों रहित है। और केसी
है। नाभिराजस्य सम्मता। कहिये नाभिराजा को अभीष्ट है। दोनों पक्ष नाभिराज
को इष्ट है। इस उत्प्रेक्षा सों तीर्थंकर की माता अरजस्वला जाननी। ॥ ६४ ॥ चरचा पै
सठिमी। प्रश्न तीर्थंकर प्रभु का मुनिराज सों नेरा होय कि नहीं। समाधान। एक दिन
श्री कुंथनाथ चक्रवर्ती वन विषे विहार करिकें आपने नगर को आवे थे। मार्ग विषे
आतापन योगी साधु तर्जनी अंगुली सों मंत्री को दिषाय मंत्री मुनि को नमस्कार की
या। तीर्थंकर पूछे। हे देव। ऐसा उग्र तप करिके साधु के से फल को प्राप्त होंगे। प्रसन्न
मुष भगवान बोले। कर्म नाश करेंगे तो इस ही भव मुक्त होंगे। कर्म नाश न होयगा।

त्कमेंकोईएकसमत्त्कहोयतबतीर्थंकरप्रकृतिकावंधहोय॥तहांनीतबवंधहो(
य॥जवकेवलीश्रुतकेवलीकासमीपहोय॥केवलीश्रुतकेवलीकेसमीपनीतव
वंधहोय॥ [illegible] ॥जवसोलहकारणविषेंकोईकारणमिले
सोलहकारणविषेंनीतववंधहोय॥जवउसकारणकेउत्किष्टभावहोहि॥चरचा
चौसठमी॥प्रश्न॥तीर्थंकरकीमातारजस्वलाहोइकिनहीं॥समाधान॥आदिपुराणजे
केगर्भावतरणपर्वविषेंतीर्थंकरकीमाताकैरजकानिषेधकीनाहै॥तथाहि॥श्लोक
सम्भूतानातिराजस्का पुष्पवत्यरजस्वला॥तदावसुंधराभेजेजिनमातुरनुक्रियां॥१०॥
अर्थ॥वसुंधरातदाजिनमातुः॥अनुक्रियांभेजे॥तहांकहियेतिसकालवसुंधराकहि
येंपृथ्वीजुहैसो॥जिनमातुःअनुक्रियांभेजे॥जिनमाताकीसमानतासीधरेहै॥गर्भा
स्वर्गावतारकेनवमहीनेंपहलेंदेवतापंचाश्चर्यकरेंहें॥तिसकालपृथ्वी

च॰ स॰
६९

तीर्थंकरकर्मकोंकारणहै॥तैसेंक्षायिकसम्यक्त्वकेलातीर्थंकरप्रकृतिकोंकारण
नहीं॥औरऐसेंनहोयतौक्षायिकसम्यक्त्व [illegible] विनातौकोईमुक्तहो
तानहीं॥सबहीतीर्थंकरहोयकेमोक्षजांहिं॥यातेंक्षायिकसम्यक्त्वमेंऔरदर्शना
विशुद्धिमेंप्रगटभेदहै॥इहांकोईऔरपदहै॥एकपंडितनेयोंलिष्याहै॥सोलहकारण
मध्येमुख्यकारणसम्यक्त्वगुणहै॥सोचाहिये॥औरपंद्रहकारणमें [illegible] कोईसाकार
णचाहिये॥तीर्थंकरकर्मकाबंधहोय॥इसवांतिलिषनेंसोंयहजानागया॥सम्यक्त्व
केऔरदर्शनविशुद्धिमेंभेदनगिनापरंतुभेदहै॥तीर्थंकरकर्मकासम्यक्त्वकारण
नहीं॥तीर्थंकरप्रकृतिकास्वामीहै॥जातेंसम्यक्त्वऔरआहारकद्विककास्वामीहै॥
जातेसम्यक्त्वविनाइनतीनोंप्रकृतिकाबंधनहीं॥कारणपूर्वोक्तहोय॥यहगांसए
कायचित्तसोंविचारनी॥अबइसचरचाकासिद्धांतलिषियेहै॥प्रथमतौनोंसम्

६६

विशुद्धि विषैं क्या विशेष है॥ तिसका उत्तर॥ सम्यक्त्व के तौ भेद हैं। उपशम वेदक क्षा
यिक। तीनौं सम्यक्त्व तीर्थंकर कर्म कौं कारण नहीं॥ इन विषैं उत्कृष्ट निर्मलता कौं
दर्शनविशुद्धि संज्ञा है। सो तीर्थंकर कर्मकौं कारण है॥ यह विशुद्धता केवलीके
कट विना होय नहीं। केवल एक इस हीसौं तीर्थंकर कर्मका आस्रव होहै॥ और
यह न होय तौ तीनौं सम्यक्त्ववाले केवली श्रुतकेवली के समीप वाकी पंद्रह कार
णौंसें तीर्थंकर कर्मका बंध करै॥ इहां कोई और पूछै॥ क्षायिक सम्यक्त्व तौ अत्यंत निर्म
ल है। इसमें और विशुद्धता क्या होहै॥ तिसका उत्तर॥ क्षायक सम्यक्त्व तौ चौथा गुण
गनै भी है। तहां दर्शनमोह संबंधी मल नहीं। यातैं निर्मल है॥ चारित्रमोह के उदय
पायो गपत्रांका दिमलयुक्त होहै॥ क्षायिकी श्रेणिकनैं अपघात कीया है। इत्यादि
कारणसौं क्षायिक सम्यक्त्व में और दर्शनविशुद्धि में भेद है॥ जैसैं दर्शनविशुद्धता एक ही

च॰स॰
९७

कर्मकाआस्त्रवहोहैसहांसांतिआयअप्रमत्तगुणगनेतथआगुवैगुणगनैनिरा
लंवअवस्थाहै॥वंधवंदकआवनहीतिसकालविनयसंपन्नतादिकेतेकारण
कोंकारिसंभवैतिसतेंसोलहोंकानियमनहीं॥उपसमादितीनोंसम्यक्तविषेंसो
लहकारणमेंएककारणकोईसामिलोतथादोयच्यारिमिलोअथवासवमिलो
तीर्थंकरकर्मकाआस्त्रवहोय॥सम्यक्तवतिछवंधो॥इतिकथनात्‌॥यातेसम्यक्त
कविद्यमानदर्शनविशुद्धप्रमुषजुदीजुदीतथासवतीर्थंकरप्रकृतिकोकारण
हैं॥तदुक्तं॥सर्वार्थसिद्धिटीकायां॥ताएतानिषोडशकारणानिसम्यग्भाव्यमानानि
व्यस्तानिसमस्तानितीर्थंकरनामकर्मकारणानिप्रत्येतव्यानि॥३॥तथाचोक्तंत
द्धरिवंशे॥श्लोक॥तीर्थंकरनामकर्मणिषोडशतत्कारणान्यमून्यनिशं॥व्यस्तानि
समस्तानिनवंतिसद्भाव्यमानानि॥१॥षोडशांकाईष्टको॥सम्यग्दर्शनविषैंओरदर्शन

९७

दिपुराणमें कह्या है। तथाहि। वसुसनत्रानरूपांते नरते त्रान पूजितः स ह्ने जे परमं स्तो।
तिकेवला रंभयद स्त्रं रां ८१ संक्लिष्टा नरता धीत्रा: सो समंतस्तियत्किलात् हचुसमहा
ईतनासी त्र सूत्रपाठ विकेवल रूफ्दी चरचा बासमी॥ प्रश्न॥ युग की आदि विषै प्रथम
बाहुबलि जी मुक्त हुवे कि सुनी है। पुराण विषै क्यों कही है। समाधान॥ प्रथम है।
अनंतवीर्य नाम राजा मुक्त हुवा॥ तदुक्तं॥ आदिपुराण मध्ये चिंतालीसमे पर्व विषै॥ श्लोकः॥
संबुद्धानंतवीर्यश्च गुरोः संप्राप्तदीक्षणः सुरैरवाप्तपूजर्द्धिरग्रणीर्मोक्षगतावभूत्॥ ६०॥
चरचा तेईसमी॥ प्रश्न॥ तीर्थंकर नाम प्रकृति के आस्रव कों दर्शन विशुद्ध्यादि सोल
ह कारण कहे हैं ते हां एक सूत्र जी की भाषा टीका में यों लिख्या है। सो लह कारण स
ब मिले तब तीर्थंकर प्रकृति का आस्रव होय। एक भी घटै तो न होय। सो क्यों कर
है। समाधान॥ चौथे गुणस्थान सौं लेय आठवें पर्यंत पांचों गुणस्थान विषै तीर्थंकर

यउपाध्यायः समाहिते॥ ४६॥ सर्वद्वंद्वविनिर्मुक्तो आरम्भात् दिशु कर्मसु॥ विरक्तो मे
नवान् ध्यानी साधुरित्यभिधीयते॥ ४७॥ सामान्यपने साधुतीनांको कहिये॥ विशे
षविचार विषें साधपद साधही कों जाननां॥ जातें आचार्य उपाध्यायकों साधु कहे
साधुकों आचार्य उपाध्यायपद न कहिये॥ तिसका ओरा॥ अठाईस मूलगुणकी
अपेक्षा तीनांकों साधुपद समान है॥ साधुके अठाईस गुण जु दहें॥ तिन का वि
वरण॥ गाथा॥ दहदंसणस्स नेया॥ नुयापंचवक्कं तिणाणस्स॥ तेरहविहस्स
चरणं॥ अठवीसं कूतिसाहूणं॥ अर्थ॥ आज्ञादि सम्यक्त १०॥ मत्यादि ज्ञान ५॥ अ
हिंसादि महाव्रत ५॥ ईर्यादि समिति ५ गुप्ति ३ ए साधु महाराजके अठाईस गुण तु
हे जानने॥ इहां कोई पूछे॥ साधके अठाईस मूलगुण किस अपेक्षा सों है॥ ओ
र ए अठाईस गुण कौंकों न अपेक्षा है॥ तिसका उत्तर॥ अठाईस मूलगुणकाक

वजीवसोंघाटकजीमुक्तनहोंहि॥यहनियमहै॥तीसरेसंख्यानेहकाओरा॥जघ
न्यजीवसंख्या॥उत्किष्टजीवसंख्या॥१०८॥तिसकाओरा॥एकसमयविषेंएकजी
वमुक्तहोयतिसेजघन्यजीवसंख्याकहिये॥एकसमयविषेंएकसोआठजीवमु
क्तहोहितिसेउत्किष्टजीवसंख्याकहिये॥एकसमयमेंइनसोंवढतीजीवमुक्त
नहोंहि॥यहनियमजाननां॥४०॥चरचाइकतालीसमी॥प्रश्न॥आचार्यउपा
ध्यायसाधुइनतीनोंपदविषेंउत्किष्टपदकोंन॥समाधान॥उपदेशकार्यविषें
आचार्यमुख्यहै॥पठनपाठनविषेंउपाध्यायमुख्यहै॥संयमकेसाधनविषेंसा
धकीवडीशक्तिहै॥मोंनवलवीपरंविरक्तहै॥यातेंसाधपदउत्किष्टहै॥तदुक्तं
नीतसारे॥पंचाचाररतानित्यंमूलाचारविदग्रणी॥चतुर्वर्णस्यसंघस्यसआचा
र्यइतीष्यते॥५॥जैनकनयसंकीर्णशास्त्रार्थव्याहृतिक्षमः॥पंचाचाररतोऽ

रंतरतैसेंलगनरूपमोक्षमार्गचले॥तिसेंअनंतरकहिये॥तिसकेभेद२॥एकजघ
न्य॥१॥उत्कृष्ट॥जघन्यअनंतरसमय१॥उत्कृष्टअनंतरसमय८॥तिसकाबो
रा॥एकसमयमोक्षकामार्गचले॥दूसरेसमयचले॥इसतौतिसंलगनदोयस
मयचले॥बहत्तीसमयनचले॥तिसकोजघन्यअनंतरकहिये॥आठसम
यलगालगमोक्षकामार्गचले॥तिसउत्कृष्टअनंतरकहिये॥इसकाबोरा॥
तवछहमासकाउत्कृष्टविरहकालमोक्षकाबीतै॥तवछहसैआठजी
वआठसमयमांहिलगालगिमोक्षजांहि॥पहलेसमय३२॥दूजेसमय४८॥
तीजेसमय६०॥चौथेसमय७२॥पांचवेंसमय८४॥छठेसमय९६॥सातवेंस
मय१०८॥आठवेंभी१०८॥इसतौतिआठसमयकाउत्कृष्टअनंतरहै॥इसही
कथनकीअपेक्षातेंसंसारविषेंआठसमयअधिकछहमासमेंछहसैआ

४९

शीपविषेंकरूवेकीटांटीवत्॥मोक्षकामार्गनिरंतरचलेहै॥ऐसीकहनावतहै।
इसकास्वरूपकोंकरहै॥समाधान॥निरंतरमोक्षकोंचलेजांहैइनतैमनुष्यकहां
एकआवलीकेअसंख्यातसमयहोंहै॥मनुष्यसवउनतीसअंकप्रमाणहै
जीतीनचारत्रागत्रीकहीहै॥यांतैकरूवेकीटांटीकादृष्टांतक्योंकरिसंभवे॥
इसचरचाकानिर्नैतीनभेदकरिहै॥मोक्षमार्गकाअंतर१॥मोक्षमार्गकाअनं
तर२मोक्षजीवांकीसंख्या३॥तिनकाव्योरा॥अंतरकेभेद२॥एकजघन्यएकउ
त्किष्टाजघन्यअंतरसमया१॥उत्किष्टअंतरमासछै॥तिसकाव्योरा॥एकसमय
मोक्षमार्गचलेहैजेसमयनचलेइसनांतिएकसमयकेअंतरसोंमोक्षमार्गच
॥यहजघन्यअंतरजानना॥विरहकालकीअपेक्षाछहमासतांईकोईजी
वमोक्षनजाय॥यहउत्किष्टअंतरजानना॥दूजेअनंतरकाव्योरा॥समयकी

सुनानहीं॥तैनेंकहांसोंजानां॥तिसकाउत्तर॥वडेहरिवंशविषेंयहअर्थहैममकं
नेंकेवास्तेंउदाहरणकरिकैलिष्याहै॥परीक्षाकरलेंनी॥तथाहि॥वृहद्धरिवंशात्॥
प्रमाणयोजनव्यासस्वावगाहविशेषवत्॥त्रिगुणंपरिक्षेपेण॥क्षेत्रंपर्यंतभित्ति
कं॥५१॥सप्ताहमाविरोमाग्रैरापूर्यकठिनीकृतं॥तदृश्यमिदंपल्यंव्यवहाराख्य
मिष्यते॥५२॥एककस्मिंस्ततारोम्णिप्रत्यब्दशतमुद्धृते॥यावतास्यक्षयःकालः
पल्यमुत्पत्तिमात्रकृत्॥५३॥असंख्येयाब्दकोटीनांसमयैरोमखंडितां॥प्रत्येकंस्य
र्वकंतस्मात्पल्यमुद्धारसंज्ञिकं॥५४॥कोटीकोट्योदशैतेषांपल्यानांसागरोपमः
तावत्यामर्द्धतृतीयाभ्यांद्वीपसागरसंमिति॥५५॥सोद्धात्रिगुणतारज्जुस्तनुवातोभ
यांतकाः॥निष्पद्यंतेत्रयोलोकाःप्रमीयंतेबुधैर्यया॥५६॥पूर्वोक्तअर्थइनश्लो
कांमेंजाननांलिषेसोविस्तारवडाजाहै॥३७॥चरचाआलीसमी॥४८॥अठाई

तिगामहूनेंजो जनचलाजा२॥ ऐसीचालचलतैंइकोक्रसववसमयराशिप्रीहोय॥ त
वराजूकीएकमजलकुंडइ॥ ऐसी पचीसकोडाकोडिमजलहोहि॥ तवत्र्रा
होय॥ इससें हनाराजू जानना॥ इहांकोइकहै॥ पचीसकोडाकोडिमजलकात्र्रा
धाराजूकह्या॥ तिससैंद्विगुणासाराराजूकह्या॥ पंचासकोडाकोडिमजलकासा
राराजूक्योंनकह्या॥ तिसकैउत्तर॥ पचीसकोडाकोडिउद्धारपल्यकेरोमप्रमाणस
वद्वीपसमुद्रहैं॥ तिसमस्तएकदिशागत आधराजूमैंहैं॥ यातेंप्रथम आधराजूकाप्र
माणकह्या॥ पूर्वपश्चिमतथाउत्तरदक्षिणदिशागतसवसंख्यातद्वीपसमुद्रों॥
कात्तेत्रलीजे॥ तवसाराराजूहोय॥ इसहीराजूसेंतीनसैतेतालीसराजू
ककाघनाकारहै॥ ऐसेलोकस्कंधकेउगावनेकीशक्तितीर्थंकरप्रभुकीकरत
हैं॥ इहांकोइकहै॥ यहराजूकाउदाहरणकिसदीर्घग्रंथविषै

हकाऊजोटाणल जायजोदेवो॥जोछमासीगमणो॥राजूइकोयहोयपरिमा
णं॥तिनकेहिमकारमेंजोदेवता लाषजोजनजाइछेसोछहमहीनेंकागमन
सोराजूकाप्रमाणहै॥इसगाथामेंयहअर्थहै॥सोकैसेहै॥समाधान॥यहअर्थ
इगांवराम्नायकानहै॥राजूकाप्रमाणइसमेंनिपटही थोडाकह्या॥राजूका
प्रमाणवहुतहै॥सोएकाग्रमनसोंसुणो॥आगमोक्तपैंतालीसअंकप्रमाणव्य
वहारपल्यकीरोमराशिहै॥तिसरोमराशिकेरोमनकोंएकेकतिलकरिथापे॥ति
नएकएकरोमनिपरअसंख्यातवरसकेसमयकीराशिधरो॥फेरिइससमयराशिको
एकत्रकरिदिय॥अवइहांविचारोवडीराशिहूई॥इसहीसमयराशिसोंकल्पना
करो॥प्रथमहीकोईदेवता॥पहलेसमयलाषजोजनचले॥दूसरेसमयदोय
लाषजोजनचले॥तीसरेसमयचारलाषजोजनचले॥इसभांतिसमयसमयप्र

।समाधान॥ सर्वार्थसिद्धिसैं ऊपर बारह जोजन अष्टम पृथ्वी है॥ तिसका विस्तार
दक्षिणोत्तर राजू १ पूर्व पश्चिम विस्तार राजू ७ ॥ मुटाई जोजन ८।
नागरूपके वर्णेउ तानें छत्रके आकार तथा अर्द्धगोलाकार सि म
नुष्यक्षेत्रके प्रमाण मध्य विषे आस्योगनमोटी है॥ क्रमसों मुटा
नी किनारसों लेके नीचे ताई॥ तिसके ऊपर आयकोसमोटा घनोदधि नाम वात
है॥ तिसपै एककोस मोटा घनवात है॥ तिसपै पंद्रहसै पचहत्तर धनुष मोटा तन
नुवात है॥ तिसके अंत अनंतानंत सिद्ध हैं॥ अनंत अव्याबाध सुखसों तृप्त तिष्ठे
हैं॥ तिनको त्रिकाल नमस्कार होउ॥ यह कथन श्री नेमिचंद्राचार्यकृत त्रिलोक
सारमें जानना॥ ३५॥ चवरसो छनंनालीसमी॥ ॥प्रश्न॥ राजूका प्रमाण असंख्यात
जोजनको है॥ तिसके प्रमाण की गाथा इस नातिसुनी है॥ सद्गाहा॥ णभयण टम

पिंड प्रकृति है। अवाई स अपिंड प्रकृति है॥ पिंडप्रकृति विषें एक संस्थान प्रकृति है। सो अनेक आकार कों करै है। और एक आनपूर्वी प्रकृति है। सो अंत विषें पूर्व शरीर के आकार का नाश करै है। सो रूप पर्याय विषें समस्त कर्म प्रकृति का अभाव हुवा॥ यातें देह का आकार ज्यों का त्यों है रह्या॥ इहां को ऊ कहै॥ आनपूर्वी प्रकृति का अर्थ तो हम और ही नांति सुना है। यह अर्थ कहां लिषा है ताकों कर्मकांड ही का थां॥ ॥पूर्वशरीराकारविनाशो यस्योदयाद्भवति तदानुपूर्वनाम॥ तथा चोक्तं हरिवंशे॥ ॥उदयाद्यस्य पूर्वात्मशरीराकृतिसंदयः॥ चतुर्गत्यानुपूर्वं तत्तथागुरुलघूदितं॥ ७॥ चरचा अवतीसमी॥ ३८॥ तीन लोक के अग्रई षत्प्राग्भारा नाम अष्टम पृथ्वी सुनी है। तिसकै मध्य छत्राकार सिद्धसिला है। सो वह कैसे छत्र के आकार है॥ और उसका स्वरूप क्यों कर है॥

णकभीहुवानही॥कर्मकेआवरणरहितमोक्षमाक्षमेंदेहप्रमाणकोरहा॥
लोकप्रमाणक्योनहुवा॥समाधान॥यहजीवनिश्चैकरिलोकप्रमाणहै॥
तिकोअपछासोहै॥समुद्घातविनाकदीमुक्तरूपहोतोनहीं॥यातेक
धरणसोंअनादिसंसारविषेछोटीवडीदेहपाइदेहप्रमाणरह्या॥कर्महीनें
छोटावडाकीयामोक्षविषेंकर्मनावनया॥छोटावडाकोनकरे॥याहे
चरमदेहप्रमाणरह्या॥जैसेंकोईवजाजवडथानकोघडीकरेहै॥वजाजवि
नावहवडीजांकीत्यौंरहिजाहै॥तैसेंकर्मकेअभावदेहकाआकारजोंका
त्योंरहैहै॥[illegible]संसारमें॥आठकर्मविषैकोनसेकर्मकरिदेहका
आकारहोहै॥औरकोनसेकर्मसोंविनसैहै॥तिसकाउत्तर॥ज्ञानावरणादि
आठकर्मविषेएकनामकर्महै॥तिसकीतिराणवैंप्रकृतिहै॥तिनमेंपंसव

है तहांलिषा है॥ इहां कोई कहै॥ सिद्ध परमेष्टी चरमदेहसौं किंचोनकहे ते नष
केशतौ चरमदेहसौं मिलेहैं॥ तिनकी अपेक्षा किंचोनता क्यों कर संभवे॥ तिस
का उत्तर नषकेशादीकी अपेक्षा चरमदेहतें किंचोन है॥ प्रदेशोंकी अपेक्षा तै
चरमदेहकी समान है॥ फेर वहदेवाला॥ चरमदेहकी समान कहांक है है॥ ति
[illegible] विषें कहै है॥ श्लोक॥ कालादिलब्धि
[illegible]
मासाद्य नष्टानष्टाष्टकर्मरः सम्यक्त्वाद्यष्टकं प्राप्य प्राग्देहपरिमाणकृत्॥
॥१९६॥ ऊर्ध्वव्रज्यास्वभावेन जगन्मूर्द्धनि तिष्ठति॥ जीव स्वस्वरूपं जगाद जगतं
गुरुः॥१९७॥ वर्द्ध चन्द्र सैनी सम्म॥ ॥अर्थ॥ ॥संसारमैं समुद्घात विना जीव छोटी
वडी देहके प्रमाण है॥ अनादिकालसौं कर्माधीन योंही चलाआया है॥ सा
वरणदीपकी नांई॥ लोकप्रमाण असंख्यात प्रदेशी अपनी अवगाहनाप्रमा

२६६   तो एक पूर्वोक्त कथनमें हेतु विचारना॥ सब अरहंतनिकै स्थान निषि
द्या विहार धर्मोपदेश ए च्यार जोग क्रियाका होय मेघ संबंधी चारांके वार दृष्टांत दी
ने॥ तिससे तै अरहंतनिकें च्यारौं क्रियाका नियम कह्या॥ तौ उहां कायोत्सर्गासन है
॥तहां पद्मासन नहीं॥ पद्मासन होय तहां कायोत्सर्गासन नहीं॥ तौ एकै केवल
ती नहीं क्रिया रही च्यारिका नियम कहंदं कहां आचार्य एक मेघके दृष्टांतसौं कर
चुके सो न रह्या॥ यातें इस कथनमें इहां संदेह करना नाहीं॥ ३५ चरचा छत्तीसमी
॥३६॥ ॥मोक्षविषै किंचोन आकार चरम देहसौं कह्या॥ किंचूण चरम देहो
गा॥ इति वचनात्॥ तिस किंचोनका क्या स्वरूप है॥ समाधान॥ ॥जो कछु पूर्व प्रमा
णतें कमी होइ तिससें किंचोन कहिये॥ सो सिद्ध पर्याय विषैं चरम देहके प्रमाणसों
कछु कमी होय यह किंचोनका अर्थ द्रव्यसंग्रह सूत्रका एक अपूर्व टीका

इहांतौ हलनचलनरूपकाययोगकी क्रियाका ग्रहणहै॥ कायोत्सर्गासन तथा
पद्मासन ए काययोगकी क्रिया नहीं॥ तुम्हारे अभिप्रायमें कायोत्सर्गासन पद्मा
सन इस अभ्यासर फिरैं नहीं स्थिर है॥ अहो मित्र स्थिरकों योगसंज्ञा नहीं॥ मनो वचन
कायकी क्रियाकों योगसंज्ञा है॥ क्रियासिद्धांतविषें हलनचलनरूप कही है॥
यातें स्थिररूप कायोत्सर्गासन तथा पद्मासनकों योगसंज्ञा कैसें संभवै॥ योग
विनासयोगगुणस्थानका देसों कहावे॥ और कायोत्सर्गासनकों॥ तथा पद्मा
सनकों ही काययोगकी क्रियामें [illegible] गिनियें॥ तौ ए दोनों आसन चौदहें गुणग
नेंभी पाइयें हैं॥ उहांभी काययोगकी क्रिया हुई॥ अजोग नाम गुणस्थानकों
कर कहिये॥ तातें एकाग्र मनसों इस अर्थकों विचारिये॥ नाथा ग्रंथोंका नरो सान
करिये॥ मूलग्रंथोंका अभिप्राय मिलाइये॥ और अभी नहरु जैतो यह चरचा सु

योगक्रियाकासद्भावहै॥परंतुमोहकेअभावतेंइच्छाविनासहजहीहोहैं॥दृष्टांत
कहैहैं॥स्त्रीणांमायाचारस्व॥स्त्रीनकेमायाचारकीनाईं॥नान्यार्थ॥जैसेंस्त्रीजनोंकेंकु
टिलाचारगूंथेविनाआपहीसोंहोहै॥तैसेंअरहंतनिकेयोगक्रियासहजहीहो
आरभीइनचारोंक्रियाकेचारउदाहरणकहैहैं॥जैसेंमेघकेंवरसनाथिर
होयहरनाचलनागाजनाएचारक्रियायत्नविनास्वभावहीकरिहोहैं॥तैसेंपू
र्वोक्तचारोंक्रियाकेवलीकेंजाननी॥ऊभेहोनेंकादृष्टांतवरसना॥वेठनेंकादृ
ष्टांतथिरहना॥विहारकादृष्टांतचलना॥दिव्यध्वनिकादृष्टांतगरजना॥एचा
रोंक्रियाकेचारदृष्टांतसमझने॥यहअर्थप्रवचनसारकीतत्वदीपकीनामई
तथाअमृतचंद्रकृतटीकामेंलिषाहै॥इसप्रस्तावकोईपंडितपूर्वोक्तस्थानक
अर्थकायोत्सर्गासनकहै॥निषिद्याकाअर्थपद्मासनकहै॥तिसकाउत्तरः॥

गसंज्ञा है॥ कोई संदेह करै है लनचलनादि क्रिया इच्छा विना कैसे है॥ तिसका स
माधान दृष्टांतपूर्वक वचन सारसिद्धांत विषै उक्त है॥ गाथा॥ ठाणणिसेज्जवि
हारा धम्मुवएसो हि णियदयो तेसिं॥ अरहंताणं काले मायाचारव्व इच्छीणं॥
स्थाननिषद्याविहारा: धर्मोपदेशश्च नियतयस्तेषां अर्हतां काले मायाचार
इव स्त्रीणां॥ अर्थ तेषां अर्हतां काले॥ तिन अरहंतनि कें कर्म के उदयकाल वि
षै॥ स्थाननिषिद्या विहारा॥ स्थान कहिये ऊर्द्ध स्थिति होंना॥ निषिद्या कहि
ये बैठना॥ विहार कहिये चलना॥ एती तौ काय की क्रिया॥ च धर्मोपदेश॥ वक्र
रि दिव्यध्वनि करि धर्मोपदेश यह वचन की क्रिया॥ नियतयः॥ ये चारौं योग क्रि
या स्वभावरूप होय है॥ भावार्थ॥ काय वचन की क्रिया केवली कें मुख्यता सौं है म
न की क्रिया मुख्य नहीं उपचार करि है॥ इस भांति कै॥ औदयिक भावनि करि

देषेदे। नुकेवलनमेसागरुडुफकुड्डिःपटपेदे। औरपुष्पदंतकृतप्राकृतगाादिपुरा
णग्रंथहै॥ तहांनियंकह्यौहै॥ ॥गाथा॥ पकगगापकरुपंमवुलंति। गालगाड
मत्तमत्तातिचलंति। तहांस्ययपानतहं। कगायकमतनमुरमंतोऽनमंघरऽविमल
केवलीकौदलनचलनक्रियाकैविचारमैंगकऔरलिखाहैगाहै नमहैयुगातौने
कानांवसवोगहै। तहांप्रथमयोगकाघ्र्यंनानावादिये। ॥सूत्रं॥ ॥
कायवाङ्मनस्कर्मयोगः॥ अर्थ। कायवचनमनसंबंधातैंहै कर्मकहियक्रिया
तिसैयोगसंज्ञाहै। इसहीयोगक्रियाकैसंबंधसौंसयोगगुणस्थानकहावैहै। सो
गुणस्थानतांइयोगक्रियाइच्छापूर्वककै। तिरहैगुणस्थानविषैइच्छाविना
हौहै। यातेंनंबानकेदलनचलनादिक्रियाविषैयत्ननांहीं। औरचारहैंगुणस्था
नैमनोवचनकायकाआस्तित्वहै। परंतुमनकौपूर्वोक्तक्रियानहीं। यातैंमें

वलयैपैडग्नरकैअंतरीक्षचलै॥तदुक्तं॥भक्तामरस्तवने॥श्रीमानतुंगदेवः॥ उन्नि
द्रहेमनवपंकजपुंजकांत॥पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ॥पादौपदानितव
यत्रजिनेंद्रधत्त॥पद्मानितत्रविबुधाःपरिकल्पयंति॥ ३२॥ इसकाअर्थपंडित
हेमराजकृतभाषावचनिकामेदेषना॥तथाभाषाविषै॥दोहा॥विगसितसुवर
णकमलदुति॥नषदुतिमिलिचमकाहि॥तुमपदपदवीजहंधरै॥तहंसुकमल
रचांहि॥ ३३॥तथाचोक्तं॥एकीभावस्तवने॥पदान्यासादपिचपुनतोयात्रयातेत्रि
लोकीं॥हेमाभासोभवतिसुरभिःश्रीनिवासश्चपद्मः॥सर्वांगेणस्पृशतिभगवन्
त्वय्यशेषंमनोमे॥श्रेयःकिंतत्स्वयमहरहर्यन्नमामभ्युपैति॥इसमेंभीभगव
नपावधरिकैसोनेकेकमलपैअंतरीक्षचलैंयहअर्थश्रीवादिराजमुनिनैकह्या
है॥तथावडदरिबंशविषैभीकह्याहै॥श्लोकः॥पादपद्मंजिनेंद्रस्यसप्तपद्मैःप

रकेज्ञानासनतथामोक्षासनमेंभेदकह्याहै॥तिसकाउत्तर॥सोलहेंतीर्थंकरश्री
तनाथजीकिज्ञानासनविषेंअरुमोक्षासनमेंफेरहै।श्वेतांबरकीसतीर्थंकरकायो
त्सर्गासनसेंमुक्तहुवेतिनमेंसांतिनाथजीकामोक्षासनकायोत्सर्गहीआया॥और
ज्ञानपद्मासनसेंहुवाइसप्रकारमोक्षासनअरुज्ञानासनमेंफेरहुवा॥तदुक्तं
रागासपद्मां॥तितीर्थंकरपुराणे॥ ॥श्लो॰षष्ठोपवासेनधवलेद्वादशीदिने॥
पुष्पेमासिदिनस्यांतेपल्यंकासनमास्थितः॥७७॥निर्ग्रंथोनीरजोवीतविघ्नो
बोधवः॥केवलज्ञानसाम्राज्यश्रियंश्रांतामवाप्यसः॥७८॥अरुनंदीनेंश्लोकवि
षेंशांतिनाथजीकोंज्ञानपद्मासनसेंकह्या॥मोक्षासनऊपरकायोत्सर्गकहि
या।फिरकोईऔरपूछेंभगवानविहारकोंनसिंघासनसेंकरे॥तिसकाउत्तर॥जि
सेंजंघाचारीसाधजंघाकेवलपेंडगनरकेआकाशमेंअंतरीक्षचले॥तेसेंसानेंकेक

शांतरूपअरहंतकीसमानबैठेआसनआत्मस्वरूपकाध्यानकरै॥इहांभीपद्मा
सनहीआया॥औरअकृत्रमचैत्यालोंविषेंसमोसरणाबहुरचनाहै॥तहांभीस
मस्तप्रतिमापद्मासनहीकहीहै॥उहांभीमेहीहेतजानना॥तथासमान्यमुनीश्व
रभीषडेउपदेसकरैनहीं॥तोकेवलीकाषडेआसनउपदेशकैसेंकरसंभवे॥अ
षबावारहसनाकिजोबवेंबरहें॥केवलीषडेआसनरहैंयहभीबनेंनहीं॥यातें
आगमप्रमाणयुक्तिप्रमाणसमवसरणमध्यकेवलीपद्मासनहीसंभवें॥इहांको
ईऔरपूछैजिसमहाराजकेकायोत्सर्गासनसेंज्ञानकुंवाह्या॥तोसमवसरण
मेंकोनसेंआसनसेंरहे॥तिसकाउत्तर॥तीर्थंकरप्रभुकेकायोत्सर्गासनतथा
पद्मासनकोइसआसनमेंज्ञानउपजै॥समोसरणमध्येपद्मासनहीरहे॥फेरबो
ला॥ज्ञानकेआसनमेंऔरउपदेशआसनमेंभेदबताया॥ऐसेंकिसमहातीर्थंक

हरिवंसकेदूसरेसर्गविषेंसमोसरणमध्येवर्द्धमानजिनदेवविराजेहैं।तथाहि॥
सिंघासनोपविष्टंतंसेनयाचतुरंगया।श्रेणिकोपिचसंप्राप्तःप्रणनामजिनेश्वरं।२
इत्यादिअनेकजागेसमोसरणमध्येवर्णनकीहैहै।एकऔरस्नी।इसप्रसंगकाउ
दाहरणविचारणा।ज्ञानार्णवनामशास्त्रमेंपिंडस्थध्यानकीपंचधारणाविषें
पार्थिवीधारणाकीसाधारणरीतिकहीहै।तहांप्रथमअपनेशरीरविषेंमध्यलोक
कीबराबरएकराजुप्रमाणनिःशब्दनिस्तरंगमोतीकेहारतथातुसारसमउजल
मुद्रध्यावेतिसकेमध्यजंबूद्वीपसमानतायसुवर्णकेवर्णपद्मरागमयीकें
स्त्रमरकोंप्रियअत्यंततेजोमयसहस्रदलकमलकोंचिंत
।तिसविषेंसुमेरमयीफूलाजालकरिप्रकासमानदिव्यकर्णिकाविचारै।
ऊपरशरत्कालकेचंद्रमासमानस्वेतउन्नतसिंघासनकीकलनाकरै।तिसपै२

च॰ स॰
५०

विषेदेषना॥ ॥तथाहि॥ ॥उत्तरस्यांदिशि॥समवसरणमध्यो॥प्रातिहार्याष्टकोपे
तं॥सुरनरमुनिवृंदवंद्य॥मानंपर्यंकस्थं॥तीर्थंकरदेवरूपंदर्शितं॥ऐसेंहीवडे
हरिवंशविषेगजकुमारकेप्रसंगमेंनेमनाथस्वामीसमोसरणविषेपद्मासन
होकहे॥तथाहि॥विवाहारंभसमये॥मुदिताखिलयादवे॥जातेजिनयतिःप्रा
णोविहरद्धारिकांतदा॥समागत्योपविष्टंतमग्रेरैवतिके विभुं॥वंदितुंनिर्ययु
:सर्वेयादवाबद्धमंगला॥॥इहांकोईकहैगानेमनाथतोपद्मासनहीसोंमु
क्तहुवेहें॥यांतेसमोसरणमेंबैठेकहेहें॥इसहेतसोंयहउदाहरणतोंवनेंनहीं
॥तिसकाउत्तर॥हरिवंशपुराणकेजन्मसर्गविषेकाथोत्सर्गासनसोंमुक्तहुवे
जुहेंवर्धमानस्वामीतिनोंसमोसरणमेंबैठेकहेहैं॥तथाहि॥अशोकपादपस्या
धोविनिष्टः सिंहविष्टरे॥नानारत्नसमुद्योततननेतेडसरासने॥४॥ऐसेंहीहरि

॥५०॥

र्थंकरसंबंधीसामांस्यकथनकीनांहै।।किसहीएकतीर्थंकरसबंधानहै।।तहां
समोसरणकेमध्यनागात्रिमेषलपीठकेउपरगंधकुटीहै।।तिसमेंसिंघासनहै।।
सपरकमलहै।।ऊपरभगवानअंतरीषपद्मासनविराजमानहैसोईक
हो।मधप्रदेशत्रिमणिमयपीठतहांबने।।गंधकुटीसिंघासनकमलसुहावे
ने।।तीनछत्रसिरसोहितत्रिभुवनमोहिये।।अंतरीषकमलासनप्रभुतहंसो
हये।।तथाचोक्तंयशस्तिलकनामेमहाकाव्ये।।समोसरणमध्येअर्हत्स्वरूपंणं।।
श्लोक।।देवंदेवसभासीनंपंचकल्याणनायकं।।चतुस्त्रिंशद्गुणोपेतंप्राति
तिते।।औरजहांरेवतीराणीकीपरीक्षानिमित्तक्षुल्लकनेंमायामयी
री।।तहांतीर्थंकरकारूपपद्मासनही।।समोसरणकेमध्य
दिषाया।।यहप्रसंगश्रीसमंतभद्राचार्यकृतरत्नकरंडकनामग्रंथकीटीका

तरायकेक्षयतेंक्षायिकदानलाभादिकीप्रवृत्तिअनंतवीर्यअव्याबाधसुषकर
संतवे॥जेसेंअनंतवीर्यकेवलज्ञानकरिसंभवे॥यहकथनसर्वार्थसिद्धिनामट
कामेंजाननां॥३४॥चरचाचैंतीसमी॥प्रश्न॥समोसरणविषेतीर्थंकरकेवलीक
नंकैआसनरहै॥समाधान॥तीर्थंकरमहाराजसमोसरणविषेंपद्मासनहीरहै॥
यहनियमहै॥औरजैसेंवज्रविषेंउकेरीप्रतिमानिश्चलहोयऐसेंनिश्चलर
है॥तदुक्तं॥महापुराणे॥श्लोक॥नवकेवललब्धादिगुणार्द्धचतुष्टयः॥अने
कसंहतिर्वज्रशिलोत्कीर्णइवाचलः॥१॥इसश्लोकमेंअर्हत्केवलीकास्वरू
पसमोसरणविषैंअत्यंतनिश्चलवताया॥इहांकोईकहै॥अर्हत्केवलीसमो
सरणमध्यनिश्चलहैयहतोप्रमाणहै॥औरपद्मासनहीरहै॥ऐसानियमकहां
कीनाहै॥तिसकाउत्तर॥प्रथमहीरूपचंदपंडिततेंपंचमंगलविषेंसर्वतो

वृषरसीसमो॥२४॥नदाकर्णनमात्रेणसत्वरःसर्वसंगतः॥चक्रवर्तीनमस्येत
त्रिःपरीत्यकृतस्तुतिः॥२५॥महामहमहापूजांभक्त्यानिर्वर्त्तयन्स्वयं॥चतुर्द
शादिनान्येवंभगवंतमसेवत॥२६॥३२॥चरचाबतीसमी॥प्रश्न॥चौवीसतीर्थं
करकिसकिसआसनसैंमोक्षहूवे॥समाधान॥ आदिनाथ॥१॥वासपूज्य॥२॥
नमनाथ॥३॥एतीनमहाराजपद्मासनसैंमुक्तहूवे॥बाकीइकीसतीर्थंकरकायो
त्सर्गासनसैंमुक्तहूये॥इसकाप्रमाणत्रिलोकप्रज्ञप्तिनामग्रंथविषैकह्याहै॥त
थाहि॥गाथा॥उसहोयवासपुज्जो॥णेमीपल्लंकवद्धयासिद्धा॥काउस्सग्गेण
जिणासेसामुत्तिंसमावण्णा॥३३॥चरचातेतीसमी॥प्रश्न॥केवलीकैप्रतिसम
यअसाधारणशुभफलवर्गणाशरीरसौंसंबंधकरै॥यहक्षायिकलाभहूवा॥सिद्ध
पर्यायविषैक्षायिकलाभकाप्रसंगकैसैंसंभवै॥समाधान॥पंचप्रकारअ

होयचलेजांहि॥५णा॥मकोंनहे॥यहवातकैौंकरहै॥समाधान॥ ॥प्रथमतौती
र्थंकरकेवलीश्रंतमैंविहारकरिकैंश्रावै॥नवपद्मासनतथाकायोत्सर्गासन
यप्पानियोगनिश्चलहोयतिसें॥हलनचलनरूपकाययोगकीक्रियाउपदेश
रूपवचनयोगकीक्रियासवरहिजाइ॥वारहसभाकेजीवश्रंजलीजोडरहैं॥ऽ
सन्नौंतिउत्किष्टपनैंएकमासपर्यंतयोगनिरोधकारीतमहापुराण॥विषेंकह्यो
है॥रिषभदेवजीजोगनिरोधकीना॥तवचौदहदिनताई॥भरतजीनैंनिरंत
रपूजाकरी॥तथा॥आदिपुराणे॥सप्तचत्वारिंशत्तमंपर्वणि॥॥सतांसत्फलसंप्रा
सौ॥विहरन्स्वगणैः समं॥चतुर्दशदिनोपेतः॥सहस्राष्टोनपूर्वकं॥२२॥लत्तंके
लासमासाद्यश्रीसिद्धशिखरांतरे॥पौर्णमासीदिनेपौषेनिरिच्छःसमुपाविशत्
॥२३॥धनोभगवताद्विमसंहतेसमुकुलीभवत्॥करांबुजासभाजाताप्रह्ली

त्रिलोकप्रज्ञप्तिमेंहै॥तथाहिजिसिंतरूणि मूल॥उप्पन्नंनाणकेवलंणाणं॥उसहप्पाऊ
हिजिणाणं॥नेचेवऊसोयरुकंति॥३४॥चरचाचौतीसमी॥प्रश्न॥समवसरणमेंरू
पकेंवेहै॥तिनकीउच्चतातथाविस्तारक्याहै॥समाधान॥इनकेप्रमाणकाकथ
नसांप्रतउच्छिन्नहै॥तदुक्तं॥दोहत्तरुंदमाणं॥नाणंसंपइपणट्ठउवएसं॥तथा
अभिसयक्वणपदाहिणं तेसु कुव्वंति॥२॥ औरइसगाथामेंयहनीकह्या॥तथज
इनकादर्शनहोय॥अभव्यकोंनहोय॥ऐसेंहीहरवंसमेंहै॥तथकूटा
ख्यायस्तूपा॥नालकूटास्ततोपरं॥यानरत्मानपश्यंति॥अभव्याबांधीकृतेक्षणाः
॥१८सश्लोकमेंसूपनकेदोयभेदजानने॥३५॥चरचापैंतीसमी॥प्रश्न॥कोईऐसे
कहेहैं॥जबतीर्थंकरकेवलीकीआयुछहमासबाकीरहै॥तबकनपरोहोजा
य॥समवसरणकीरचनानरहै॥बारहसभाविघटजाहि॥देवताप्रभुपपास

वैश्राह्सुनैंआंषसौंदेषै।श्राह्सुनैंमनसौंजानैं।तवछद्मस्तकीनांईइंद्रीगपानज्ञ
वा।सौनसंभवै।केवलीप्रभुकैंइंद्रियनतौसवहैं।परंतुइंद्रियनमज्ञाननहीं।जो
वकैंदर्शनगपानमनुष्यगुणथसोप्रगटहुवे।स्वभावरूपहुवे।तातैंअतींद्रिय
ज्ञानसौंसवजानैंहै।अतींद्रियदर्शनसौंसवदेषैहैं।तिनकेआगैंइंद्रियज्ञानव
लहुवासूर्यमंडलकैसमीपदीपकेप्रकासकीनांई।३।अववचावनीसमौ।प्र
श्न।तीर्थंकरकेवलीकैंआवप्रातिहार्यविषयअशोकवृक्षहै।सोकाहेकाह
वहै।समाधान।जिनवृक्षकैनीचैंतीर्थंकरप्रभुकौंकेवलज्ञानउपजै।सोईह
मसमोसरणविषैंअशोकवृक्षकहावै।आदिनाथजीकौंवटवृक्षनीचेंज्ञान
हुवा।अजितनाथजीकौंसप्तपर्णकेवृक्षतलैंज्ञानहुवा।इत्यादिचौवीसती
र्थंकरकेज्ञानवृक्षहैं।तेईअशोकनिवारणतैंअशोकवृक्षजाननैं।यहकथन

तैसैं इन विषैं पदार्थ का अस्पष्ट संबंध होइ॥ तब व्यंजनावग्रह है तें दोय तीन समय।
अर्थ का प्रगट ग्रहण नहीं॥ कोरे सरावे पै जल बिंदु की नाईं॥ पीछें अर्थावग्रह सौं
प्रगट ग्रहण होय है॥ मन और नेत्र इंद्री इन दोनौं कै अर्थावग्रह ही है॥ जातैं इनकैं
पदार्थ के स्पष्ट संबंध विना ही दूर ही तैं ज्ञान होय है॥ व्यंजनस्यावग्रहः॥ न चक्षुरनिंद्रि
याभ्यां॥ इति वचनात्॥ इस हेतु सौं स्पर्शनादि च्यारौं इंद्रियन कै व्यंजनावग्रह अ
ग्रह दोनौं है॥ मन कै और नेत्र इंद्रिय कै एक अर्थावग्रह जानना॥ इस प्रकार
अपच्छा सौं स्पर्शनादि च्यारौं इंद्रिय विषैं स्वयोग्य विषय ग्रहण रूप गुण प्रफु-
ली कहे हैं॥ मन इंद्री नेत्र इंद्री विषैं आलोक गुण है॥ यातैं यह बात सिद्ध हुई देष।
नाज्ञान नाणघरू गुण जीव कै है॥ बाको सर्व ग्रहणादि गुण प्रफुलकै है॥ अ
सें न होय तो केवली कौ॥ शीतोष्ण की बाधा होइ॥ रसास्वाद होय तु गंध दुर्गंध आ

इसमांतिपदारथकाग्रहणानहींहोहै।इनकेंपदार्थकेस्पर्शविनाहरदीतैंग्रहण
होइहैनेत्रकजलवत्।यातेंइनकेंअस्पष्टसंबंधज्ञानहै।नेत्रेंद्रियअपनेस्थानही
तेंरूपवर्णअग्निकोदेषैहै।स्पर्शनजिह्वानासिकाकर्णेंद्रियकेविषयकीनांई
अग्निनेत्रसोंसंबंधनहींहोता।ऐसेंहीमनअपनेंस्थानरहेंहै।घटपटादिपदा
र्थकोंहरिदीतैंजानेंहै।घटपटादिकापर्वतग्रामनविषैनहींजावैहै।औरसूत्र
जीमेंजीमतिज्ञानकेअधिकारविषैअवग्रहआदिच्यारभेदकहेहैं।तहांअ
वग्रहनामप्रथमही।अपूर्वपदार्थकेंकिंचितग्रहणकाहै।तिसकेदोयभेद
एकअर्थावग्रहहैदूजाव्यंजनावग्रहहै।जोप्रगटअवग्रहहोयतिसेअर्थावग्रह
कहिये।अरुजोअप्रगटहोइ।तिसेंव्यंजनावग्रहकहिये।सोस्पर्शनजिह्वा
नासिकाकानइनच्यारोंइंद्रियनकेंव्यंजनावग्रहपूर्वक।अर्थावग्रहहोहै।जा

नाहि चारों इंद्रियन विषे पुद्गल का गुण है यह भिन्नता कौं कर जांनी गई ॥ तिसका
उत्तर ॥ पदार्थ अरु इंद्रिय इन दोनोंके परस्पर संबंध कुं आसंतैं पदार्थ ग्रहणरूप ज्ञान
होइ है सो ग्यांन दोय प्रकार है ॥ एक स्पष्ट संबंध ज्ञान है ॥ एक अस्पष्ट संबंध ज्ञान है ॥
जो ज्ञान पदार्थके स्पर्शसों होइ ॥ तिसे स्पष्ट संबंध ज्ञान कहिये ॥ अरु जो पदार्थके
स्पर्श विना ॥ दूरि ही तें ग्यान होय ॥ तिसे अस्पष्ट संबंध ज्ञान कहिये ॥ स्पर्शनां
नासिका कर्ण इन चारों इंद्रियन सों पदार्थके स्पर्श विना ॥ ज्ञान नहीं होत है ॥ स्प
र्शइंद्री तो स्पर्शादिका ग्रहण तव करे है ॥ तव ताती शीली व्याल आइ लगे है ॥ जीभ र
तव आस्वादै है ॥ जव मिष्टाम्लादि रसका स्पर्श करे है ॥ नासिका त
व सुगंध नासिकामें प्रवेश करे है ॥ कांन तव सुने है ॥ जव शब्द कानमें आवे
है ॥ तातें इन च्यारों इंद्रियनकें स्पष्ट संबंध ज्ञान है ॥ नेत्र इंद्री अरु मन ये दोइ इन

विषयकाग्रहणाकरैहैयहग्रहणसामर्थ्यरूपग्रहणगुणकिसकाहै॥जीवकाकहैतौ
मुक्तजीवकेंवनाबोपुद्गलकाकहैतौमृतककेंवनाबौ॥समाधान॥जीववस्तुतौ
अपनेदर्शनज्ञानरूपउपयोगमयीहै॥जीवोउवउगमउ॥इतिवचनात्॥योतंजीव
केतौमुख्यगुणदोयहीहै॥देषनाजांननांसोछिनाचअवस्थाविषैनेत्रंइंद्रियसोंदेषै
है॥मनइंद्रियसोंजानैहै॥औरछदमावस्थाविषैकेवलदर्शनसोंदेषै॥केव
लज्ञानसोंजानैतिसतेंसंसारविषैनेत्रंइंद्रियतथामनदोनो॥विषैसुषोपविषय
ग्रहणरूपगुणहैसोजीवकाहै॥वाकीस्पर्शनिआदि॥चारोंइंद्रियविषैसुयो
गपविषयग्रहणरूपगुणहैसोपुद्गलकाहै॥अवमृतकनबोलाबोले॥तौमृतकमें
कौंनकहै॥तिसकाउत्तर॥मृतकमेंकहांसोंदोयदेषनेंजाननेंवालातौजाता
रहा॥फिरछूटीनेत्रऔरमनइनदोयइंद्रियनविषैजीवकागुणहै॥वाकीस्पर्श

अर्धमागधिकाकारभाषापरिणताखिलः। त्रिजगज्जनतामैत्रीसंपादनगुणाद्भुत
:॥११॥ इहांकोई पूछै। और संदेह करै। आवधातदार्यमें भगवानकी दिव्यध्वनिमेघ
कीगरजसमांन निरक्षरी है सो अर्धमागधीरूपक्योंकर होहै॥ तिसका उत्तर॥ भाव
कालध्वनिश्रोताजनके कर्णप्रदेशपर्यंत पोहचै नही॥ तावत्काल निरक्षरी है सो
है सकलभाषा॥ रूपहोनेंको योग्य अर्धमागधी होयपरिणवै है॥२०॥ चरचा तीस
मी॥ प्रश्न॥ समवसरणमें केवली कहां तिष्ठै है। समाधान॥ ध्वजास्थानके आगे सद
उपर महोदयनाम मंडप है॥ तिसके परिवार मंडपविषें तिष्ठै है॥ हरिवं
शविषे कथन है॥३०॥ चरचा तीसमी॥ प्रश्न॥ स्पर्शनेंद्री शीत उष्ण आदि स्पर्शका ग्रह
करै है॥ रसना रस ग्रहण करै है॥ नासिका गंधकों ग्रहै है॥ कर्णइंद्री शब्दकों ग्रहै
है॥ नेत्रइंद्री रूप देषै है॥ मन इंद्री सब जानै है। ए मनसमेत छ है। इंद्री अपनें सुयोग्य

विषयप्रियहितवचनकहे।सोगृहस्थाश्रमविषयतीर्थंकरकेवचनकीप्रसं
सांकही॥औरचउदहदेवकृतअतिशयमेंसर्वार्द्धमागधीभाषाहै।सोसबको
हितकारिअर्द्धमागधीनामभाषारूपहै॥भगवंतकीनिरक्षरीधुनिसकलभाष
रूपहोनेकोयोग्यहै।सोमागधनामदेवताकिसमीपभावसे॥अर्द्धमागधीरू
पहोवैयाहीभाषासमोसरणवर्त्तीसवजीवसमझैहै॥यातेंदेवकृतअतिशय
मेंगिनीअर्द्धमागधीभाषाजानणी॥इहांकोईपूछै॥अर्द्धमागधीभाषाक्याकहा
वे॥तिसकाउत्तर॥सातजातकीप्राकृतभाषा॥मेंएकअर्द्धमागधीभाषाहै॥तथाहि
॥श्लोक॥मागध्यावंतिकाप्राच्यासौरसेन्यर्द्धमागधी।वाल्हीकीदाक्षिणात्याचभा
षाःसप्तप्रकीर्तिताः॥१॥औरकोईपूछै॥समोसरणमेंसवहीअर्द्धमागधीभाषा
समझैयहवातकहांकहीहै॥तिसकाउत्तर॥आदिपुराणमध्येकहीहै॥श्लोक॥

रोत्तिक्कवणाणारेणामसोमि॥२७॥वस्त्राग्रगाईसमी॥प्रश्न॥तीर्थंकरप्रभुकेरस्ताज
न्मातिशायमेंअनंतबलकह्या॥ताकरिमाहाराजलोकस्कंधकेउवावनेको
समर्थहै॥केवलज्ञानकेसमयअनंतबीर्यकह्या॥इनदोनोमेंविशेषक्या॥समा
धान॥जन्मातिशायविषेअनंतबलदेहबलकीअपेक्षासोहै॥केवलज्ञान
कीवारअनंतशक्तिजाननी॥तदुक्तं[illegible]॥श्लोक॥विश्वं
तोपीश्वायस्तेनस्तःअसक्रमो॥अनंतवीर्यताशक्ते॥स्तन्माहात्म्यंपरिस्फुटं॥२
२८॥वस्त्राग्रनंतीसमी॥प्रश्न॥तीर्थंकरकेवलीकेछयालीसगुणविषयवानीका
प्रसंगतीनवारआया॥प्रथमजन्मातिशायविषेप्रियहितवचनआणिफेरदेव
कृतचौदहअतिशयमेंसकलार्द्धमागधीभाषाआई॥फेरआठप्रातहार्यवि
दिव्यध्वनिकही॥तिनमेंविशेषक्या॥समाधान॥प्रथमदशसहजअतिशाय

मवानुडुपरिषत्परवर्तिसोमवत्॥१॥ श्रीगिरुचिस्तुचिस्थल्कलो हितं॥ सुरशिखरं विर
जो निजं वपुः॥ तवन्नि विमतिविस्मयं यतो॥ यदपिवा स्ननसीयमी हितौ इत्यादिक्षा
गमोक्त अर्थकों मिलायकैं यथावत् श्रद्धान करना उचित है॥२५॥ चरचा छवीस
मी॥ प्रश्न॥ संहननकौनकौन जागै है॥ और कौन जागै नही॥ समाधान॥ गुरण १ नर
क २ एकेंद्री ३ कारमान ४ आहारक ५ चौदहां गुणस्थान ६ इन छह जागै संहनन न
ही॥ बाकी और जागैं संहनन है॥२६॥ चरचा सत्ताईसमी॥ प्रश्न॥ तीर्थंकर केवली
के बयालीस गुण कहे॥ और सामान्य केवली कै कितने हो हि॥ समाधान॥ तीर्थं
कर केवली कैं तथा सामान्य केवली कै अनंतचतुष्टय तौ समान है॥ और गुण
कोई न होय॥ या हितैं त्रिलोकप्रज्ञप्ति विषै तीर्थंकर केवली कैं बयालीस हो गु
ण कहे॥ तथाहि॥ चउतीसातिसयेहि॥ अट्ठमहापाडिहेरसंजुत्ता॥ मोक्खयरे तिछय

निषेधनजाननाऊधातनकानिषेधहै॥ औरजोऽसकथनमेंसंदेहकोउतेतोती
र्थंकरकेवलीकेंछयालीसगुणकहेहैं॥ छयालीस२ हैं। ता॥ तिनछयालीसगुणवि
षेंक्षीरवर्णरुधिरवज्रऋषभनाराचसंहननहै॥ संहनननांवअस्थिकाहै॥ ऽर्या
बनाछयालीसगुणकाजोडकैसेमिले॥ यातेंपरमौदारिकमेंसातऊधातनहै
॥ इतनेंपरतीचित्तमेंनआवैतो आदिपुराणकेपचीसवेंपर्वविषेंभगवंतके
समवशरणमेंइंद्रनेंस्तुतिकीनीहैतहांदेषना॥ तथा॥ श्लोक॥ अस्वेदमलमा
त्तिसुगंधस्तुभलक्षणंसुसंस्थानमस्तासृग्वपुर्वज्रस्थिरंतव॥ इसश्लोकमेंअ
स्तासृकाऽसपदकरिक्षीरवर्णरुधिरकह्या॥ तथाश्रीसमंतभद्राचार्यकृतवृ
हत्स्वयंभूविषेंमुनिसुव्रतस्वामिकेस्तवनमेंभीऐसेंहीकह्याहै॥ तथाहि॥
अधिगत्तिमुनिसुव्रतस्थितिमुनिवृषभोमुनिसुव्रतोनघः मुनिपरिषदि

परमोदारिकशरीरविषैं श्रोर केवलीके परमोदारिकविषैं फेर क्या कहा॥ अथवा
तीर्थंकरही केवली होय तब क्या विशेष होय॥ तिसका उत्तर॥ चौदहै गुणस्थानके
अंत सब ही का सरीर बादर निगोद रहित होय॥ यह नियम ही है॥ तदुक्तं गोमट्टसा
र गाथा॥ पुढवी आदि चउण्हं॥ केवलिआहार देव णिरयंगा॥ अपदिट्ठिदा णिगो
दहि॥ पदिट्ठिदंगा हवे सेसा॥ इस गाथा मैं आवजोगें बादर निगोदका निषेध कीं
या॥ यातें केवलीके परमोदारिकशरीरविषैं श्वेतरुधिर श्वेतमांस बताया॥ औ
र ज्ञानार्णव नाम शास्त्रविषैं केवलीका शरीर रसरुधिरादि धात वर्जित कह्या॥
सो वह यह कथन कैसैं मिला॥ तथाहि॥ सप्तधातुविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीकटा
क्षितं॥ अनंतमहिमाधारं सयोगिपरमेश्वरं॥ इस श्लोकके अर्थ मैं केवली
का शरीर सात धात रहित है॥ तिसका उत्तर॥ केवलीके परमोदारिकमैं धातनका

जो॥तथाहि॥तदसमरूवेगात्रंपरमोदारिकाक्यमहास्तुस्यनिःश्रेयःसार्थानांमू
लकारणं॥तेरूवेगुणगोपरमोदारिकशरीरसदकाकस्य॥तिसकासरूपतथाति
सकीसाषिकुंदकुंदाचार्यकृतज्ञानपाहुडमेंदेषनो॥तथाहि॥तेरहसंगुणगाणेस
जोयकेवलियहोयअरहंतो॥चउतीसअइसयगुणाहोंतिऊतस्सअपडिहारा॥४
एयत्रेवपंचिंदियजीवगणेसुहोयचउदसमे॥एदिगुणगणजुत्तो॥गुणमारूहो
हवेअरहो॥५जरमरणदुरकरहियंआहारणिहारवज्जियंविमलं॥सिंहाणखे
लसेआणिछिडुगंछाइदोसोय॥६॥दरपाणापज्जत्ती॥अवसहस्सायलरकणात्र
या॥णीखीरसंखधवलामंसरुहिरंचसव्वंगे॥७॥एरसगुणेहिजुत्तं॥अइसयवंतं
॥उरालियंचदवं॥णायवोअरुहपुरुसस्स॥५॥यहगाथानविषे
अर्थतीर्थकरकेवलीअपचासोंजानना॥इहांकोईपूछे॥गृहस्थतीर्थकरके

रिकशरीरकाहोयसेदएकऔदारिक॥दूजापरमौदारिक॥जहांरसरुधिरादिमांतो
धातअपवित्रहोहि॥जिनकास्पर्शरसवर्णगंधगिलानउपजावे॥ऐसेदोदिदोष॰
पाइये॥रागसोंकलंकितहोयइत्यादिऔदारिकसरीरकेलछनजाननें॥औरज
हांरसरुधिरादिसप्तधातुकुधातरूपनहोहि॥पवित्रहोहि॥सुगंधसुवर्णहोहि॥जि
रोगप्रस्वेदनासामलकर्णमलनेत्रमलषषार॥इत्यादिकोईदोषनपाइये॥
एपरमौदारिकशरीरकेलछनजाननें॥सोगृहस्थावासमें॥तीर्थंकरविनाऔ
रकानहोय॥केवलज्ञानकुंवेसवकाहोय॥यहनियमहै॥उत्कृष्टऔदारिक
कहै॥ताबेंपरमौदारिककहै॥इहांकोइपूछे॥तीर्थंकरकापरमौदारिकशरी
रगृहस्थपदमेंहोय॥यहबातकहांकहीहै॥तिसकाउत्तर॥इसकथनकीसाषि
आदिपुराणमध्येपंद्रहेपर्वविषेंस्वामिकेकुमारकालवर्णनप्रसंगमेंदेषली॥

पक्करसहै॥२॥रुधरकीउपधातपित्तप्रकोपतेंअधोर्द्ववाहीरक्तहै॥३॥मांसकीउपधात
वसाहै॥४॥मेदनामधातकीउपधातस्वेदहै॥४॥अस्थिकीउपधातदंतहै॥५॥मज्जा
कीउपधातकेशहै॥६॥शुक्रनामधातुकीउपधातुओजहै॥सोअष्टबिंदुप्रमाण
सचिक्कनश्लेष्माकारवीर्यधातकासारहै॥उसकेअस्तित्वसोंजीवकाअस्तित्व
हैं॥उसकेक्षयसोंमरणहोहै॥पक्षीकेअंडाकेदेहकीस्थितिकोंतथावृद्धिकोंव
हीकारणहै॥स्त्रांकोईपूछे॥अंडांकोपक्षीसेवेहैं॥उसगरमीकानावहमआ
जसुनाहै॥तिसकाउत्तर॥ऊंजनामपक्षीत्रसहै॥अंडेधरकेफरअंडांसोंमिले
नहीयहओजाहारतहांकोंकरिसेवेहैं॥५॥वृक्षजातिकेलपकाआहारहैपा
नीलगेयहीलप॥यहछहप्रकारकीआहारकास्वरूपजानना॥२७॥वस्त्वापत्ती
[illegible]॥प्रश्न॥परमौदारिकशरीरकाक्या [illegible] स्वरूपहै समाधान ओदा

च०स०
उ०

नोकर्मका आहार बताया॥ कोई कहै॥ अनाहारक काल विना तौ नोकर्मका
ग्रहण तौ समस्त संसारी जीवनकै है॥ केवलीकैं कौन सा विशेष है॥ तिसका उत्त
र॥ केवलीकैं लाभांतराय कर्मके क्षयतें॥ अनंतलाभ प्रगट भया तातें अपूर्व अ
साधारण पुद्गलका प्रतिसमय केवलीकी देहसों संबंध होय है॥ यही नोकर्माहार
केवलीकैं शरीरकी स्थितिका कारण है और नहीं॥ इस हेतुसौं केवलीकैं नोकर्म ही
का आहार कह्या॥ १॥ नारकीनकै नरकायु नामकर्मका उदय देहकी स्थिति कौ
कारण है॥ तातें इनकै कर्म हीका आहार कह्या॥ २॥ देवतानिकै मनहीसौं तृप्त होय है॥ ता
तें इनकै मानसी आहार कह्या॥ ३॥ मनुष्य तथा तिर्यंचकैं कवलाहार प्रसिद्ध ही है
४॥ पक्षीनके अंडे विषै उज्जाहार है॥ सो उजका काहा है॥ शरीर विषै परसादिस
प्त धातु है॥ तिन हीके विकारसौं उत्पन्न सो तत्त उपधातु है॥ प्रथम रस की उपधातु अ

उ०

मौदारिकदेहकाधारणहारहै॥सोदेहजातिमैं॥औदारिकहैवैक्रियकतथा॥आ
हारकीजातिनहीं॥सातउधातसोंरहितउदारिकहै॥तातैपरमौदारिकसंज्ञा
जांननी॥तदुक्तं॥ज्ञानप्राभृतमध्येश्रीकुंदकुंददेवैः॥उरालियंचदहं॥णाय
अरुहपुरुसस्स॥इतिवचनात्॥तहांयहसंदेह॥तिसऔदारिकदेहकीस्थि
कवलाहारविना॥स्थिआनकोंउसर्वतांईकादेसोंहोय॥समाधान॥आ
दस्तुहै॥नोकर्माहार१॥कर्माहार२॥कवलाआहार३॥लिपाहार४॥उजाहार५
नसीआहारईयहछप्रकारकाआहारयथासंभवदेहकीस्थितिकोंकारण
है॥गाथा॥णोकम्मकम्महारो॥कवलाहारोयलेवमाहारो॥उज्जमणोवियक
म्मो॥आहारोछविहोणेणिओ॥१॥णोकम्मंतिच्छयरे॥कम्मंणारयमाणसोअम
रा॥णरपसुकवलाहारो॥पक्कीउज्जाणगलेउ॥२॥अबयेमहीतीर्थंकरकेवलीके

कातुदाहरणसमझना॥विशेषइतनातीर्थंकरप्रकृतिकाबंधहैहै॥तिसतैंवि
पाकोदयविना॥प्रदेसोदयतैंजातनरहै॥अवसप्रश्न जोवै तीर्थंकरहोयहीहै
य॥तद्भवहोयतथातीसरेंभवहोय॥औरआयुवंधविना॥चारोंगतिकावंधवि
पाकोदयविनाप्रदेशोदयतैंषिरायकेंमुक्तहोय॥इसप्रकारआयुविनासात
कर्मविषेप्रदेशोदयऔरविपाकोदयजानना॥आयुकर्मविषेप्रदेशोदयन
हीहोते॥विपाकोदयकाहीनियमहै॥इसकोंतिप्रदेशोदय॥विपाकोदयका
स्वरूपहै॥तेरहैगुणथानमेंवयालीसप्रकृतिकाउदयहै॥तिनमेंकेतीककाप्र
देशोदयहै॥औरकेतीककाविपाकोदयहै॥औरचौदहगुणथांनें॥वहत्तर
प्रकृतिकाप्रदेशोदयहै॥तेरहप्रकृतिकाविपाकोदयहै॥सोईअंतकेदो
यसमयविषेतिनकोउदयजानना॥२७॥चरचाचौवीसमी॥प्रश्न॥केवलीपर

है॥उदयमेंनहीं॥उदयतौसंज्वलनकौहै॥तिसतैंश्रावकषायकाजोउदरणाहै॥ति
सउदयकोंप्रदेसोदयसंज्ञाहै॥औरछत्तीसप्रकतिमें॥एकेंद्रियादिप्रकृति॥३॥
नांमकर्मकीजोगई॥तिनींप्रदेशोदयवीकरिषिरी॥जातेंएकेंद्रियादिप्रकृ
।विपाकोदयतें॥अपनीअपनीगतिविषेंहोहै॥औरतीनवमेंगुणस्थानविषेप्र
कृतिनकाउदयहैसोप्रदेशोदयतेंजाननां॥अथतीर्थंकरप्रकतिकाबंध
होहै॥तबअंतःकोटाकोटीमात्रस्थितिलीयेंहोहै॥यहनियमहै॥तिसकाआ
बाधाकालअंतमुहूर्तमात्रहै॥तिसपीछैंप्रदेसोदयतेंषिरनलगै॥उत्किष्टतीन
नवपर्यंतअसंख्यातकालताईचलाजाय॥औरयहप्रकतिध्रुवबंधहै॥तिसेह
धीस्थितिमांहि॥असंख्यातवर्षकीस्थितिअरप्रदेसोदयहोयकें॥प्रदे
॥इसजांतिनिरंतरउदरणनिरंतरबंधचलाजाहै॥यहजै

समकेतीचौदहैसाताकाउदयप्रगटहीहै॥ औरजोसाताकेउदयकीविछित्ति
करैतौअनंतचतुष्टयविराजमानकेवेकेअसाताकाउदैकछुकरणसमर्थन
ही॥ उपचारमात्रहै॥ २२॥ चरचातेवीसमी॥ प्रश्न॥ तेरहैचौदहैगुणथांणेकेतीए
कपापप्रकृतिसत्ताविषैहै। उदैविनांकिसहीप्र कृतिकाउदयहोतानहीं॥ सो
सत्तातौसंभवै। उदैक्योंकरसंभवै॥ समाधान॥ कर्मोंकाउदयदोयप्रकारहै॥
एकरसोदय। दूसराअनुदयरसोदयकादूसरानांवविपाकोदयहै। अनुदयक
ादूसरानांवप्रदेसोदयहै। जिसप्रकृतिकाजैसारसहै। तैसाप्रगटरसदेकरि
षिरै। तिसेविपाकोदयकहिये। औरविनाहीरसदीयेंजोषिरैतिसेप्रदेसोद
यकहिये॥ तिसकाउत्तर॥ तेवेगुणथांनेंछत्तीसप्रकृतिकाउदयहोहै। सोउद
यहोयकेहोहै। तहां अप्रत्याख्यानी ४। प्रत्याख्यानी ४। एवंकषाय ८। सत्तविषै

मेंएकजीवसाताअसाताविषैकिसीएककीउदयविछित्तकरै।तोपूर्वोक्त
बयालीसप्रकृतिमेंतीसकीउदयविछित्तहोयवाकीबारहकीउदयविछि
दहहोय।औरनानाजीवकीअपेछातेरहेगुणथांनेसाताअसाताविषइकिसै
कीविछित्तनकरै।तोउनतीसप्रकृतिकी।उदयविछित्तइहांहोय।वाकीतेर
हकीचौदहेगुणथांने।उदयविछित्तहोय।यहकथनगोमटसारकेउत्तराई
विषैहै।इहांकोईऔरकहैछै।तेरहेगुणथांनेएकजीवके।साताअसाता
उदेकहा।उदयविछित्तदोनोमेंकिसीएककीकही।जिनअसाताकीउद
यविछित्तकीनोहोय।तिसकेचौदहेगुणथांनेसाताकाउदयसंभवै।
नसाताकीउदयविछित्तकरी।तिसकेचौदहेविषयअसाताकाउदयकयासंभ
वे।तिसकाउत्तर।जोजीवतेरहेगुणथांनेअसाताकेउदयकीविछित्तकरै।

नीवंधरूपनहीं॥अनंतगुणहीनशक्तिऔरनिःसहाय॥अव्यक्तउदैरूपहै।
सोउत्कष्टविशुद्धतासें।अनंतगुणअनुभागलीएवर्त्तमानउदैसातावेदन
।तिसस्वरूपपरिणवैहै।औरअसातासाताकाउदैअसातारूपहोयपरिणवै॥
औसेंनकह्याजाइ॥इसप्रकारइतनेंपूर्वोक्तक्षुधादिपरीसाकावाधाकेवली
केंनहीं॥सूत्रजीमेंकहीहैसोकारणविषैंकार्यकाउपचारहै॥मुख्यतासेंति
नकाअभावहीजाननां॥अयोगकेवलिकेंबारहप्रकृतिकाउदैहै॥एकतर
वेदनी १ मनुष्यगति २ पंचेंद्रियत्व ३ सुभग ४ त्रस ५ बादर ६ पर्याप्त ७ आदे
य ८ यशःकीर्त्ति ९ तीर्थंकरत्व १० मनुष्यायु ११ उच्चगोत्र १२॥इहांकोईपूछै॥तेर
हेंगुणथानेंसाताअसातादोनोंकाउदैपाइये॥चौदहेंएकजीवकेदोनोंमें॥ए
कहीकाउदैपाईजै॥नानाजीवकीअपेक्षादोनोंकापाइये॥सयोगगुणथा

हीहोहै॥भावार्थ॥जोकर्मजघन्यमध्यउत्कृष्टस्थितिलीयेंनीचलिगुणस्थानोंवं
धेहै।सोयथायोग्यअपनेंआवाधाकालकेअंतरसोंउदैआवेहै।जबसांईक
र्मेवंधनुदैउदीर्णाकोयोग्यनहोयतबतांईआवाधाकालकहिये।जोकोडा
कोडीसागरप्रमाणकर्मकीस्थितिवंधहोय।तौउसकाआवाधाकालसौव
रसकाकह्याहै।ऐसेंसवसातकर्मोकीस्थितिकेअनुसार।आवाधाकालजा
नना।आयुकर्मकाआवाधाकाल।वंधकालतैंजाणायुहै।इहांकेवलीकेंक
षायकेअभावसेंस्थितिवंधविनासमयस्थायीवंधहै।तिसतैंआवाधाका
लकाहूकाहोय।यातैंयहवंधहूसरेहीसमयउदयात्मकहै।तेनतत्रअसा
तोदयःसातस्वरूपेणपरणमति॥ताकारणकरिसयोगकेवलीकेंअसाताका
उदैहैसोसातास्वरूपहोयपरिणवैहै॥भावार्थ॥सयोगकेवलीकेंअसातावेद

न्तसुषदुषचाहैसोतौनहीकुतः कांहैते॥तस्यंद्रियजत्वात्॥तिसदुषदुषकोइं
द्रियजन्यत्वहै॥तातैंनांबार्ध॥साताअसाताकेउदैजोसुषदुषहैसोइंद्रियजनि
तहोहै॥केवलीकेइंद्रियविद्यमानहैं॥परंतुइंद्रियज्ञानकेअभावतेंइंद्रिज
न्यसुषदुषकोवेदकनहीं॥औरसहकारीकारणरूपमोहनीकेअभावसौं॥
रागद्वेषविनाइष्टानिष्टविकल्पकाअभावहुवा॥इतनेंकारणसोंकेवलीकें
साताअसाताकाउदैसुकार्यकरनेकौसमरथनहीं॥१४॥आगेंरसहीअर्थके
दिढकरनेंकोंयुक्तिदिषावेहैं॥गाथा॥समयट्ठिदिगोवंधो॥सादस्सुदयप्पगो
जह्मा॥तस्सातणअसादस्सुदउसादसरूवेणपरणामदि॥१॥अर्थः॥यतः॥तस्म
केवलिनः सातवंधः समयस्थितिकः॥जातेंतिससयोगकेवलीकेंसातावेद
नीकावंधहै॥सोसमयस्थायीहै॥ततः उदयात्मकःावस्मात्॥तातेंउदयात्मक

गति१ औदारिक२ औदारिकांगोपांग३ तैजस कार्मण४ संस्थान६ वर्णचतुष्क
४ अगुरलघु४ उपघात१ परघात१ उस्वास१ प्रत्येकशरीर१ मनुष्यगति१ पंचें
द्रियत्व१ सुभग१ त्रस१ बादर१ पर्याप्त१ आदेय१ यशस्कीर्ति१ तीर्थंकरत्व१॥
मनुष्यायु१ उच्चगोत्र१ एवं ४२॥ इहां कोई पूछै॥ तेरह गुणथानै साता वेदनी अ
साता वेदनी दोनोंका उदय कह्या तहां साता वेदनी का उदै तौ प्रगट है॥ असा
ता वेदनी का उदै क्यों कर संभवै॥ तिसका उत्तर॥ केवली कै असाता वेदनी
के सद्भाव तें ग्यारह परीसा कही है॥ एकादश जिने॥ इति सूत्रात्॥ ते कौन॥ क्षुधा
१॥ पिपासा२॥ शीत३॥ उष्ण४॥ दंसमसक५॥ चर्या६॥ शय्या७॥ वध८॥ रोग९॥ तृ
णस्पर्श१०॥ मल११॥ बाईस परीसा विषै ए ग्यारह परीसा वेदनी की है॥ केवली
कै ए ही जांननी॥ इहां कोई फेर प्रश्न करै॥ वेदनी कर्म साता असाता के भेद करि

नां स्थिति का है सो बंधै। तिस तें यह समय स्थापी। स्थिति वेदनी कर्म की न ह्वै ॥ क
र्म वर्गणा की जाननी ॥ इहां कोई पूछै। तेरहे गुणथानें प्रथम समय साता वेदनी बं
धै। दूजे समय रस देकै षिर जाय। कषाय का तो न ह्वां अनुभाग कहो। हो कषाय वि
नां अनुभाग कैसे संभवे। तिस का उत्तर। संसारी जीवों कें संक्लेश तासों असाता का
बंध है। तेरहे गुणथानें। अत्यंत विशुद्धता होई। यातें केवली न्ह दारक कै अनंत
गुण। अनुभाग लीयें। साता वेदनी का बंध जाननां ॥ २॥ अब ग्यारा ई समी॥ प्रश्न
॥ तेरहें तथा चौदहें गुणथानें। पच्यासी प्रकृति की सत्ता है। वेदनी की २ आयु
ष्य १॥ नांम की ८० गोत्र की २ एवं ८५॥ तिन विषे उदै कौन कौन सी प्रकृति का है
समाधान॥ तेरहे गुणथानें बयालीस का उदै है॥ वेदनी १। वज्र रिषभ नाराच सं
हनन १॥ निर्माण १॥ थिर अथिर २। शुभ अशुभ २। सुस्वर दुस्वर २। प्रशस्त अप्रशस्त

है॥इसप्रकारकथंचितहै॥कथंचितनांही॥इहांयहस्याद्वादज्ञाननाम्नेसेचां
मुंडराइकृतचारित्रसारनामग्रंथमेंकह्योहै॥औरजोसजोगीजिनकें॥एकजीव
प्रतिसाताअसाताकाउदैहै॥तोभीनीचलेगुणस्थानवतनही॥इसकथन
।समाधान॥गोमटसारकेअंतरार्द्धविषेंनीतकहैसोईकहैहैं॥गाथा॥
रायदोसा॥इंदियणाणंचकेवलम्मिजदो॥तेणदुसादासादजसुहदुक्खंण
इंदियजं॥अर्थयतःसयोगकेवलिनिरागद्वेषोनिश्चै॥जातेंसयोगकेवलीविषेंरा
गद्वेषदोनोंसर्वथानष्टकीये॥तथाहि॥मायाचतुष्क४लोभचतुष्क४वेदतीन
३हास्य१रति१एतेरहप्रकृतिरागकोंकारणहै॥केवलीभगवानकें॥एतेचारित्र
मोहकीपचीसप्रकृतिमूलतेंगई॥यातेंरागद्वेषकालेशभीरह्यानही॥तेनदु
सातासातोदयजसुखदुःखमपिनास्ति॥तिसतेंसाताअसाताकेउदयतेंउत्प

दोयप्रकारहै।सोमोहनीयकेसहायविनाअपनेइंद्रीजन्यसुषदुषरूपकार्यक
रनेकोंसमर्थनही।जैसेंछिन्नमूलवृक्षफलफूलकोंनदेया।यातेंतेरहमोहपर
मेश्वरकेंपरीसाकासद्भावकोंकरिमंनवो।।तिसकाउत्तर।।यहवाततुमसत्यक
ही।।अनंतचतुष्टयविराजमानकेवलीमहाराजकेंमोहकीसत्ताकानाशहु
वा।।इंद्रीजन्यकासुषदुखवकाभीअभावहूवा।।परंतुवेदनीकर्मकेउदैकाअ
स्तित्वहै।तिसकरिकेवलीकेंवेदनाविनाभीपरीसाकाउपचारहै।उपचार
अपेक्षापूर्वकहोहै।जैसेंसजोगीजिनकेंएकाग्रचिंतानिरोधविना।अघाति
याकर्मकेनाशफलरूपअपेक्षासोंध्यानकाउपचारहै।यातेंयहवातसिद्ध
हुई।वेदनीकिउदैकीअपेक्षाकेवलीकेंग्यारहपरीसाहै।परंतुघातियाक
र्मकेंसहायविनाअपनेवेदनारूपकार्यकरनेकोंअसमर्थहै।यातेंनाहीं

गति१ औदारिक२ औदारिकांगोपांग३ तैजस कार्मण४ संस्थान६ वर्णचतुष्क
४ अगुरुलघु४ उपघात१ परघात१ उस्वास१ प्रत्येकशरीर१ मनुष्यगति१ पंचें
द्रियत्व१ सुभग१ त्रस१ बादर१ पर्याप्त१ आदेय१ यशःकीर्त्ति१ तीर्थकरत्व१
मनुष्यायु१ उच्चगोत्र१ एवं४२ इहां कोई पूछै तेरह गुणठाणै सातावेदनी अ
सातावेदनी दोनौंका उदय कह्या तहां सातावेदनीका उदै तौ प्रगट है असा
तावेदनीका उदै क्यों कर संभवै तिसका उत्तर केवली भगवंतकै असातावेदनी
कै सद्भावतें ग्यारह परीसा कहे हैं एकादश जिने इति सूत्रात् ते कौंन क्षुध
१ पिपासा२ शीत३ उष्ण४ दंसमसक५ चर्या६ शय्या७ वध८ रोग९ तृ
णस्पर्श१० मल११ बाईस परीसा विषै ए ग्यारह परीसा वेदनीकी है केवली
कै एही जाननी इहां कोई फेर प्रश्न करै वेदनी कर्म साता असाताके नदकरि

नां स्थितिका है सो बंधै। तिसतें यह समय स्थापी स्थिति वेदनी कर्म की न होय॥ क
र्म वर्गना की जाननी॥ इहां कोई पूछै। तेरहे गुणथानें प्रथम समय साता वेदनी बं
धै है जे समय रसदेकै षिरजाय। कषाय का तो न हां अनावक है। हो कषाय वि
नां अनुभाग के सर्वनवैं॥ तिसका उत्तर॥ संसारजीवों के संक्लेश तातें असाता का
बंध है। तेरहे गुणथानें अत्यंत विशुद्धता हुई। यातें केवली न हारकके अनंत
गुण अनुभाग लीयें साता वेदनी का बंध जानना॥ २॥ चरचा बाईसमी॥ प्रश्न
॥ तेरहे तथा चौदहे गुणथानें पच्यासी प्रकृति की सत्ता है। वेदनी की १ आ
यु १॥ नाम की ८० गोत्र की १ एवं ८५॥ तिन विषैं उदै कौन कौनसी प्रकृति का है
समाधान॥ तेरहे गुणथानें बयालीस का उदै है॥ वेदनी १। वज्रऋषभनाराचसं
हनन १। निर्माण १॥ स्थिर अस्थिर २ शुभ अशुभ २। सुस्वर दुस्वर २ प्रशस्त अप्रशस्त

विषै कार्मण काययोग कै॥ संबंध सौं केवली कौं अनाहारकपनां संभवै॥ जातें आ
समय तौ कर्मवर्गणा का ग्रहण नहीं॥ चरचा ३ समी॥ प्रश्न॥ समुद्घात केवली तौ आ
त्र विषैं प्रसिद्ध है॥ समुद्घात केवली की कथा व कृत प्रसिद्ध नहीं॥ समाधान॥ महा
पुराण मैं॥ अजितनाथजी कै॥ तथा विमलनाथजी कै॥ समुद्घात क्रिया कही॥ य
ह प्रसंग आया है॥ २० ॥ चरचा इकीसमी॥ प्रश्न॥ तेरहें गुणथांनै केवली कै एक सा
ता वेदनी का बंध कह्या॥ सो समयस्थायी है॥ वेदनी कर्म कै बंध की स्थिति उत्कि
ष्ट तीस सागर की कही॥ जघन्य बारह मुहूर्त्त की कही॥ यह समयस्थायी कौन
सा स्थितिबंध का नहै है॥ समाधान॥ तेरहें गुणथांनैं कषाय का अभाव है तिसतें
स्थितिबंध तहां नहीं योग क्रियासौं साता वेदनी का प्रकृति प्रदेशरूप बंध है ए
कसमय कर्मणवर्गणा आइ लगै है तेसमय उदै रूप होय पिरजांहि कषाय वि

उ०सं० २३

है॥ तिसका उत्तर॥ अनाहारककाल विषै कार्मणकाययोग है॥ तिसतैं कार्म
णवर्गणाका आगमन होहै॥ जहां पंद्रह योगमैं कोई योग होय तहां कर्मण
का आस्रव बंध अवश्य जांनना संसार विषै तेरहगुणस्थान तांई ऐसा कोई स
मय नही जहां योग न पाइये। ताहीतैं संयोगकेवलीकैं भी एक सातावेदनी॥
का आस्रव है। योगरहित चौदहां अयोगगुणस्थान है। तहां किसही कर्मका
आस्रव नही। तिसतैं। अनाहारककाल विषय कार्मणयोग कै संबंधसौं का
र्मणवर्गणाका ग्रहण है॥ नोकर्मवर्गणाका ग्रहण नही॥ यातैं अनाहारक
संज्ञा है॥ तदुक्तं॥ णोकम्मवग्गणाणं गहणं आहारयं णाम पदरमपि जांन
नी॥ और जैसैं केवलीकैं पूर्वोक्त। कपाटके दोय समय विषै औदारिकमिश्र
योग सो केवलीकै अपर्याप्तपना ऊपर कह्या। तैसैं ही प्रतरभरणके चार सम

यकरै इहांप्रदेशत्रसनाडिकेबाहिरनहींगये तदनंतरजोकेवलीपूर्वमुषहोइ
तौ दक्षिणोत्तरमैंवातवलयहीनचौदहराजूऊंचलोककेअंततांई आगमोक्त
विस्तीर्णदंडप्रमाणदलसंयुक्त औरउत्तरमुषहोयतौ पूर्वपश्चिममैंवातवलयह
ीनचौदहराजूऊंच लोककेअंततांई आगमोक्तविस्तीर्णदंडप्रमाणदलसंयुक्त
आत्मप्रदेशनकौकपाटाकारदूसरेसमयकरै इहांलोकनाडिकेबाहिरप्रदेशग
य तदनंतरवातवलयनकेउरें समस्तलोकव्यापी आत्मप्रदेशनकौप्रतररू
परनाममंथानकरईकेआकारतीसरइसमइ करै इहांप्रदेशबाहिरप्रगटहैं
तदनंतरबातवलयसमेतसंपूर्णलोकव्यापीआत्मप्रदेशनकौं लोकपूरणरू
पचौथेसमयकरै इहांतौप्रदेशप्रगटरूपबाहिरहैं औसेंच्यारिसमयमांहिप्रदेश
पसारइ औरच्यारिहीसमयमांहिसंवरै प्रथमसमयलोकपूरणसंवरै दूजेसमयप्र

नविषैंतीनभेदहैं स्वस्थानकेवली॥१॥ समुद्घातकेवली॥२॥ अजोगकेवली॥३॥ इ
नतीनोंकेंभी विशुद्धताकेयोगतें उत्तरोत्तर असंख्यातगुणी निर्जरा है॥ याहितें अ
संतविशुद्धता सो समुद्घात केवली नामगोत्रवेदनीकर्मकी स्थिति आयुकीस
मान करै है॥ इन दसों भेदविषै प्रतिसमय असंख्यातगुणी निर्जरा जांननी॥
छा न्दरचा उन्नीसमी॥ प्रश्न॥ केवलसमुद्घातके आठसमय हैं॥ तिनविषया त्रस
नाडिकेबाहिर जीवके प्रदेशनिकोंनसेसमयमैंपाइये॥ समाधान॥ तेरहै गुणस्था
नकेअंत आत्मप्रदेशनकी प्रसरण संवरणरूप क्रिया आठसमयमांहि होहै॥
तहां केवली जो कायोत्सर्गासन स्थित होय तौ बारह अंगुलप्रमाण समवृत्त॥ अ
थवा मूलशरीरप्रमाण समवृत्त उपविष्ट होय तो मूलसरीरतें त्रिगुणमुटाईसमेत
तीनों वातवलयहीन लोकनालिप्रमाण ऊंचदंडाकार आत्मप्रदेशप्रथमसम

कों षिपावे॥ यहां क्रम है॥ तिसे दर्शनमोह का षिपक कहिये॥ इस का गुणस्थान चवथा ५
सातवां दो जाननां॥४॥ दर्शनमोह के षिपक तें उपशामक कें असंख्यातगुणी निर्जरा
है॥ इहां कोई कहै॥ षिपक के पीछे उपसमक क्यों कहा॥ तिस का उत्तर॥ षिपक नें
वक्षायिकी का है॥ औ तें इन सातु प्रकृति का उदय कीनां है॥ उपसमक नांव द्वितीयो
पशमसंयुक्त उपसमश्रेणि वाल का है॥ चारित्रमोह के उपसम करने कों उद्यमी
ऊवा है॥ गुणस्थान इसके॥ आठुवां नवां दशवां ए तीन हैं॥६॥ उपशामक तें असंख्या
तगुणी निर्जरा उपसांतमोह॥ ग्यारवें गुणस्थान वाले कें है॥७॥ उपसांतमोह तें अ
संख्यातगुणी निर्जरा क्षपक कहिये षिपक श्रेणि वाले कें है॥ इसके गुणस्थान आठुवे
सुं लेय दसुवें तांई तीन जाननें॥८॥ क्षपक तें असंख्यातगुणी निर्जरा क्षीणमोह नाम
बारहे गुणस्थान वाले कें है॥९॥ क्षीणमोह तें असंख्यातगुणी निर्जरा जिनकें है॥ जि

श्रावककेहै॥३॥तिसतेंअसंख्यातगुणीनिर्जरा॥छठेगुणस्थानवालेविरत
केहै॥४॥तिसतेंअसंख्यातगुणीनिर्जरा॥अनंतानुबंधीकासंयोजनावालेअनंतवि
योजककेहै॥इहांकोईपूछै॥जोकोईअनंतानुबंधीचतुष्ककोंअप्रत्याख्याना
दिरूपकरै।तिसेंअनंतवियोजककहिये॥इसकागुणस्थानकौनसा॥तिसकू
उत्तर॥अनंतानुबंधीकी॥स्वोक्तविसंयोजनाचोथेपांचवें॥छठेसातवेंइन
च्यारोंगुणस्थानविषैंकरैहै॥तिसतेंच्यारोंगुणस्थानवर्ती॥अनंतवियोजक
है॥सोअपनेगुणस्थानविषै॥अपनीसर्वनिर्जरासों॥असंख्यातगुणीनिर्जराक
रैहैपरंतुइहां॥क्रमवर्तीकथनकीअपेक्षातैं॥विरतसौंअसंख्यातगुणीनिर्ज
राजाननी॥५॥अनंतवियोजकतेंअसंख्यातगुणीनिर्जरादर्शनमोहकेक्षि
पककेहै।पहलेंअनंतानुबंधीकीविसंयोजनाकरिदर्शनमोहकेत्रिक

सागमपदार्थविषैनास्तिबुधिनहोयतिसैंआस्तिक्यभावकहियें॥येचारोंभावक
नीविसचरेंनहीं॥विकाररूपनहोंहिं।यहसम्यकदृष्टीकावाह्यलक्षनहै॥७॥
चरचाअठारमी॥प्रश्न॥दशाध्यायीसूत्रकेनवेंसूत्रकेविषैंदशप्रकारकेसम्यकदृ
ष्टिआदिपरस्परअसंख्यातगुणीअधिकनिर्जराबालकहेहैं॥तिनकाक्यास्वरूप
है॥समाधान॥सम्यकदृष्टी १ श्रावक २ विरत ३ अनंतवियोजक ४ दर्शनमोहक्ष
५ उपशामक ६ उपशांतमोह ७ क्षिपक ८ क्षीणमोह ९ जिन १०॥एदशविशे
षजांननें॥प्रथमहीप्रथमोपशमसम्यक्तकीउत्पत्तिकेपहलेंकरणत्रयके
मसमयवर्त्ती॥विशुद्ध॥विशिष्टमिथ्यादृष्टीकेंजोनिर्जराहै॥ति
तेंअसंख्यातगुणीनिर्जरा॥चौथेगुणस्थांनवालेअविरतसम्यकदृष्टिकेंहो॥१॥
तसेतेंअसंख्यातगुणीनिर्जरा॥पंचमगुणस्थांनवाले

हैं। निश्चैकरि भगवान जानैं। अनुमानसौं मेरें सम्यक्त्व है यह नी:श्रद्धान मिथ्या है
जातें सम्यक्त्व अनुमानका विषय नहीं। परंतु शास्त्र के विषय विना तौ कोई वस्तु
न होय। यातें सम्यक्त्व के बाह्य लक्षण। शास्त्र विषें कौंन कहे हैं। समाधान॥ य
शतिलक नाम काव्य विषै पुरुष के चार बाह्य लक्षन कहे हैं। चार ही सम्यक्त्व के क
हे हैं। स्त्रीजन के संजोग करि। नटावरी के उपजावने करि विपत्ति विषें धीर्य भाव
सौं। आरब्ध कार्य के निरवाहसौं॥ इन च्यार चिह्ननि करि पुरुषकौं अंतौ प्रिय पुरुष
शक्ति जानी जाहै। तैसें ही सांत भाव संवेगभाव दयाभाव आस्तिकभाव इन च्या
रें प्रशमनचारी भावनसौं। सम्यक्त्वरत्न जानाजाहै। क्रोधादि रहित सम भावकौं शां
त भाव कहिये। कोमल ता युक्त परिणामकौं दयाभाव कहिये। धर्म धर्म के फल वि
षें प्रीति होय तथा देह। भोगसौं उदासीनता होय॥ तिसें संवेगभाव कहिये॥ आ

षैपंचमकालमेंसम्यक्‌दृष्टिजीवकेतकपाइयें।।समाधान।।जिनपंचलब्धिरूप
परिणामकीपरणतिविषैसम्यक्त्वउपजै।।तेपरिणामइसकलिकालमेंमहाउत्कृ
तिसतेंहोयतथातीनअथवातीनतथाचारकेहैं।पांचकठिनतेउत्पन्नहोइस
कथनकीसाषिस्वामिकार्त्तिकेयकीटीकाविषैहै।।तथाहि।।विद्यंतेकतिना
त्मबोधविमुखाःसंदेहनोदेहिनः।प्राप्यंतेकतिचित्कदाचिनपुन[illegible]र्जिज्ञास
मानाःक्वचित्।आत्मज्ञाःपरमप्रमोदसुखिनःप्रोन्मीलदंतर्दृशो।।द्वित्राःस्युर्बह
वोयदित्रिचतुरास्तेपंचषादुर्लभाः।।७।।तेसंतिद्वित्रायदि।।इतिकथनात्ज्ञाना
र्णवेश्रुतं।।इसकालमेंघनेजीवअपनीस्वेच्छातेंआपकोंसम्यक्‌दृष्टीमानेंहैंतौमा
नो परंतुसास्त्रविषैतोहीनचारहीकहेहैं औरपंचलब्धिकास्वरूपअलीभांति
जानोंहोयतो आपकोंसम्यक्‌दृष्टिकाअनुमानभीनकरैकोईयोंकहैकितें

यत्नसाध्यवताया॥ पक्षप्रमाणमेकं॥ इतिकथनात्॥ इसनांतिसम्यक्त्वकीप्राप्ति
विषैउद्यमहीनेकावादकीया॥ तिसकीसाषी॥ एकउद्यमवीनाउपदेशमेरोमां
निर॥ औरकाललब्धिविनाहोनांनही॥ यहनीप्रमाणहै॥ तहांदोनौंकारणविषै
दृष्टांतकहियेहै॥ जैसैंकोईधनार्थीपुरुषयथायोग्यउद्यमकरैहै॥ धनकीप्राप्ति
भाग्यांस्यसोंहोहै॥ तैसैंसर्वोपायतेंउद्यमीहोनायोग्यहै॥ सम्यक्त्वकीप्राप्तिकाल
लब्धिसोंहोयगी॥ औरजिसकार्यकीसिद्धिहोंनीहैतिसकार्यकीसिद्धिउद्यमवि
नांहोंनीनांही॥ भवहोयगीतवउद्यमहीसोहोयगी॥ यहनियमहै॥ जैसेंभरतजी
केज्ञानोत्पत्तिविषैएकमुहूर्त्तवाकीरहाथा॥ तोभीदीक्षाग्रहणकीया॥ तबका
र्यसिद्धिहुवा॥ इसप्रकारउद्यमकारणहै॥ कारणबिनाकार्यसिद्धिहोतानही॥ यातैं
॥यातैंउद्यमीरहना॥५॥ जरूआसोलहमी॥ अङ्क॥ विद्यमानभरतषंडवि

नी॥चारोंविषयकेकेमरणहैनहीं।तिसतेंउनकीस्थितिअंतर्मुहूर्त्तहीहै॥इहांकोईकहै
॥अप्रमत्तसौंलेयउपशांतमोहतांईछहोंगुणस्थानकीस्थितिमरणकीअपेक्षासमय
कही।ऐसेंमिथ्यातगुणगांनेंकीक्योंनकही॥तिसकाउत्तर॥जोजीव
हि मिथ्यात्वमेंआवै॥सोअनंतानुबंधीकेअंतर्मुहूर्त्तमात्रउदैकालपर्यंतमरणन
यहनियमहै।औरमिश्रगुणस्थानविषैंमरणकाअभावहीहै॥क्षीणे मिश्रेच
योगेमरणंनास्तिदेहिनां॥इतिवचनात॥आगेंअव्रततपादेशव्रतकीप्राप्ति
विषैंभीअंतर्मुहूर्त्ततांईमरणनहीं॥यातेंऔरकिसहीगुणस्थानकीसमयमात्रस्थि
मरणकीअपेक्षानसंभवै॥यहकथनसूत्रजीकीटीकासर्वार्थसिद्धिनामहै
जानना॥चरचाचौदमीसंपूर्ण॥१४॥अथपनरमीउच्यते॥प्रश्न॥सम्यक्त्वसहजसा
कियतसांभहै॥समाधान॥समयसारविषैंश्रीअमृतचंद्रसूरिनेंतौसम्यक्त्व

सारूतनिद्राप्रमादके अवसर। अप्रमत्तगुणस्थान॥ मुनिराजके कैसें वनें। अलप निद्रा
मुनिस्वरके। यथा वसर कही है॥ यह विज्ञान विचार देषना॥३॥ चरचा चतुर्दश
मी॥ प्रश्न॥ छठे सातमें गुणस्थानतांई उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त
मात्र है। और एकसमयमात्र नी कही है। वनारसीदासनें नाटकके गुणस्थाना
धिकारमें नी लिषा है: सो क्यों कर है। समाधान॥ यह समयमात्र स्थिति मरणकी अपेक्षा
सों है। कोई अप्रमत्तवर्ती जीव अपनी आयुके एक समयवाकी रहें प्रमत्तमें आइ मर
ण करै। इस अपेक्षा एकसमयस्थिति कही है। असें ही अप्रमत्तकी तथा चारों उपसमकी नी
जाननी॥ तिसका ब्यौरा॥ आठवें गुणस्थानवानें पहले भागमें मरण नहीं॥ निजायुके एक
समयवाकी रहें नवें गुणस्थानें जाइ मरण करे। इस अपेक्षा नवें गुणस्थानकी एक समय स्थि
ति कही। असें ही दसवें तथा ग्यारहें की नी है। आठवें की वाकी रही सो उत्तरती वार जान

कीनांईउत्पन्नउध्वंसीहै॥औरइनदोनोंगुणस्थानकाकालजघन्यतत्थाउत्किष्ट
अंतर्मुहूर्त्तमात्रहै॥तिसअंतर्मुहूर्त्तकेभेदअसंख्यातहैं॥औरइनकेपरिणामसं
वंधीपलटनकीसहजपरिणतिऐसीहै॥वाह्यचिह्नसोजानीनजाय॥चलतेवैठ
तेसोवतेंआहारकरतेंछठवांसातुवांगुणस्थानअंतरकेनावोंकरिकुवाकरैहै
जवसंज्वलनकषायकाउदैमंदहोय॥तवसातुवांहोजाय॥तीव्रउदैहोयतव
छठाहोजाय॥जावतश्रेणिमांडैनहीं॥तबूतांईऐसेंकरजवाकरै॥प्रथमोपशम
वालाअंतर्मुहूर्त्तकालविषै॥सातुवेंछठेगुणस्थानमेंसंख्यातसहस्रआ
छकरिकै॥सासादनवर्त्तीहोयहै॥ऐसीकोईपरिणामोंकीउत्कालगतिहैयातें
उगावतें॥अथवाआहारकागासलेतेंकेईवारसातुवांछठाहोजाय॥तिसतें
आहारविहारकीक्रियारहितजाश्यहक्योंकरसंभवै॥औरऐसेंनमानियेतौ॥

र्वार्थसिद्धजाय॥तीनसमयअंतरालवर्तीरहै॥तहांदेवगतिकेउदै॥अप्रमत्तगुण
स्थानजाननां॥तेतीससागरकीआयुपरजंत॥अप्रमत्तगुणस्थानरहै॥जवतांई
फेरकर्मभूमिकामनुष्यहोइ॥आठवर्षकेअनंतरसंयमधरै॥तवतांईअप्रमत्त
गुणस्थानकहियै॥इसप्रकारतेतीससागरकछुअधिककहै॥इहांकोईकहैहमतेती
ससागरअप्रमत्तगुणस्थानकीस्थितिसुनीहै॥अधिकनहीसुनी॥वनारसीदासनें
नीसमयसारनाटकमेंयहीकहीहै॥सोक्यौंकरहै॥तिसकाउत्तर॥एवौनत्चोवी
सगांनेकीगाथाकाअर्थनलीनांतिः विचारलेनां॥१॥चरचातेरसी॥प्रश्न॥छठ
माउवांगुणस्थानउवरकीनांईफुवाकरैहै॥तहांऐसेंसुनाहै॥जवछठवेंसें स
तवांआइजाय॥तवगमनकरतेंपावजोंकासोंहीरहै॥आहारकेंसमैंगासजों
कासोंहीरहिजाय॥सोकैसेंहै॥समाधान॥छठगासातवांगुणस्थानउपशमसम्य

वाला॥उपसमचारित्रमोहकी२१कीसप्रकृतिकाकैसे॥अप्रत्याख्यानीचतुष्क४॥
प्रत्याख्यानीचतुष्क४॥संज्वलनचतुष्क४॥हास्यादिनव९॥ए२१कीसप्रकृति॥मोहने
कर्मविनाऔरकिसीकर्मकाउपसमहोतानहीं॥यहनियमहै॥तातेंइकीसप्र
कृतिकाउपशमक्योंकरसंभवै॥यहकथनस्वामिकार्त्तिकेयकीटीकाविषैंहै
॥१९॥चरचाबारमी॥प्रश्न॥अविरतनामचौथेगुणस्थानकीकेतेकालस्थि
॥समाधान॥जघन्यस्थितितौअंतर्मुहूर्तहै॥उत्कृष्टतेतीससागरकछुअधि
कहै॥तउक्तं॥छावलियासासाणंसमहियतेत्तीससायरचउत्थं॥अस्यार्थः॥
समयछावलिका॥सासादननाम२जेगुणस्थानकीछहआवलीउत्कि
तिहै॥चतुर्थस्य साधिकत्रयस्त्रिंशत्सागर॥चौथेअव्रतनामगुणस्थान
कछुअधिकतेतीससागरस्थितिसाकैसे॥कोइकर्मभूमिकामनुष्यम

आवलीके असंख्यातसमय एक है और संख्यात आवलीका ॥ एक सासोस्वास कह्या ॥
तिससंख्यातके संख्यात भेद है ॥ तो इहां संख्याता कोन सा है ॥ इसका भेद भी तो जा
नना चाहिये सो यह त्रिलोकसार श्री वसुनंद सिद्धांती कृत मूलाचार में लिषा है ॥१०॥
चरचा पारमी ॥ अथ ॥ क्षपकश्रेणिवाला नवें अनिवृत्ति नाम नवें गुणस्थान वि
षें ॥ नव नोकषाय छत्तीस प्रकृतिका क्षय करे है ॥ तिनमें सूक्ष्मलोभ विना बीस
प्रकृति चारित्रमोह की है ॥ थावर आदि तेरह प्रकृति नामकर्म की है ॥ तीन व
डी निद्रा दर्शनावरणी की है एवं छतीस भई ॥ और जो उपशमश्रेणि चढे सो
नवमगुणस्थान विषे ॥ उपसम के तीस प्रकृति का करे ॥ ब्रह्मविलास के चेतन
चरित्र विषे छतीस ही का उपशम लिषा है सो कैसे है ॥ समाधान ॥ क्षपकश्रे
णि वाला छत्तीस प्रकृतिका क्षय करे यह तो प्रमाण है ॥ और उपसमश्रेणि

वाला। उपसमचारित्रमोहकी इकीसप्रकृतिकाकैसें। अप्रत्याख्यानीचतुष्क ४।। प्रत्याख्यानीचतुष्क ४। संज्वलनचतुष्क ४। हास्यादिनव ९।।ए इकीसकर्ज मोहनें कर्मविनाऔरकिसीकर्मका उपसम होवै नहीं। यहनियमहै। तातें इकीसप्र कृतिका उपशमक्योंकरसंभवै। यहकथनस्वामिकार्त्तिकेयकी टीका विषेंहै ।। ११।। चरचा बारमी।। १२।। अविरतनामचौथे गुणस्थानकी केतकालस्थि ।।समाधान।। जघमस्थितिअंतर्मुहूर्त है। उत्कृष्टतेतीससागरकछु अधि कहै।। तउक्तं।। छावलियासासाणं समहियतेत्तीससायरचउत्थं।। अस्यार्थः।। षडावलिका। सासादननामदूजे गुणस्थानकी छह आवली उत्कृ ष्टस्थितिहै। चतुर्थसम मा। अधिकत्रयस्त्रिंशत् सागर। चौथे अव्रतनामगुणस्थान कछु अधिकतेतीससागर है। सो कैसें। कोइ कर्मभूमिका मनुष्यम

आवलीकेअसंख्यातसमयकहे औरसंख्यात आवलीका।।एकसांसोस्वासकह्या।।
तिससंख्यातकेसंख्यातभेदहे।।ताइहांसंख्याताकोनसाहे।।इसकाभेदभीतोजा-
नांजाहियेसोयहबिशेषश्रीवसुनंदसिधांतीकृतमूलाचारमेंलिषाहै।।१०।
चरचाग्यारमी।।प्रश्न।।क्षपकश्रेणिवालानवेंअनिवृत्तनामनवेंगुणस्थानवि
षें।।नवमाभागकरछत्तीसप्रकृतिकाक्षयकरेहै।।तिनमेंसूक्ष्मलोभविनांवीस
प्रकृतिचारित्रमोहकीहें।।थावरआदितेरहप्रकृतिनामकर्मकीहें।।तीनांव
डीनिद्रादर्शनावरणीकीहें।।एछत्तीसकुई।।औरजोउपशमश्रेणिचढेसो
नवगुणस्थानविषइ।।उपसमकेतीसप्रकृतिकाकरै।।ब्रह्मविलासकेचेतन
चरित्रविषेछत्तीसहीकाउपशमलिषाहै।।सोकेसेंहै।।समाधान।।क्षपकश्रे
णिवालाछत्तीसप्रकृतिकाक्षयकरै।।यहतोप्रमाणहै।।औरउपसमश्रेणि

स्या आठमी कहियै है॥ कोई जीव उपशम श्रेणि चढै तो केवार चढै॥ समाधान॥ अ
र्द्ध पुद्गल आवर्त्त काल विषै उपसम श्रेणि उत्कृष्ट च्यार वार चढै॥ फेर मुक्त होय॥
जन्म विषै दोय वार चढै॥७॥ चरचा नवमी कथिये॥ अंतर्मुहूर्त्त के कितने भे
द है॥ समाधान॥ एक आवली एक समय कों जघन्य अंतर्मुहूर्त्त कहियै।
य घाट मुहूर्त्त कों उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त कहियै॥ तथा भिन्नमुहूर्त्त कहियै॥ म
ध्य के असंख्याते भेद जांनने॥८॥ चरचा दशमी कहै॥ आवली का क्या स्वरूप है
समाधान॥ एक मुहूर्त्त के सैतीस सै तिहत्तर सासोस्वास होहि॥ एक
विषै कोडाकोड आवली कछु अधिक कहियै है॥ इहां कोऊ कहै॥ इस तो अ
गली कैं आवली नाम जानें हैं॥ यह तो काल वकृत पोडाकू बा॥ तिसका समा
धान॥ ॥ आवलि असंख समया॥ संखिज्जावलि हवे उस्सासो॥ इति वचनात

तांनुबंधीकी विसंयोजनाकरै॥तीनप्रकार दर्शनमोहका उपसमकरै॥ उपस
मश्रेणिचढे॥ग्यारहें गुणस्थांन पर्यंतपोहचै॥तिसकोंनसम्यक्तकहोंगे॥ क्षयो
पशमकहोंगेतो ऽसकीसरद्दहसोतुवेंहीतांईहे॥यहग्यारहेंतांईपाईये॥तिस
काउत्तरः॥यहद्वितीयउपशमहे॥यातेंउपशमहीकहिये॥६॥ वस्त्रासममीका
हजेहे॥प्रश्न॥ उद्वेलनातथाविसंयोजनाविषेक्याफेरहे॥ समाधानः॥मूलप्रकृति
कीउद्वेलनातथाविसंयोजनाहोतीनही॥जोत्रागमोक्तउत्तरप्रकृति॥अपनेरू
पबिरन्हीपरकृतिमेंमिलिकेंषिरजाऽ॥फेरसत्तामेंनपाईये॥तिसेउद्वेलनाका
हये॥ औरजोउत्तरप्रकृतिसजातियप्रकृतिमेंमिलजाय॥तिसेंविसंजोजनाक
हिये॥जेसेंअनंतानुबंधीअप्रत्याख्यानआदिमेंमिले॥किंत्रापइत्तनाउद्वेलीप्र
कृतिफिरबंधकीयेविनाउदेआवेनही॥विसंयोजनावालीउदेआवे॥७॥च

कमणोकेपात्रमैंनिर्मलजलवतजाननां॥ सर्वोत्कृष्टात्तक्षक निकादय चौथेपांच
वैंछवे।तथासातुवेंगुणस्थान तांईहोहै॥तिनमैंदर्शनमोहकेक्षयें हे अनं
बंधीकाक्षयहोहै।खीणादंसणमोहा।इतिवचनात॥दर्शनमोहकेक्षयवि
नंतानुबंधीकी॥विसंयोजनाक्षायकक्षयनहोयय हनियमहै॥यहछहप्रकार
सम्यक्तकासंक्षेपस्वरूपजाननां॥इनछहोंसम्यक्तकेगुणस्थानलिषीयेहै।
।मिथ्यात्वगुणठानैंमिथ्यासम्यक्त॥१॥सासादनगुणठानैंसासादनसम्यक्त॥२॥मिश्र
गुणठानैंमिश्रसम्यक्त॥३॥चौथेगुणस्थानसौंलेयसातवें तांईउपसमादितीन
हैं॥चौथेसौंलेयग्यारहें तांईउपसमश्रेणिविषउपसमक्षायकदोयसम्यक्तहैं
आठवेंसौंषिपकश्रेणिविषेऊपरचौदहे तांईएकक्षायकसम्यक्तहै॥इहांएककोई
औरप्रश्नकरै॥कोईकवेदकसम्यक्तदिष्टिसातिशयअप्रमत्तगुणस्थानविषेंअनं

मकहियां॥यहक्षयोपसमकाअर्थसर्वत्रजाननां॥इहांकोईपूछैजूंक्षयाभावकौं
क्षयसंज्ञाकही॥औरउपशममैंभीउदयाभावहीआया॥इनदोन्यांमैंविशेषक्
हा॥तिसकाउत्तर॥उपशमकेउदयाभावकाकालजघन्यवाउत्कृष्ट॥अंत
र्मुहूर्त्तहै॥उपसमसम्यक्तजवताईरहै॥तवताईयथेछरहै॥परंतुसात्तवेंछ
ठेगुणस्थानवत्त॥मिथ्यात्वविषेआवागछचलाजाई॥ऐसीउपसमकीपर
णतिहै॥औरक्षयोपशमकेउदयाभावकाकालजघन्यअंतर्मुहूर्त्त॥उत्कृष्ट
छ्यासठसागरयातैंइसउदयाभावकोक्षयसंज्ञाहै॥५॥छठेक्षायिकसम्यक्त
कास्वरूपलिषियेहै॥अनंतानुबंधीचउष्ककी॥४॥दर्शनमोहकी३॥इनसात्तौं
प्रकृतिकाकेवलीतथाश्रुतकेवलीकेनिकटक्षयहोय॥प्रकृतिप्रदेशस्थि
तिअनुभागबंधरूपसत्तारहैनहीं॥तिसेक्षायिकसम्यक्तकहियं॥स्फटि

रणकहो मिथ्यातकौं त्यारहिजाय॥ तव फिरनीयह पूर्वोक्त पांचप्रकृति
अनादि मिथ्यातीव तूकैरो॥ इसप्रकार प्रथमोपशम सम्यक्त की रीत है॥४॥ पां
चुवें तयोपशम सम्यक्त का स्वरूप लिषिये है॥ कोई उपशमी चौथे पांचुवें छठवें
सातुवें गुणस्थानवर्ती तिसके सम्यक्त प्रकृति नाम॥ दर्शनमोहकी तीसरी प्रक
ति का उदै आवे तब वेदक सम्यक्त होय॥ इस ही का नाम क्षयोपशम सम्य
क्त है॥ निश्चय कृत है। हां कोई पूछै क्षयो पशम का अर्थ क्या है॥ तिसका उत्त
र॥ जो कर्म जीव के प्रदेशों पर च्यार च्यार प्रकार बंधरूप सत्तालीये तिष्टै है॥ सो प्र
देश स्थिति बंधरूप सत्ता जो की सो रहै॥ तिस बंध के अनुभाग का
होय॥ तिसै उदयाभाव क्षय कहिये॥ उदै कौ आगे जो अपसत्तार है तीति
उपसम कहिये॥ उदयाभाव रूप क्षय समैं ते उपशम होय॥ तिसें क्षयोउपश

तिकौ उपसम कहां सौं करै । यातैं अनंतानुवंधी चतुष्क और एक मिथ्यात इन पां
चौं का उपसम करि उपसम सम्यक्त कौं प्राप्त होइ है ॥ यह विशेष श्रीगोमटसार
का उत्तरार्द्ध मैं जाननां ॥ अब यह अनादि मिथ्याती चोथे पांचुवे तथा सातुवें
गुणस्थान चढै है ॥ तब तहां अंतर्मुहूर्त काल विषै मिथ्यात्व द्रव्य कै तीन षंड
करै है ॥ तदुक्तं कर्मकांड मध्ये ॥ जंतेण कोद्दवं वा पढमुवसम्मभाव सम्मजंतेण
मिथ्याद्दव्वं तु तहा असंखगुणहीण दव्व कमा ॥ इस प्रकार तीन प्रकृति की सत्ता
ई मिथ्यात्व के उदै मिथ्यात गुणस्थानवर्ती होय ॥ सादि मिथ्याती कहावै
उपसम करै ॥ तब सात प्रकृति का उपसम करि उपसम सम्य
दृष्टी होय ॥ तहां जो एकवार सम्य है सादि मिथ्याती मिथ्यात्व गुणठांनै कहा
दोनौं मिथ्यात्व की उकेलना करै ॥ और प्रकृति मैं मिलाइ कैं षिराय दै तौ फे

दिमिथ्याती पंचलब्धिकों प्राप्त करवा अनवृत्तिनामतीसरे करणके चरमसमयविषें ॥
अनंतानुबंधी क्रोधादिकी चौकडी ॥ और मिथ्यात्व इन पांचौं प्रकृतिका उपसम करे
उदेकों अप्राप्त करै ॥ तब उपसमसम्यक्तकों प्राप्त होइ ॥ जैसें निर्मलीके जोगतें
नीचें बैठि जाइ ॥ तब नीर निर्मल होइ ॥ तैसें कर्मप्रकृतिके अनुदयतें जीवकें निर्म
लता होइ है ॥ यह उपसमका स्वरूप है ॥ इहां कोई पूछै ॥ सात प्रकृतिके उपसमसौं ॥ उ
पसमसम्यक्त है प्रसिद्ध है ॥ इहां पांच प्रकृतिके उपशमसौं लिषा सो कैसें ॥ तिसका
उत्तर ॥ सात प्रकृतिके उपशमसौं उपशमसम्यक्त होइ है ॥ सो यह कथन सादि मि
थ्याती की अपेक्षासौं है ॥ जातें सादि मिथ्याती कैं तीनौं मिथ्यात प्रकृतिकी सत्ता
है ॥ तिसतें अनंतानुबंधी चतुष्क और तीनौं मिथ्यात्व ॥ इन सातौं प्रकृतिके उपसम
सौं उपशमसम्यक्त होइ है ॥ अनादि मिथ्याती कैं एक मिथ्यात्वकी सत्ता है ॥ यह सा

डमिलाइ ष्याइतै॥ एककाजु दास्वादलीयानहीजाय॥ तैसैं मिश्रसम्यक्तकेंना
वजाननां॥ इहां कोई कहै॥ मिश्रसम्यक्तकें तत्वश्रद्धान अतत्वश्रद्धानरूप मिले
भाव है तै मिथ्यातकें भाव हैं॥ सम्यक्तके भाव हैं॥ यातें इसकौं सम्यक्तसंज्ञा कु
ई॥ सासादनवाला तौ सम्यक्तसौं गिरा अर प्रगट अतत्वश्रद्धानी है॥ मिथ्यातव
ाला प्रगट अतत्वश्रद्धानी है॥ इन दोनौंकें सम्यक्तका सद्भाव नहीं॥ तिसतें इन
के भावकौं सम्यक्तसंज्ञा कैसें कही॥ तिसका उत्तर॥ आत्माकी रुचि तथा श्रद्धा
नरूप सम्यक्त नाम घरूं निजगुण है॥ सो अनादिहीसौं अपनें स्वरूपसौं तिष्ठ
मिथ्यात्वरूप हुवा अतत्वरुचिमें वर्ते है॥ ना श्रान नहीं हुवा औररूप हुवा है॥ ति
सतें गुणस्थानके अनुसार दोनौंकौं सम्यक्तसंज्ञा कही॥ जैसें राजनिष्ट राजाकौं
राजा ही कहिये॥ ४॥ चौथे उपसमसम्यक्तका स्वरूप लिषिये है॥ कोई अना

तेगुणकेअनावतेंउपमकाअनावहोहै॥तिसुकाउपर॥जहांतत्वरुचिगई हांअतत्वरुचिहीहै॥यातेंसासादनगुणस्थानविषेंअपमकअतत्वरुचिहै मिथ्यातविषैव्यक्तानानतीं॥ ॥तीसरेमिश्रसम्यक्तकास्वरूपलिखियेहै॥अनादि मिथ्यातीकैंचोथापांचुवा छठासातुवांइनच्यारिगुणस्थानविषैं तथासादि मिथ्यातीकेमिथ्या त्वगुणस्थानविषेंदर्शनमोहकी सम्यकमिथ्यात्वनाम हूसरीप्रकृतिकाउदैआइजाइतिसप्रकृतिकेउदै [illegible] एकहीकालअंतर्मुहूर्त्तमात्रसम्यक्तमिथ्यात्वरूपमिलेपरिणामहोंहि तिसेंमिश्रगुणस्थानकहिये तिसविषैभावहोहि तिसकोंमिश्रसम्यक्तक हैं सर्वमिथ्यात्वसंवंधीअतत्वश्रधानकात्यागहूवाहै तिससमततत्वश्रधा हायमहमिश्रभावकास्वरूपहै इसीकानांवमिश्रसम्यक्तहै जैसेंदहीगु

हावै॥ तैसेंही मिथ्यात्वगुणथानें जो रुचि होइ तिसें अतत्वरुचि ही कहिये॥ यहां
मिथ्यासम्यक्त्व का स्वरूप है॥२॥६ जे सासादनसम्यक्त्व का स्वरूप लिषिये है॥ कोई
अनादिमिथ्याती चौथे पांचवें सातवें गुणस्थान जाइ छठे आवे तहां॥ अनं
तानुबंधिके अनंतमा उदय तें॥ मिथ्यात्व के सन्मुष होइ एकसमय सौं॥ लिय छ
छह आवलीपर्यंत॥ अंतरालवर्त्ती रहे॥ तहां सासादनगुणस्थान विषे सास
दनसम्यक्त्व कहिये॥ इहां कोई पूछे॥ सासादनसम्यक्त्व विषे तत्वरुचि है कि
अतत्वरुचि है॥ कि उभयरुचि है॥ कि कोई रुचि नहीं॥ जो तत्वरुचि कहो
गे तो चौथा गुणस्थान हुवा॥ अतत्वरुचि कहोगे तो पहला गुणस्थान हुवा
उभयरुचि कहोगे तो तीसरा मिश्रगुणस्थान हुवा॥ दोनो रुचिमें कोई न क
होगे तो॥ आत्मा के श्रद्धान गुण के अभाव तें आत्मा का अभाव हुवा जो

तिसगा॥४॥करणेत्वनिवृत्त्यारंभेननिवृत्तिरिहांगिनां॥पारिणामेमिथ्यात्वेहिस्माज्ञा
वाःप्रतिसरणं॥५॥चरस्वाष्टमी॥॥अर्थ॥गोम्मटसारजीमेंसम्यक्तकेछभेदकहे
हैं॥मिथ्यासम्यक्त१॥सासादनसम्यक्त२॥मिश्रसम्यक्त३॥उपसमसम्यक्त४॥क्ष
योपशमसम्यक्त५॥क्षायकसम्यक्त६॥इनछहोंसम्यक्तकास्वरूपक्या॥समाधा
न॥सम्यक्तनांमयथारुचितथाश्रद्धानकाहै॥मिथ्यातगुणथानेंजोअतत्वरुचि
होहै॥तिसेमिथ्यासम्यक्तकहिये॥ईहांकोईकहै॥मिथ्यादृष्टिकेआगमग्यान
केवलजीवादितत्वकायथावतश्रद्धानकोतिसकेंअतत्वरुचिक्योंकरिक
कहीजाइतिसकाउत्तर॥मिथ्यातगुणथानें॥आत्मज्ञानशून्यरुचिहोहै॥तातें(
तसेअतत्वरुचिहीकहिये॥जैसेंअशुचिपात्रमेंधरापवित्रगाइकादूधअशुचि
कहावे॥अथवामिथ्यातगुणस्थानविषें॥मतिश्रुतिदोनों॥कुमतिकुश्रुतक

च०स०
९

त्रैहे॥ औरजीवरासिअनंतानंतहैं॥ जिपरस्परजीवांकेपरिणांममिलेनही॥ सो
असंख्यातलोकमात्रपरिणामकैसेसिद्धहोहि॥ औरकहांसोंआवें॥ यातेंअ
नंतजीवांकेपरिणांमपरस्परमिलेंतबअसंख्यातलोकमात्रपरिणांमसिद्धहोंइ
हस अनिवृत्तिकरणकाकालतेंअनंतर्मुहूर्त्तहीजांननां॥ तीनांमिथ्यातही
मेंहोंहें॥ इनहीतीनांकरणकास्वरूपश्रीजिनसेनाचार्यनैंआदिपुराणवि
षेंनलोकांतिकह्याहे॥ सोतीविचारणा॥ करणत्रययाथात्म्यव्यक्तयेर्थप
दानिवै॥ क्रियाप्रसूनिसूत्रार्थ॥ सद्भावेरनुक्रमात्॥ १॥ करणाःपरिणामाये
विनक्ताः प्रथमस्तेष्वेतेनवयुक्तिर्तीयस्मिन्॥ करणोत्र्वचपृथग्विधाः॥ २॥ द्विती
यक्षणसंबंधि॥ परिणामकदंबकं॥ तच्चाप्यच्चतृतीयस्यादेवमाचरमक्षणात्॥
३॥ ततश्चाधःप्रवृत्ताख्यंकरणंतन्निरुच्यते॥ अपूर्वकरणेनैवतेस्युपूर्वाःप्र

पवर्त्तो त्ति ण दिहैं॥१॥हं जे अपूर्वकरण विषैं प्रथम समयकि परिणांमो तैं॥ दूसरे सम
य अनंत गुण निर्मल होहि॥ अधाकरण की नांई॥ नीचले भावो की वराव रिन
हीं है॥ प्रति समय अपूर्व ही अपूर्व होंहि॥ ताही तें इसे अपूर्वकरण संज्ञा है
इसका भी अंतर्मुहूर्त्त काल है॥७॥ तीजे अनिवृत्ति करण के काल विषै। एक सम
यवर्त्ती॥ अनेक जीव होंहि॥ तिन के परिणामों विषै निवृत्तिक हिये भेद न हैं
ऐसा अर्थ सिद्धांत विषैं लिषा है॥ याही तें इसे अनिवृत्ति करण संज्ञा है॥ जैसें
अनिवृत्तिकरण वर्त्ती जीव संस्थान वर्ण वय वेष॥ अवगाहनादि
रत्निन्नरूप है तैसें अपने अपने परिणांमों करि भेद वंत नांही॥ सव एक से हैं इहां को
ईयों कहै। हम तो ऐसुनी है॥ कि सदा जीव के परिणाम कि सदा सौ मिलें नहीं॥ यह ९
क्यों करि वनै॥ तिसका उत्तर॥ संसार वर्त्ती जीवन के परिणाम असंख्यात लोक मा

करण३॥ इनकेनांवहीमें इनकाअर्थहै॥ ताहीतें इनकों अर्थपदसंज्ञाहै॥ प्र
थमअधःकरणचौथीआयोपलब्धिकेअनंतरहीहोहै॥ तिसकाअंतर्मुहूर्त्तका
लहै॥ तिसकेअसंख्यातसमयहैं॥ तहांप्रथमसमयविषैंविशुद्धपरिणामहो
हि॥ तिर्इदूसरेसमयविषैंहोंहि॥ तथाओरअनंतगुणानिर्मलहोंहि॥ वक्रीरहू
सरेसमयसंबंधीजेपरिणांमथे॥ तिर्इतीसरेसमयहोंहि॥ तथाओरनिर्म्मलहो
हि॥ याप्रकारअधःकरणकेचरमसमयपर्यंतहोंहि॥ यहप्रथमअधःकर
णकेपरिणांमपंकत्तिकीरीतिजांननी॥ ऊपरलेसमयकेपरिणाम॥ नीचले
समयसंवंधिपरिणामनकीवरावरीहोंहि॥ याहीतेंइसकोअधःकरणस
र्पकसंज्ञाहै॥ तथाचोक्तं गोमट्टसारे॥ श्रीनेमिचंद्रसिद्धांत्तिचक्रवर्त्तिभिः॥ ज
म्हाउवरिमभावा॥ हेत्तिमभावेहिंसरिसगाहुंत्ति॥ तम्हापढमंकरणं॥ अधा

छिपरिणत॥जीवकौंसम्यक्तकीप्राप्तिहोय॥आदिकीच्यारिलब्धितौभव्यअभव्य
मकौंसमानहै॥पांचमीकरणलब्धिमिलेतबसम्यक्तहोय॥इहांकोईप्रश्नकरै
सम्यक्ततौच्यारोंगतिमैंउपजै।सातवेंनरकतांईमैंनैनहीं॥तातैंनरकपर्यंत
देवतांताई।तहांताईतौगुरुकेउपदेशतेंदेशनालब्धिसंभवै॥आगेंकैसेहोय
॥तिसका उत्तर॥कोईजैनकुलमैंसौक्रियाकेआचारणकरिनरक
तहांपूर्वजन्मकाउपदेशस्मरणकरै।इसपरंपराउपदेससौंआर्यावर्तविधहोइ
औरमैंदेसनालब्धिसंभवै।साक्षातगुरुकेअभावतैंअधिगमसम्यक्तसंभवैनक
नसर्गसम्यक्तकहिये॥४॥च्यारचापंचमी॥प्रश्न॥पांचोंलब्धिमैंकरणलब्धिक
स्वरूपहै॥समाधान॥करणनामपरिणामोंकाहै॥तिनकीलब्धिहोयतिसैंकर
णलब्धिकहिये॥तिसकेतीनभेद।अधाकरण१॥अपूर्वकरण२॥अनिवृत्त

केउपदेशतें अर्थावबोधहोय सो सम्यक्त निसर्गतें कहावाक हियें॥ साक्षात गुरुके
उपदेससौं अर्थावबोधहोइ तिसे अधिगमतें कहा कहिये यह निर्णै गोम्मटसार
केअनुसार है॥ तिसका विवरण॥ क्षयोपशमादि पांचो लब्धिकी प्राप्तिविना
कदाचित सम्यक्त होइ नहीं॥ प्रथमही क्षयोपशमलब्धिसों पंचेन्द्री सैनी पर्याप्त
होय॥ विशुद्धिलब्धिसों शुभबंधयोग्य भाव होंहि॥ देशनालब्धिसों जैनगुरुके
उपदेशतें॥ अर्थावबोधहोय॥ प्रायोग्यलब्धिसों॥ आयुविना सातकर्मकी मध्य
मस्थिति अंतः॥ कोटाकोटी सागरमात्र राखै॥ करणलब्धिसों प्रतिसमयप
रिणाम अनंतगुणे निर्मल होहि॥ तब अनादि मिथ्याती अनिवृत्तकरणके
अंतसमयविषैं अनंतानुबंधी चतुष्क॥ और मिथ्यात्वका उपशमकरै॥ उ
पशमनामसम्यक्तकों तिसके अनंतर समयविषैं पावै॥ इस प्रकार पंचल

कोंअनुभवै॥ तिसै निश्चै सम्यक्तदृष्टि कहीये॥ निश्चै सम्यक्तदृष्टिकें व्यवहार॥ स
म्यक्त यथायोग्य होय॥ व्यवहारसम्यक्तदृष्टिकें निश्चै सम्यक्त होय भी न भी होय॥ य
ह भेद निश्चै सम्यक्त का स्वरूप जानना॥ आगे [illegible] थी॥ प्रश्न॥ सम्यक्तकी
ति दोय प्रकार है॥ एक निसर्गतैं॥ दूसरा अधिगमतैं॥ तिनका स्वरूप कहा॥ समाधा
न॥ निसर्ग कहिये स्वभावतैं होय॥ तिसै निसर्ग सम्यक्त कहीये॥ अधिगम कहि
ये अर्थावबोधतें होय तिसै अधिगमसम्यक्त कहीये॥ इहां कोई पूछै॥ जो सम्यक्त
स्वभावतें उपजै तिस विषै॥ अर्थावबोध होय कि नहीं॥ अर्थावबोध न होता तौ त
त्वश्रद्धान कैसे हुवा॥ अर्थावबोध होगा तो अधिगम ही हुवा दोय भेद काहे
कहे॥ तिसका उत्तर॥ दोनो प्रकारके सम्यक्त विषैं अंतरंग कारण दर्शनमोह
उपसम क्षयोपशम॥ तथा क्षय समान है॥ बाह्यकारणमें दोय भेद हैं॥ परंपरा गुरु

विद्धस्वचिद्रूपाद्दर्शनस्यात्मिमुखीरुचः॥ व्यवहारेण सम्यक्त्वं॥ निश्चयेन तदात्मनः॥
अर्थः॥ यारुचिः शुद्धवुद्धस्वचिद्रूपात् अन्यस्यात्मिमुखी भवति॥ जोरुचि अपनें नि
र्मलज्ञानमय चैतन्यरूप आत्मातें॥ और जीवादिपदार्थके सन्मुषरुचि होय॥ तत्
व्यवहारेण सम्यक्त्वं भवति॥ सो व्यवहारकरि सम्यक्त्व कहिये॥ पुनः आत्मनः अ
भिमुखीरुचिः तत् निश्चयेन सम्यक्त्वं भवति॥ और पूर्वोक्त अपने आत्माके सन्मु
खरुचि होइ सो निश्चैसम्यक्त्व है॥ भावार्थ॥ अभव्यमिथ्यादृष्टिसाधुग्यारहें अं
गतांई पढ़े॥ भव्यमिथ्यादृष्टीसाधुग्यारह अंग दश पूर्वतांई पढ़े॥ जीवादितत्व
कौं यथावस्थित जांनें॥ अपने स्वकीय आत्माका अनुभव करि सके नहीं॥ ता
तें तिसकें निश्चैसम्यक्त्व न कहिये॥ व्यवहारसम्यक्त कहिये॥ और आपा
सम्यक्दृष्टिजीव तुषमाषमात्र॥ ज्ञानयुक्त अपने शुद्धचैतन्यमात्र॥ आत्मा

कौं आत्मा न कहिये॥ यह गांस एकाग्र मन सों समझनी॥ जैसें द्रव्य कों तत्व कहिये पदार्थ
कहिये। तत्व तथा पदार्थ कों द्रव्य न कहिये॥ अथवा आचार्य उपाध्याय कों साधु प
कहिये॥ साधुपद कों आचार्य उपाध्याय पद नहीं॥ इत्यादि आत्म तत्व जीव तत्व वि
षैं श्रैसें दृष्टांत जांननें। मिथ्यादृष्टि आगमज्ञान केवल सों परजीवादि सप्त तत्व का॥
यथावत स्वरूप जांनें॥ श्रद्धान करै॥ स्वसंवेदन ज्ञान के अभाव तें॥ निजात्मा का श्र
न अनुभव होय नहीं॥ ताही तें आत्मज्ञान शून्य पुरुष के तत्वार्थ श्रद्धान का
कारी नांहीं॥ आचार चारी मरी उच्यते॥ ॥प्रश्न॥ व्यवहार सम्यक्त किसे कहिये
र निश्चै सम्यक्त किसे कहिये॥ समाधान॥ आत्मज्ञान विना जो जीवादि तत्व
का श्रद्धान होय तिसे व्यौहार सम्यक्त कहिये॥ आत्मज्ञान पूर्वक जीवादि त
त्व का श्रद्धान होय॥ तिसे निश्चै सम्यक्त कहिये॥ तदुक्तं॥ रत्नत्रयमज्ञायां॥ शुद्ध

इसप्रकारआगमकाकथनहै॥ऐसीजातिकेसंदेहकाकेवलीविनानि
र्नैनहोयाइसकाविस्तारयथावसरआगेंलिखियेगा॥ चरचाछत्तीसवीं॥प्रश्न
सम्यकदर्शनकाक्यास्वरूपहै॥समाधान॥जीवादितत्वकायथावत्श्रद्धा
नकानांवसम्यकदर्शनहै।सोईदशाध्यायीसूत्रकीप्रथमाध्यायमेंनिरूपितहै
तत्वार्थश्रद्धानसम्यग्दर्शनमिति॥ ॥इहांकोईकहैप्रवचनसारनांमग्रंथवि
षैयोंकह्याहै।जीवादितत्वकाश्रद्धानआत्मज्ञानशून्यपुरुषकेकार्यका
रीनाहीं।इसकहनेमें।तत्वार्थश्रद्धानकानिषेधआया।सोक्याजीवादित
त्वार्थश्रद्धानविषैंआत्मज्ञानआयानहीं॥तिसकाउत्तर॥ ॥जीवादिसा
ततत्वनिविषैंजीवतत्वदोयप्रकारहै।एकस्वजीवएकपरजीव।स्वजीव
निजात्मापरजीवसजीवतानेंआत्माकोंजीवतत्वतोकहियैः॥जीवतत्व

कीघटतीसोतिन विषंसंदेहवकूतपडे॥ तिसतेंतिनकाकहांताईकोई
नर्न्नेकरेगा॥ चतुर्थकालविषेछठेमातेवेंगुणस्थांनवर्तीसाधुकेंपदपदा
र्थचिंतनमेंत्र्यांतिउपजे॥ केवलीश्रुतकेवलीविनानिर्नेनहोयतेोअव
नवातहे॥ यातेंयथायोग्यमनकेंअवलंवननिमित्तकेतीकचरचा
लिषियेहै॥ चरचापहली॥ प्रश्न॥ मुनिराजकेंऐसाकोमसासंदे
होताहोइगा॥ जिसकाकेवलीश्रुतिकेवलीविनानिर्नेनहोइ॥ तिससं
देहकीजातिजांनीचाहिये॥ समाधान॥ केवलसमुद्घातविषेंसंकोचवि
स्तारआवस्यककहेहैं॥ नहांदोयसमयऔदारिकजोगहै॥ तीनसम
यऔदारिकमिश्रयोगहे॥ तीनसमयकार्मणयोगहै॥ दूसरेसिद्धांतमेंदोयसमय
औदारिकमिश्रयोगहै॥ दोयसमयऔदारिकमिश्र॥ चारसमयकार्मण

गा॥४४॥सुत्तादोत्तंसम्मं।दरसिज्जंतंजदाणसद्दहदि॥सोचेवहदवदिमिच्छाइ
ठीजीवोतदापहुदि॥४७ दोहरा॥जैन सूत्रकीसाषिसौंसुपरदेततरत्रा
न॥चरचानिरनैलिषतहैंकीजोपरषप्रमान॥४८॥ग्रथवार्त्ता॥इसचरचा
समाधानग्रंथविषै॥केतेकसंदेहसाधर्मीजनोंकेलिषग्राये॥शास्त्रनुसा
रतिनकासमाधानक्रबासोलिषाहै॥ग्रोरकेतेकसंदेहमेरेचित्तमैंउप
ज्या॥यथाशक्तिशास्त्रहीसौंतिनकासमाधानक्रवासोलिषाहै॥ग्रवजेको
ईवहुश्रुतिसज्जनहैंगुणग्राहीहैंतिनसौंवीनतीहै॥इसग्रंथकेपढनेदेष
नेकीउपक्षामत्तिकीजो॥ग्राद्योपांतग्रवलोकनकरना॥जोचरचाउ
न्हारविचारकौंसहैं॥सोप्रमाणकरणी॥जोविचारकौंनसहै॥तदांमध
स्थरहना॥ग्रोरजैनकीचरचाग्रपारहै॥कालकेदोषसौंतथामतिश्रु

ग्यालवालनीकहतहैं।पोतोजीवोलोइवारीकोजीवनविफल।३५।नौ
शी।।जोतुमनीकैलीनोंजांन।तोमैंनीहैंवकूतविनान।।तातैंसदाउद्यम
ग्यानगुमानमलिजिनगहो।।३६।।जोनवीनचरचासुनिलेऊ।ताको
धकामतिदेऊ।।दोयच्यारिदिनकरोविचार।।एकदिनकरिवारंवार।
३७।।यामेंकहादोसहैमीत।।विनयअंगजिनमतकीनीत।।अपाअंगदृपा
पविसाल।।मूरषनरकेंनायेंष्याल।।३८।।समकदृष्टीजीवसुजांन।।जिनवर
उक्तकरेंसरधान।।अजथारथसरधानीकरै मंदग्यानवसदोसनधरै।।३९
सिधांतमाथिअवलोइ।।धृतसरधानदिढावैकोइ।।जोदृढसौंनांदोस
तवसौंजांनमिथ्यातीवहै।।४०।।तदुक्तं गोमटसारे।।सम्माइट्ठीजीवो
वइट्ठंपवयणंचसद्दहदि।सद्दहदिअसब्भावं।अजाणमाणोहिगुरुणियोगा

च० म०
३

तहांन आवै कांम ॥२०॥ चौपई ॥ सत्यारथ चरचा जे ठीक ॥ मरमन्याव सौंन
ई अलीक ॥ वक्तव्यात अन्यथारथ चली ॥ यह निश्चै जांनौं बुधि बली ॥२१॥ एव
का वचन पक्ष नहि जहां ॥ आन ताहव छोडन नहि कहै ॥ कैसं चलै अन्यथारथी
ता ॥ कलि वर्त्तन दीसे विपरीत ॥२२॥ जिन मत चरचा आगम अपार ॥ को है तिन
को जानन हार ॥ तिन मैं कौ कछु सुधि करि लें हि ॥ आगें और षोजत जिदे हि ॥
२३॥ जांनन जोग लियो हम जान ॥ तहां हमारें दिढ सरधांन यह ही सही मम कि
त को अंग ॥ को है करै और श्रुत संग ॥२४॥ भाषपति नय वरतें इहि न्याय ॥ किधों
रहै पंचामृत षाइ ॥ जिन मत की ऐसें नहि रीत ॥ तातें षाजी रहौ पुनीत ॥
२५॥ षात किये गुण होहि विसेस ॥ वाद विषें गुण को न ही लेस ॥ छक्त डाम
र पंडित होइ ॥ जागत उनर मसान को इ ॥२६॥ सारंग ॥ याही तैं सब को इ

३

जोचरचाचित्तमेंनहिंचटे।सोसवजैनसूत्रसोंकटे॥ अथवाजेश्रुतमरमी
लोग॥तिनेंपूछिलीजेयहजोग॥२४॥इतनेमेंसंसैरहिजाइ॥सोसवकेवल
मांहिसमाइ॥योंनिसलकीजैंनिजभाव॥चरचामेंहठकोनहिंदाव॥२५॥
दोहा॥वचनपक्षमेंगुणनहीनहिंजिनमतकोन्याय॥ऐंचपेंचसोंप्रीतकीडो
रहिमतिजाइ॥२६॥ऐंचपेंचसोवक्रतगुणटूटतलगैनवार॥ऐंचपेंचवि
नएकगुणनहिंटूटैनिरधार॥२७॥वचनपक्षपरयतकियोजयोकोनकल्या
न॥वस्तुरूपतिनीपछिकारिपक्षचेनरकनिदान॥२८॥वचनपक्षकर
जहांधर्मकीहांनि॥निजअकाजपरकोवुरोतरौंयहवानि॥२९॥प्राकृत
वानीसोंमिलैसोसंस्कृतदिढजान॥मिलैसंसकृतपाठसोंसोभाषापरवा
न॥३०॥वालवोधभाषावचनउपगारीअभिराम॥सात्रसाषिजहचाहिये

विरलेनरसमंकाराष्ठाजैनधरमकोमरमहेमहाउलनजगमांहि।।समकिय,
कौंकारणसहीयामेंसंसयनांहिं।।५।।जैनधरमकोमरमलहिवरतेमांनकष
ाय।।यहअप्रबुद्धअचरजसुनोजलमेंलागीलाइ।।६।।जैनधरमलहिमदवदैवै
दनमिलहेकोइ।।अमृतपानविषपरिणवेतातेहिनअरोषधहोइ।।७।।जपक
रितपकरिदानकरिकरिकरिपरउपगार।।जैनमरमकोंपाइकरिमानक
षायनिवार।।८।।कालदोषमोंभ्रमपयो।।जिनमतचरचामांहि।।तिनको
निरनेजोगहैजिनसासनकीछांहि।।९।।तउक्तं।।कालःकलिर्वाकलुषा
शयोवा।।श्रोतुःप्रवक्तुर्वचनानयोवा।।त्वच्छासनैकाधिपतित्वलक्ष्मी।।प्र
भुत्वशक्तेरपवादहेतुः।।१०।। चौपई।।नीतसिंघासनबैठोवीर।।मतिश्रुत
दानुराषितजोरा।।जोगअजोगहंकरोविचार।।जैसेंनीतनृपतिव्योहार।।११।।

सक्तिहितआरोअहितसर्वथाथोग॥७॥जिनश्रुतसागरतेंकढोअचरचाअम
तमहान॥मतिअंजलीपरवानिजनकरोनिरंतरपान॥८॥जेवमासकेदिन
वेडेमाहवडीरात॥जिनमतकीचरचाविनाविफलकरोमतिजात॥९॥जि
नमतचरचापरमरसचाख्योनहीरसाल॥नरतरवरउपजेसुकृतगफलनहीला
गेडाल॥१०॥पठनग्रन्थश्रुतिचिंतवनपरिवर्तनउपदेस॥पंचनतेंस्वाध्याय
केचरचानामअनेक॥११॥उक्तंच॥सोरठा॥सुवचनसोनलताहंफेरफणमंडे
नही॥जाताजलसपियांहमणिधरहोयनमेघसुत॥१॥दोहा॥सुवचनवानी
जैनकीओरनसुवचनकोइ॥गुणसोसिंघपरश्रियनामसिंघनहिहोइ॥१२॥सु
वचनरुचेंरसकोमूरखहोइनलीन॥दाषचाषडाहारजेनहिंवाइसबुधिह
ीन॥१३॥पंचमकालकरालअतिदोषोसुधीविचार॥जिनमतकेमरमीउ

॥र्द०॥श्रीवीतरागायनमः॥अथश्रीचर्चासमाधानग्रंथलिख्यते॥दोहा॥जयोवीरजिन
चंद्रमाउदैअपूरवजास॥कलिजुगकालेपाषमैंकीनोंतिमरविनास॥१॥वंदोंवान
ीभगवतीविमलजोकजगमांहि॥भरमतापजासोंमिटैजविसरोजविगसांहि॥२
गोतमगुरूकेपदकमलहृदयसरोवरआन॥नमोंनमोंनितभावसोंकरिअष्टांग
विधान॥३॥अष्टांगप्रणाम निर्नै॥सोरठा॥जुगलपानिजुगपाइ॥पंचमसीससपर्स
नुवि॥विमलमनोवचकाय॥यहअष्टांगप्रणामकुव॥४॥तदुक्तं॥हस्तोपादौत
थाद्वेद्वेशिरोभूमौचपंचमं॥मनोवाक्कायशुद्धिश्चप्रणामोष्टांगउच्यते॥५॥दो
हा॥आदिमधुरअवसानकटुकामभोगसवजान॥आदिविरसअवसानमधु
तपकारजपरधान॥६॥आदिअंतमेंविरसहैवेस्नावउवरूप॥आदिमधुरआ
गेमधुरमैत्रीभावअनूप॥७॥चारकाजएजगतमेंहोयअहिततहितहोय॥यथा